भाकृअनुप
ICAR

श्वेत स्वर्णिमा

वर्ष 2019-20



भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर
ICAR-CENTRAL INSTITUTE FOR COTTON RESEARCH, NAGPUR
ISO 9001: 2015

देशोन्नती बुधवार, दि. २५ जुलै २०१८

भारतीय कृषी कापूस अनुसंधानला राजर्षी टंडन राजभाषा पुरस्कार



केंद्रीय कृषी मंत्री राधा मोहन सिंह, छबिलेंद्र राऊल, गजेंद्र सिंह शेखावत, डॉ. विजय वाघमारे, डॉ. महेंद्र कुमार साहू, डॉ. महापात्र, विश्वाधर प्रधान आदी

प्रतिनिधी / २४ जुलै

नागपूर : भारतीय कृषी संशोधन परिषद, दिल्लीच्या वतीने परिषदेच्या स्थापनादिनी समारोहात केंद्रीय कृषी आणि कृषक कल्याण मंत्री राधा मोहन सिंह यांच्या हस्ते भारतीय कृषी अनु. प. केंद्रीय कापूस अनुसंधान संस्थेचे संचालक डॉ. विजय वाघमारे व सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी डॉ. महेंद्र कुमार साहू यांना हा पुरस्कार प्रदान करण्यात आला.

केंद्रीय कृषी आणि कृषक कल्याण मंत्री राधा मोहन सिंह यांच्या हस्ते भारतीय कृषी अनु. प. केंद्रीय कापूस अनुसंधान संस्थेचे संचालक डॉ. विजय वाघमारे व सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी डॉ. महेंद्र कुमार साहू, डॉ. महापात्र, विश्वाधर प्रधान आदी केंद्रावद्दल राजर्षी टंडन राजभाषा पुरस्कार प्रदान करण्यात आला.

केंद्रीय कृषी आणि कृषक कल्याण मंत्री राधा मोहन सिंह यांच्या हस्ते भारतीय कृषी अनु. प. केंद्रीय कापूस अनुसंधान संस्था नागपूरला २०१६-१७ या वर्षाचा शासकीय कामकाजाकरिता हिंदी भाषेचा सर्वाधिक उपयोग

The Hitavada
NAGPUR ■ Monday ■ July 23 ■ 2018

ICAR-CICR, Nagpur gets 'Rajarshi Tandon Rajbhasha Puraskar'



Dr VN Waghmare (4R) and Dr Mahendra Kumar Sahu (3R) receiving the award at the hands of Radha Mohan Singh, Union Minister of Agriculture and Farmers Welfare, Government of India. Other dignitaries complete the picture.

■ Staff Reporter

ICAR-CENTRAL Institute for Cotton Research, Nagpur has been conferred with 'Rajarshi Tandon Rajbhasha Puraskar 2016-17 (First)' for the best official language implementation among the ICAR Institutes in 'B' Region at a function held at NASC Complex, New Delhi recently.

Radha Mohan Singh, Union Minister of Agriculture and Farmers Welfare, Government of India handed over the first prize to Dr V N Waghmare, Director and Dr Mahendra Kumar Sahu, Asstt Chief Technical Officer (OL), ICAR-Central Institute for Cotton Research, Nagpur. Gajendra Singh Shekhawat, Union Minister of State for Agriculture and Farmers Welfare, Govt of India; Dr Trilochan Mohapatra, Secretary, DARE and Director General, ICAR, New Delhi; Chhabilendra Roul, Special Secretary, DARE and Secretary, ICAR, New Delhi and Bimbadhar Pradhan, Additional Secretary and Financial Advisor, DARE/ICAR, New Delhi were present on the occasion.

दैनिक भास्कर
नागपुर • रविवार, 22 जुलाई, 2018 . 15

केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान राजर्षि टंडन पुरस्कार



नागपुर | भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान नागपुर को सरकारी कामकाज में हिंदी के उल्लेखनीय योगदान हेतु राजर्षि टंडन राजभाषा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। हाल ही में नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय कृषि विज्ञान केंद्र के प.पी. गिंदे सभागार में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का ९०वां स्थापना दिवस कार्यक्रम हुआ। केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर को 'ख' क्षेत्र के अंतर्गत 2016-17 के लिए समारोह के मुख्य अतिथि केंद्रीय कृषिमंत्री राधामोहन सिंह के हाथों "राजर्षि टंडन राजभाषा पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। संस्थान की ओर से यह पुरस्कार डा. विजय नामदे वाघमारे, निदेशक डा. महेंद्रकुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी ने ग्रहण किया। संस्थान को यह पुरस्कार कृषि राज्यमंत्री गजेंद्रसिंह शेखावत, डा. त्रिलोचन महापात्र, छबिलेंद्र राऊल, विश्वाधर प्रधान की उपस्थिति में प्रदान किया गया।

www.tarunbharat.net
तरुण भारत
२ » शनिवार, २० जुलै २०१९

कापूस संस्थेला राजर्षी टंडन राजभाषा पुरस्कार



◆ नागपूर, १९ जुलै

केंद्रीय कापूस संशोधन संस्था, नागपूरला २०१७-१८ या वर्षात शासकीय कामकाजामध्ये हिंदी भाषेचा सर्वाधिक उपयोग केल्याबद्दल राजर्षी टंडन राजभाषा या पुरस्काराने सन्मानित करण्यात आले. भारतीय कृषी संशोधन परिषदेच्या स्थापना दिनानिमित्त आयोजित आतेल्या कार्यक्रमात डॉ. त्रिलोचन महापात्र यांच्या हस्ते कापूस संशोधन संस्थेचे संचालक डॉ. विजय वाघमारे व डॉ. महेंद्र कुमार साहू यांनी हा पुरस्कार स्वीकारला.

लोकमत समाचार
नागपुर ● सोमवार, 22 जुलाई 2019

नागपुर केंद्र को 'राजर्षि टंडन राजभाषा पुरस्कार'



डॉ.वाघमारे व डॉ. साहू को सम्मान प्रदान करते डॉ. त्रिलोचन महापात्र.

नागपुर: भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के ९वें स्थापना दिवस के अवसर पर नई दिल्ली में आयोजित समारोह में केंद्रीय कपास अनुसंधान नागपुर को 'ख' क्षेत्र अंतर्गत वर्ष 2017-18 के दौरान सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग में उल्लेखनीय योगदान के लिए पुरस्कृत किया गया. समारोह में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान नागपुर के निदेशक डॉ. विजय वाघमारे व सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी डॉ. महेंद्रकुमार साहू को डॉ. त्रिलोचन महापात्र के हाथों 'राजर्षि टंडन राजभाषा पुरस्कार' प्रदान किया गया.

The Hitavada
NAGPUR ■ Friday ■ July 19 ■ 2019

ICAR-CICR gets 'Rajarshi Tandon Rajbhasha Puraskar'



Dr V N Waghmare and Dr Mahendra Kumar Sahu receiving the award at the hands of Dr Punjab Singh and Dr Trilochan Mohapatra..

■ Staff Reporter

ICAR-Central Institute for Cotton Research has been conferred with prestigious 'Rajarshi Tandon Rajbhasha Puraskar 2017-18' (First) for Best Official Language Implementation among ICAR Institutes in 'B' Region at a function held recently at New Delhi.

Dr Trilochan Mohapatra, Secretary, DARE and Director General, ICAR, New Delhi handed over first prize to Dr V N Waghmare, Director and Dr Mahendra Kumar Sahu, Assistant Chief Technical Officer (OL), ICAR-Central Institute for Cotton Research, Nagpur.

दैनिक भास्कर नागपुर, शुक्रवार, १९ जुलाई 2019

हिंदी के प्रयोग के लिए 'राजर्षि टंडन राजभाषा पुरस्कार'

केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान नागपुर को मिला प्रथम पुरस्कार



नागपुर| नई दिल्ली राष्ट्रीय कृषि विज्ञान परिसर के सी. सुब्रमण्यम सभागृह में केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान नागपुर को 'ख' क्षेत्र अंतर्गत वर्ष 2017-18 के दौरान सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग में उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रथम पुरस्कार 'राजर्षि टंडन राजभाषा पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। यह सम्मान सचिव एवं महानिदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्र, भा.कृ.अनु.प. नई दिल्ली के हाथों दिया गया। संस्थान की ओर से यह पुरस्कार सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी डॉ. महेंद्र कुमार साहू ने ग्रहण किया।

भाकृअनुप
ICAR

श्वेत स्वर्णिमा

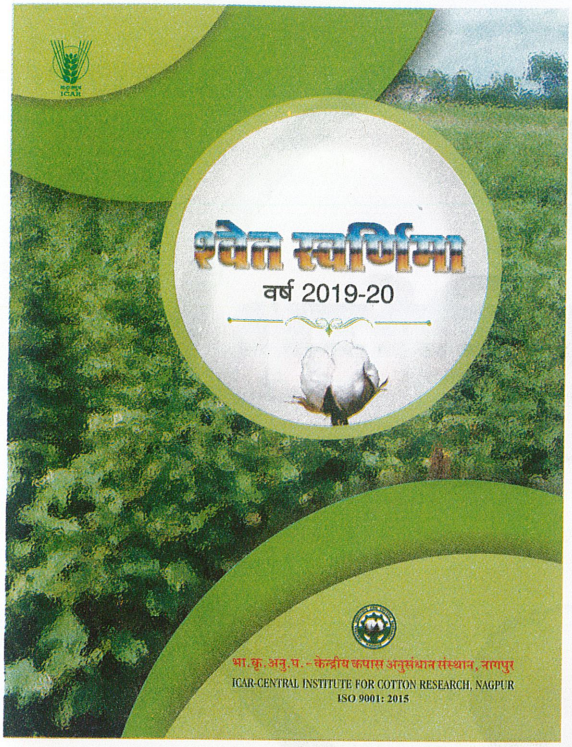
वर्ष 2019-20



संपर्क सूत्र : संपादक

पोस्ट बैग क्र. 2, शंकरनगर पोस्ट ऑफिस, नागपुर - 440010 (महाराष्ट्र)
दूरभाष - (07103) 275536/38 फैक्स : (07103) 275529
ई मेल : cicrnagpur@gmail.com वेब साइट : http://www.cicr.org.in

भा.कृ.अनु.सं.-केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर
फार्म का पता : पांजरी फार्म, खापरी चौक के पास, वर्धा रोड, नागपुर



संरक्षक एवं प्रकाशक

डॉ. विजय नामदेव वाघमारे

निदेशक

भा.कृ.अनु.प.–के.क.अनु.सं., नागपुर

संपादक

डॉ. महेन्द्र कुमार साहू

सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.)

भा.कृ.अनु.प.–के.क.अनु.सं., नागपुर

प्रकाशन :

मार्च 2020

केवल विभागीय उपयोग हेतु :

नोट – पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के निजी हैं, संस्थान अथवा संपादक मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं हैं।

मुद्रक :

सूर्या ऑफसेट प्रेस,

गुरूद्वारा के सामने, रामदासपेठ, नागपुर – 440010

दूरभाष क्र. (0712) 2438061, 2438062

निदेशक की कलम से



'हिंदी' एकमात्र ऐसी भाषा है जो दिलों को जोड़ती है, यह अनेकता में एकता की कड़ी के रूप में कार्य करती है। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी और गुजरात से लेकर अरूणाचल प्रदेश तक हिंदी ही विचारों के आदान–प्रदान की एकमात्र भाषा है। अतः हमें यथासंभव अपना कार्यालयीन कार्य ऐसी भाषा में करना चाहिए जो देश के अधिकांश भागों में बोली और आसानी से समझी जाती है।

स्वतंत्रता के पश्चात हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को सरकारी काम–काज के लिए राजभाषा के रूप में स्वीकारा। इस दृष्टिकोण से हमारा यह नैतिक उत्तरदायित्व बन पड़ता है कि हम अपना सरकारी काम–काज राजभाषा (हिंदी) में करे। हिंदी, भारतीय भाषाओं में ही नहीं, अपितु विश्व की सर्वप्रमुख भाषाओं में अपना स्थान बना चुकी है। आज विश्वभर में लगभग एक अरब से अधिक लोग हिंदी का किसी–न–किसी रूप में प्रयोग करते है। यह इसमें निहित क्षमता के कारण ही संभव है।

'श्वेत स्वर्णिमा' का प्रकाशन इस निष्ठा की एक कड़ी है। संस्थान में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों को इस पत्रिका के माध्यम से अपने विषय संबंधित ज्ञान–विज्ञान एवं विचारों को अभिव्यक्त करने का एक अच्छा अवसर मिला है। मुझे विश्वास है कि विगत अंक की भाँति यह अंक भी राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार हेतु बहुउपयोगी साबित होगा।

अतः मैं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए सभी लेखकों एवं संपादक **डॉ. महेंद्र कुमार साहू** को उनके अथक प्रयास के लिए अपनी हार्दिक बधाई देता हूँ।

'श्वेत स्वर्णिमा' निरंतर पल्लवित–पुष्पित होती रहे इन्ही हार्दिक शुभकामनाओं के साथ।

– डॉ. विजय नामदेव वाघमारे
निदेशक
भा.कृ.अनु.प.–के.क.अनु.सं., नागपुर



संपादकीय

'हिंदी' भाषा का स्वरूप बहुआयामी और भाषा विज्ञान के दृष्टिकोण से बहुत ही सशक्त है। मनोरंजन, मीडिया एवं विज्ञापन की दुनिया में आज हिंदी का अपना एक अलग आसमा है। छोटे पर्दे पर आज हिंदी के इतने चैनल चल रहे हैं और दिनों–दिन हिंदी पत्र–पत्रिकाओं की संख्या इस कदर बढ़ रही है कि पूछो मत। फिल्म, टेलीविजन, रेडियो, अखबार, विज्ञापन आदि क्षेत्रों में हिंदी का बहुमुखी विकास हुआ है और अब तो विदेशी भी हिंदी सीख रहे हैं, क्योंकि उद्योग–व्यापार के लिए यह जरूरी है। आज उद्योगपति हिंदी में सोच रहे हैं और अपने उत्पाद को सशक्त हिंदी विज्ञापन के माध्यम से बेच रहे हैं। जिस भाषा के इस्तेमाल करने वालों की संख्या इतनी विपुल है, उसका भविष्य खतरे में कैसे पड़ सकता है ?

मुझे इस बात में कोई संदेह नजर नहीं आता है कि फिल्म, टेलीविजन, रेडियो, अखबार, विज्ञापन आदि क्षेत्रों में हिंदी बहुत तेजी से आगे बढ़ रही है, पर वह वैद्यकीय, न्यायिक, अनुसंधान एवं प्रशासनिक क्षेंत्रों में अपना आशातीत मुकाम हासिल नहीं कर पायी है और सही अर्थों में देखा जाए तो इन क्षेत्रों में हिंदी की हैसियत अंग्रेजी से कम है। यह हिंदी की दुर्बलता का सवाल नहीं है, अपितु हमारी मानसिकता का सवाल है।

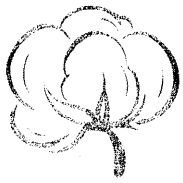
आधुनिकता को बढ़ावा देने के लिए अंग्रेजी भाषा को महत्व तो हम देते हैं लेकिन हम यह क्यों भूल जाते हैं कि हमारे पड़ोसी देश चीन में आधुनिकता हमसे कई गुना ज्यादा है और आज भी वहाँ प्रशासन, व्यवसाय और शिक्षा के हर क्षेत्र में वहाँ की भाषा **'मंदारिन'** ही प्रयुक्त होती है। इसके अलावा रूस, फ्रांस, जर्मनी, जापान, स्पेन आदि ऐसे कितने देशों में वहाँ आज भी इन देशों की मातृभाषा ही राजकाज की भाषा है। इन देशों में अंग्रेजी को महत्व दिया तो जाता है लेकिन उनकी अपनी मातृभाषा से अधिक नहीं।

अतः इस दृष्टि से भी हमें हिंदी को देखना चाहिए, उस पर विचार करना चाहिए और उसे व्यवहार में लाना चाहिए। **'श्वेत स्वर्णिमा'** का प्रकाशन सही अर्थों में इस पावन उद्देश्य की प्राप्ति हेतु हमारा एक लघु प्रयास मात्र है जो निःसंदेह संस्थान में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मन में हिंदी के प्रति जागरूकता एवं कर्तव्य निष्ठा की भावना को बढ़ावा देगा।

हम पत्रिका प्रकाशन के लिए संस्थान के निदेशक **डॉ. विजय नामदेव वाघमारे** के विशेष आभारी हैं, जिन्होंने हमें इस पत्रिका को प्रकाशित करने हेतु प्रोत्साहित किया। **'श्वेत स्वर्णिमा'** के प्रकाशनार्थ संस्थान के विभिन्न विभागों, अनुभागों एवं क्षेत्रीय केन्द्रों में कार्यरत जिन अधिकारियों एवं कर्मचारियों का महत्वपूर्ण योगदान हमें प्राप्त हुआ है, हम उनके हृदय से आभारी हैं। **'श्वेत स्वर्णिमा'** पत्रिका के आगामी अंक को और आधिक बहुउपयोगी एवं रूचिकार बनाने में आप सभी का सहयोग हमें यथावत् प्राप्त होता रहेगा, इस आशा और विश्वास के साथ...।

– डॉ. महेंद्र कुमार साहू
संपादक (श्वेत स्वर्णिमा)
भा.कृ.अनु.प.–के.क.अनु.सं., नागपुर

अनुक्रमणिका/विषय सूची



क्र.	शीर्षक / विषय	रचनाकार / संकलनकर्ता	पृष्ठ सं.
1.	शहरीकरण एवं विश्वस्तरीय जलवायु परिवर्तन	डॉ. विजय नामदेव वाघमारे	01
		डॉ. महेन्द्र कुमार साहू	
2.	मेरा गाँव मेरा गौरव : केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान द्वारा		
	वैज्ञानिक – कृषक संपर्क की अनूठी पहल	डॉ. सिद्धार्थ म. वासनिक	04
3.	महाराष्ट्र में किसान आत्महत्या : एक विश्लेषण	केशव कुमार	15
4.	प्याज : उत्पादन की उन्नत विधियाँ	डॉ. वनिता सालुंखे	18
5.	किसानों के लिए "अदरक" एक लाभदायक खेती	रामचंद्र सलामे, सुशिल मावळे,	22
		सुश्री पायल वाघाय	
6.	जैविक खाद एवं उनके उपयोग	डॉ. उल्हास नंदनकर	24
		मयूर कुमार आर. मेश्राम	
7.	खाद्यान्न उत्पादन एवं संरक्षण के लिए विकिरण का प्रयोग	आराधना कुमारी, महेश कुमार	27
	कहानी / लघु कथा		
8.	मानवीय समस्याओं का समाधान : महामृत्युंजय मंत्र	डॉ. रामरत्न गुप्ता 'आर्य'	29
9.	उच्च शिक्षा प्राप्त करने की प्रवेश यात्रा	डॉ. टी. आर. लोकनाथन	32
10.	भारतीय कृषी अनुसंधान चयन मंडल परीक्षा में प्रवेश करने का रोचक अनुभव	डॉ. टी. आर. लोकनाथन	33
11.	मानिनी	डॉ. (श्रीमती) नंदिता महेन्द्रकुमार साहू	34
12.	दुविधा....	रजनीकांत चतुर्वेदी	36
13.	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का महिला उत्थान में योगदान	डॉ. दिपक टी. नगराले	38
14.	महिला सशक्तिकरण में डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का योगदान	श्रीमती रमा अय्यर	40
	कविता		
15.	ऐसा है अपना सीआईसीआर का कपास	प्रशांत ग. गव्हाळे	42
16.	पतंगे की प्रेम व्यथा....	रजनीकांत चतुर्वेदी	42
17.	कपास गाथा	कु. उषा सतिजा	43
18.	देश की हार या देश का विस्तार ?	कु. उषा सतिजा	43
19.	क्या बढ़ रहा किसान है ?	मयूर कुमार आर. मेश्राम	44
20.	ढ़ोंगी बाबा और अंधे भक्त	श्रीमती चैताली रोड़गे	44

क्र.	शीर्षक / विषय		रचनाकार / संकलनकर्ता	पृष्ठ सं.
	ग़ज़ल			
21.	हम नहीं देते		श्रीमती माधुरी राऊलकर	45
22.	घर से लड़ना		श्रीमती माधुरी राऊलकर	45
23.	रिश्तों के दर्पण		श्रीमती माधुरी राऊलकर	45
24.	ये पहली मैं		श्रीमती माधुरी राऊलकर	45
25.	साहित्यकार एवं महापुरूषों की नजरों में प्यार		प्रेम प्रकाश गोकुलपुरे	46
	विविध			
26.	महापुरूषों के अनमोल वचन		डॉ. उल्हास नंदनकर	47
27.	सुविचार		श्रीमती रमा अय्यर	49
28.	विचार – कण		श्रीमती स्वाती दीक्षित	51
29.	बात पते की		श्रीमती चैताली रोडगे	52
30.	चुटकुले		समीर चालखुरे, राजेंद्र लोखंडे,	53
			डॉ. पी. बी. देऊलकर	
			मयुर मेश्राम, आर .व्ही. सलामे	
	राजभाषा			
31.	राजभाषा कार्यान्वयन : जाँच बिंदु		हिंदी अनुभाग	55
32.	उन्होंने कहा था...		नितिन तांदुलकर	56
33.	अनुरोध		हिंदी अनुभाग	58
	रिपोर्ट			
34.	हिंदी सप्ताह : उदघाटन समारोह रिपोर्ट – 2018		डॉ. महेंद्र कुमार साहू	61
35.	हिंदी सप्ताह : समापन समारोह रिपोर्ट– 2018		डॉ. महेंद्र कुमार साहू	63
36.	हिंदी कार्यशाला रिपोर्ट – 2018		डॉ. महेंद्र कुमार साहू	67
37.	हिंदी कार्यशाला रिपोर्ट – 2018	(क्षेत्रीय केंद्र, सिरसा)	डॉ. महेंद्र कुमार साहू	68
38.	हिंदी सप्ताह समारोह रिपोर्ट– 2018	(क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबटूर)	डॉ. महेंद्र कुमार साहू	70
39.	हिंदी कार्यनिरीक्षण रिपोर्ट	(क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबटूर)	डॉ. महेंद्र कुमार साहू	71
40.	हिंदी कार्यनिरीक्षण रिपोर्ट	(क्षेत्रीय केंद्र, सिरसा)	डॉ. महेंद्र कुमार साहू	72
41.	मान–सम्मान		डॉ. महेंद्र कुमार साहू	73
42.	हिंदी अनुभाग : वार्षिक रिपोर्ट 2019–20		डॉ. महेंद्र कुमार साहू	74

नोट : उपर्युक्त रचनाओं में प्रकाशित विचार रचनाकार के अपने हैं और उनसे सहमत अथवा असहमत होना 'श्वेत स्वर्णिमा : संपादक मंडल' के लिये आवश्यक नहीं है।

शहरीकरण एवं विश्वस्तरीय जलवायु परिवर्तन

डॉ. विजय नामदेव वाघमारे
निदेशक
भा.कृ.अनु.प.–के.क.अनु.सं., नागपुर

डॉ. महेन्द्र कुमार साहू
स्हायक मुख्य तकनीकी अधिकारी(रा.भा.)
भा.कृ.अनु.प.–के.क.अनु.सं., नागपुर

'धरती' पर ज्यों–ज्यों जनसंख्या की बढ़ोतरी हुई त्यों–त्यों मानव की आवश्यकता पूर्ति हेतु प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग बढ़ता गया। भूमि का अभाव हुआ तो वन काटे गए, पहाड़ तोड़े गए। जल और ऊर्जा की आवश्यकता बढ़ी तो नदियों पर बाँध बनाए गए। खेती का उत्पादन बढ़ाने के लिए उर्वरकों के रूप में रसायनों का प्रयोग बढ़ा। इसका परिणाम एक ओर बढ़ते रेगिस्तान के रूप में तो दूसरी ओर बाढ़ के अलावा पर्यावरण प्रदूषण जैसी समस्याओं के रूप में सामने आया। इन्हीं समस्याओं का व्यापक और विकराल रूप हैं ओजोनी परत में छेद और पृथ्वी की बढ़ती गर्माहट जो आज समस्त संसार में चर्चा का विषय बना हुआ हैं।

वस्तुतः देखा जाए तो मानव ने अपनी सुख–सुविधाओं के लिए पृथ्वी और उसके पर्यावरण के साथ ऐसा खिलवाड़ किया है कि अब उसके भयंकर परिणामों से खुद के अलावा हमें और कोइ नहीं बचा सकता। वैश्विक तापमान (ग्लोबल वॉर्मिंग) का खतरा बढ़ रहा है। कई जीव–जंतु और वनस्पतियाँ लुप्त होती जा रही हैं। जलवायु और मौसमों में परिवर्तन हो रहे हैं और मानव को इस दिशा में कुछ सोचने, समझने एवं कुछ करने के लिए बाध्य कर रहे हैं।

प्रदूषण व्याख्या एवं स्वरूप

आज 'प्रदूषण' शब्द किसी परिचय का मोहताज नहीं रह गया है। संपूर्ण विश्व इससे प्रभावित है। यूँ तो हम इसे भिन्न रूपों में स्वीकार कर रहे हैं, जैसे कि ध्वनि प्रदूषण, जल प्रदूषण, मृदा प्रदूषण आदि, लेकिन वायु प्रदूषण, दौड़ में सबसे आगे है। निरंतर तेजी से बढ़ती आबादी, औद्योगिकरण और शहरीकरण होने से पर्यावरण में असंतुलन पैदा हो रहा है। मानव अपनी निजी आकांक्षाओं की पूर्ति हेतु प्राकृतिक संसाधनों का जिस तरह दोहन कर रहा है उससे अनेक समस्याएँ पैदा हो रहीं हैं।

वायु प्रदूषण

वायु प्रदूषण की समस्या जंगलों के लगातार कम होते जाने के कारण जटिल होती जा रही है। पेड़–पौधों के कम होने से कार्बन डाइ–ऑक्साइड का शोषण नहीं हो पाता है और ऑक्सीजन भी पर्याप्त मात्रा में पौधे छोड़ नहीं पाते हैं। लकड़ियों को जलाने से कार्बन गैसों की और अधिक बढ़ोत्तरी होती है। इसके साथ–ही–साथ भूमि पर खेती करते समय घातक रसायनों के इस्तेमाल से भी वायुमंडल के प्रदूषण में इजाफा हो रहा है।

ध्वनि प्रदूषण

आज निरंतर बढ़ते हुए मोटर–वाहनों, औद्योगिक इकाइयों तथा भोपुओं (हार्न) से ध्वनि प्रदूषण में इजाफा हो रहा है। शहरों में या औद्योगिक इकाइयों के आस–पास ध्वनि का स्तर 90 से 120 डेसिबेल होता है और वह ध्वनि जिसका स्तर 65 डेसिबेल से अधिक हो वह ध्वनि प्रदूषण की श्रेणी में आती है। ध्वनि प्रदूषण के कारण बेचैनी, हृदय रोग, मनोवैज्ञानिक रोग, घबराहट इत्यादि व्याधियाँ हो सकती हैं। इससे लोगों के सुनने की शक्ति भी खत्म हो सकती है।

जल प्रदूषण

जल प्रदूषण अधिकतर औद्योगिक इकाइयों के ही कारण होता है। औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाले पानी में तरह–तरह की गंदगियाँ घुल जाती हैं जो कि या तो औद्योगिक इकाइयों के पास की नीची जमीन में फैलती रहती

हैं या किसी पास की नदी में बहा दी जाती है जिससे सारा पानी प्रदूषित हो जाता है, जिसका प्रतिकूल प्रभाव मानव जीवन पर पड़ता है।

प्रदूषण के कारण जलवायु पर होने वाले प्रमुख दुष्परिणाम

उपर्युक्त सभी प्रकार के प्रदूषण के कारण जलवायु पर होने वाले प्रमुख दुष्परिणाम निम्नानुसार हैं –

- मानसून वर्षा वाली उपोष्ण पट्टियों का गीला रहना।
- पर्वतीय भागों में खेती वाले समय का बढ़ जाना।
- मैदानी भागों में जल्दी–जल्दी तूफानी आँधियों का आना।
- लू चलने में वृद्धि के आसार।
- सूखे या गर्म इलाके वाले जंगलों में आग लगने का अंदेशा।
- समुद्र स्तर में अगले 100 वर्षों में एक मीटर या अधिक की वृद्धि।

प्रदूषण से होने वाली व्याधियाँ

राष्ट्र संघ पर्यावरण प्रोग्राम की एक पुस्तिका में उल्लेख है कि नाइट्रोजन वाले यौगिक जो नदियों या नालों में बह जाते हैं या गंदे पानी के साथ पड़े रहते हैं, पर्यावरण में नाइट्रोसमीनों को बनाते हैं जो कि कैन्सर रोग पैदा करने में सक्षम हैं।

सल्फर डाइ–ऑक्साइड, जो पावर हाउस एवं पेट्रोलियम उद्योग–इकाइयों से निकलती हैं, साँस लेने में कठिनाई पैदा करती हैं, इससे साँस संबंधी रोग होता है और गले तथा आँख में खुजली पैदा करती है। नाइट्रोजन ऑक्साइड खुजली तथा फेफड़े वाले रोग पैदा करती है। हाइड्रोजन फ्लुओराइड से खुजलाहट, हड्डी के रोग और दंत–विदारण रोग पैदा होते हैं। ध्वनि प्रदूषण (65 डेसिबेल) जो लाउड स्पीकरों, आटोमोबाइलों तथा कारखानों से होता है–अनिद्रा, हृदय रोग, तंत्रिका रोग आदि पैदा करता है। बी.ओ.डी. वाले पानी से गले तथा पेट के रोग, क्षय रोग इत्यादि होते हैं। वैज्ञानिकों का यह भी कहना है कि–"वायुमंडल और धरती का तापमान बढ़ने के कारण त्वचा–कैंसर, दमा, रक्तचाप के अनियंत्रित एवं अनियमित होने, शारीरिक कार्यक्षमता घटने जैसी बीमारियाँ विस्तार पायेंगी। अभी तक के अध्ययन से पता चला है कि ग्लोबल वार्मिंग के कारण मृत्युदर में 2 से 3 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। 'ग्लोबल वार्मिंग' के कारण पोटेशियम, सोडियम और कैल्शियम की मात्रा जीवों में कम होती जायेगी जिससे उनकी कार्यक्षमता घटेगी।" इसके अलावा भी जाने–अनजाने अनेक व्याधियाँ मानव को सताती हैं जिनका प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रदूषण से संबंध है।

क्या आदर्श पर्यावरण शहरीकरण अथवा औद्योगिकीकरण से संभव है ?

आदर्श पर्यावरण वह है जिसमें शोरगुल ना हो, जो हमें साँस लेने के लिए शुद्ध ऑक्सीजन(प्राण वायु) एवं शारीरिक आवश्यकताओं के लिए शुद्ध पेय जल दे सके। किंतु ये घटक अब शहरी जीवन से गायब होते जो रहे हैं। शोरयुक्त वातावरण तो दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता और चेन्नई–जैसे महानगरों से सीमित दायरे में ही सिमट कर रह गया है।

शहरी क्षेत्रों में मोटर वाहनों द्वारा 60 प्रतिशत, औद्योगिक इकाइयों द्वारा 20–30 प्रतिशत और भूगर्भीय ईंधन सामग्रियों द्वारा 10 प्रतिशत प्रदूषण फैलता है। डॉ. मनु कोठारी के मुताबिक–शहरीकरण ने सांप, बिच्छु, छिपकली जैसे सरीसृप वर्ग की कई प्रजातियाँ लुप्तप्राय कर दी है। ये जीव सूर्य की किरणों से धरती पर आने वाली लगभग 14 प्रतिशत किरणों की ऊर्जा खा जाते थे। एक फनधारी नाग 273 डिग्री केल्विन गर्मी अपनी आंखों से सोख लेता है। व्हेल और चुनिक सॉलमन सरीखी मछलियां समुद्री पानी का खारापन कम करती हैं। दुर्भाग्य से हमारे तथाकथित शहरी विकास में इनका तेजी से विनाश होता चला गया और जिसके परिणामस्वरूप सूर्य की किरणों का लगभग 1.87 प्रतिशत गर्मी शोषित करने वाले जीव हमारे पास अब नहीं के बराबर हैं।

डॉ. पूनम तिवारी के मुताबिक–चीटी की एक प्रजाति नष्ट होती है तो एक हजार किस्म के फेंडे–पौधे, जो सूर्य की लगभग 1 प्रतिशत गर्मी सोखते हैं, समाप्त हो जाते हैं। जनरल कौऊंसिल ऑफ साइंटफिक एंड इंडस्ट्रीयल रिसर्च के पूर्व निदेशक डॉ. ए. पी. मित्रा के मुताबिक–सकल घरेलू उत्पादन को चार गुना बढ़ाने के लिए 2.8 गुना अधिक कार्बन डायऑक्साइड, 1.3 गुना अधिक मिथेन तथा 2.6 गुना अधिक नाइट्रेट ऑक्साइड का उत्पादन करना होता है। इंदिरा गांधी इंस्टिट्यूट फॉर रूरल डेवलपमेंट के प्रो. मनोज पंडा कहते हैं–"इससे वातावरण में गर्मी 4.7 प्रतिशत बढ़ जाती है।"

विनरॉक इंटरनेशनल के वैज्ञानिक डॉ. कालीपद चटर्जी

कहते है–"सूर्य की किरणों के तापमान में औसत प्राकृतिक वृद्धि से सभी जीव–जंतु सामंजस्य बैठा लेते हैं, लेकिन औद्योगिक क्रांति के कारण गर्मी में बेहताशा वृद्धि से प्रकृति भी परेशान हो उठी है।" पूरी दुनिया में 6 से 8 प्रतिशत अधिक बरसात हो रही है, मच्छरों की संख्या में प्रतिवर्ष 10 प्रतिशत की औसत दर से बढ़ रही है। उसके बाद सूखा, तूफान, जंगलों में आग लगने और जल का भूगर्भ स्तर लगातार गिरने की घटनाएं बढ़ रही हैं।

पर्यावरण संरक्षण

पर्यावरण संतुलन बिगड़ चुका है। वर्षा अम्लीय होती है और पर्यावरण प्रदूषण के कारण तापमान व वर्षा में विविधता आने लगी है। अपनी औद्योगिक तथा विकासशील क्रियाओं की होड़ में जहरीली गैसें वायुमंडल को प्रदूषित कर रहीं हैं। मृदा में उर्वरकों के असंतुलित प्रयोग तथा कीटनाशकों, फफूंदीनाशकों, खरपतवारनाशकों के अधिकाधिक प्रयोग के कारण मृदा प्रदूषित हो रही है। इस स्थिति में अब प्रश्न यह उठता है कि पर्यावरण के प्राकृतिक स्वरूप को किस प्रकार पुनः प्राकृतिक स्वरूप प्रदान किया जाए। अतः पर्यावरण के संरक्षण के लिए निम्नलिखित कदम आवश्यक हैं –

- ओजोन परत के क्षय को रोकने के लिए एयरकंडीशनर के प्रयोग को कम करें।
- ग्रीनहाउस प्रभाव को कम करने हेतु वनीकरण को प्रोत्साहन दें।
- तापमान में वृद्धि रोकने हेतु वनीकरण को प्रोत्साहन दें।
- प्राकृतिक संसाधनों का उचित प्रयोग करें।
- ऊर्जा के वैकल्पिक स्त्रोतों (सौर ऊर्जा बैटरी, पवन ऊर्जा, बायोगैस आदि) को अपनाएं।
- वनों के विनाश को रोकने हेतु वनीकरण को प्रोत्साहन दें।
- जीवन शैली में परिवर्तन लाना आवश्यक है।
- जनसंख्या की बाढ़ को कम किया जाए।
- वैज्ञानिक तथा तकनीकी विकास का रूप मानवोउपयोगी हो।
- संसाधनों व उत्पादनों का समान वितरण मानवीय व भौतिक आधार पर हो।
- हरित पट्टिका का निर्माण करें।
- बंजर भूमि व खाली भूमि का विकास कर उसका सदुपयोग किया जाए।

उपसंहार

अतः स्पष्ट है कि संसार के सभी जीवधारियों पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव अस्थायी से लेकर स्थायी प्रकार का होता है। यह भी स्पष्ट है कि पर्यावरणी कारकों का आपसी संबंध इतना घनिष्ठ तथा एक–दूसरे पर निर्भर होता है कि यदि एक कारक को क्षति पहुँचाई जाए या किन्हीं कारणों से उसमें बदलाव आ जाए तो उसके आवास के सभी जैव तथा अजैव कारक प्रभावित हो जाते हैं। सभी जीव बदलते वातावरण के अनुरूप अपने में अनुकूलता लाते हुए और अपने आवासीय कारकों का उपयोग करते हुए अपने को जीवित रखते हैं। कभी–कभी पर्यावरण में अत्याधिक बदलाव आने पर जीव उस गति से बदलाव लाकर अपने को अनुकूलित नहीं कर पाते हैं तथा नष्ट हो जाते हैं।

वर्तमान समय मे मानव विकास के नाम पर पर्यावरण से लगातार छेड़ खानी करता चला जा रहा है, जिसके कारण पूरे संसार के पर्यावरणी कारकों में बदलाव आ रहा है। यदि इसी गति से भूमंडल के जैव तथा अजैव कारकों में परिवर्तन होता रहा तो इसका प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष प्रभाव मानव जाति पर पड़ेगा, जो निश्चित रूप से विनाशकारी होगा और मानव के लिए खतरनाक होगा। अतः वातावरण के सभी जीवित व अजीवित कारकों के आपसी संबंधों को ध्यान में रखते हुए भूमंडल के प्रति संतुलित व्यवहार की अपेक्षा मानव से की जाती है...।

हिंदी पथ सच्चा सरल, भटकन कहीं न मोड़।
हिंदी भाषा देश की, रही देश को जोड़

मेरा गांव मेरा गौरव : केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान द्वारा वैज्ञानिक-कृषक संपर्क की अनूठी पहल

डॉ. सिद्धार्थ म. वासनिक,
प्रधान वैज्ञानिक (कृषि विस्तार)
भा.कृ.अनु.प.–के.क.अनु.सं., नागपुर

किसानों तक वैज्ञानिकों की सीधी पहुँच सुनिश्चित करने के लिए भा.कृ.अनु.प द्वारा 25 जुलाई, 2015 को 'मेरा गाँव, मेरा गौरव' नामक परियोजना भा.कृ.अनु.प. के 87वें स्थापना दिवस के अवसर पर तैयार की गई है, जिससे 'प्रयोगशाला से खेत' प्रक्रिया में तेजी लाने के लिए किसानों के साथ वैज्ञानिकों के संपर्क को बढ़ाया जा सके। इस योजना का उद्देश्य प्रत्येक वैज्ञानिक द्वारा एक गाँव को चुनकर वहाँ के किसानों को नियमित रूप से सूचना, ज्ञान एवं परामर्शी सुविधा प्रदान कर प्रोत्साहित करना है।

भारतीय कृषि में सीमान्त व छोटे कृषकों की सहभागिता कुल कृषि जोत संख्या व क्षेत्रफल के दृष्टिकोण से अति महत्वपूर्ण है। छोटे किसान सूचनाओं की सामयिक उपलब्धता, कृषि निवेश, ऋण व बुनियादी सुविधाओं तक पहुँच, बाजार व मूल्यों की जानकारी, प्रसार सेवाओं व अन्य प्रदाताओं द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं की जानकारी, अनुसंधान प्रणाली द्वारा विकसित नवीन तकनीकों की उपलब्धता, आदि विषयों पर अपनी आवश्यकताओं को विभिन्न मंचों पर रखते रहते हैं।

वर्तमान में भारतीय कृषि परिदृश्य में अनेक एजेंसियाँ और सेवा प्रदाता कार्य कर रहे हैं, जिनके द्वारा प्रदान की गई सेवाओं के बारे में जानने की जिज्ञासा किसानों में बनी रहती है। अनुसंधान केन्द्रों, कृषि विज्ञान केन्द्रों, कृषि विश्वविद्यालयों, निजी कम्पनियों तथा अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा विकसित एवं परिष्कृत प्रौद्योगिकियाँ किसान समुदाय के बीच भिन्न रूप में स्वीकृत व अंगीकृत की जाती हैं। 'आत्मा', स्वैच्छिक संगठन, कृषि उद्योग और किसान संगठनों, आदि द्वारा भी विभिन्न कृषि परामर्शी सेवाएँ प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जा रही है। किसानों के बीच इन संस्थाओं और इनके द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं के बारे में जागरूकता बढ़ाए जाने की जरूरत को ध्यान में रखकर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा यह कार्यक्रम शुरू किया गया है।

प्रक्रिया :

'मेरा गाँव मेरा गौरव' परियोजना के अन्तर्गत वैज्ञानिक अपनी सुविधानुसार किसी एक गाँव को गोद लेकर उस गाँव के संपर्क में बने रहेंगे और किसानों को तकनीकी तथा संबंधित पहलुओं पर सामयिक जानकारी प्रदान करेंगे। इसके लिए वैज्ञानिक गाँव में दौरा करने के साथ–साथ फोन पर भी किसानों को परामर्शी सेवा प्रदान कर सकते हैं। वैज्ञानिकों द्वारा गाँव के लिए एक परामर्शदाता की भूमिका निभाने के साथ–साथ किसानों द्वारा कृषि तकनीकों को अपनाए जाने की प्रक्रिया की भी निगरानी की जानी अपेक्षित है। वैज्ञानिकों द्वारा सामुदायिक रेडियो, स्थानीय समाचार पत्रों, मोबाईल, फोन आदी का स्थानीय भाषा में स्थान विशिष्ट परामर्शी सेवाओं के प्रसार हेतु पहल किया जाना अपेक्षित है। इस क्रम में कृषि विज्ञान केन्द्रों, 'आत्मा', आदि के साथ सहयोग प्राप्त कर उन्नत किस्मों के प्रदर्शन व प्रक्षेत्र भ्रमण, आदि का आयोजन करना प्रभावी होगा। वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न उत्पादों के लिए बाजार की जानकारी और बाजार के रूझान के बारे में किसानों को अवगत कराने के साथ–साथ किसानों को कृषि क्षेत्र की विभिन्न संस्थाओं के बारे में अवगत कराया जाता है, जिससे किसान अपने क्षेत्र में खेती से जुड़ी समस्याओं के लिए सम्बन्धित संस्था से सम्पर्क कर सकें। वैज्ञानिकों द्वारा गाँव के किसानों को जलवायु परिवर्तन एवं आवश्यक अनुकूलन रणनीतियों अथवा बचाव उपायों और स्थानीय एवं राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों के बारे में भी जागरूक किया जाता है। इस सामाजिक विकास की प्रक्रिया में

वैज्ञानिकों द्वारा स्थानीय पंचायत, विकास संगठनों, गैर–सरकारी संगठनों और निजी संगठनों को भी शामिल किया जाता है।

इसके साथ ही वैज्ञानिकों द्वारा 'स्वच्छ कृषि' विचारधारा को बढ़ावा देना और उच्च गुणवत्ता वाले कृषि उत्पादों के लिए बेहतर कृषि विधियों को अपनाते हुए इसे 'स्वच्छ भारत अभियान' के साथ सतत् जोड़ना है।

केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान द्वारा 'मेरा गाँव मेरा गौरव' कार्यक्रम का क्रियान्वयन

इस कार्यक्रम का प्रारंभ सीआईसीआर द्वारा 'प्रयोगशाला से खेत तक' की प्रक्रिया को गति प्रदान करने के लिए सितंबर, 2015 से किया गया। इस परियोजना के अंतर्गत, दिशानिर्देशों के अनुसार, वैज्ञानिकों को अंगीकृत गाँवों में किसानों के नियमित संपर्क में रहकर उन्हें तकनीकी और दूसरे संबध्द पहलुओं पर एक निश्चित समय सीमा के अंतर्गत व्यक्तिगत दौरों तथा दूसरे साधनों से जानकारी उपलब्ध कराना है।

गाँव का चयन :

भाकृअनुप–केकअनुसं, नागपुर अपने क्षेत्रीय केन्द्र कोयंबटूर तथा सिरसा के साथ संस्थान स्तर पर भिन्न विषयों के चार वैज्ञानिकों के समूह बनाकर प्रत्येक वैज्ञानिक समूह द्वारा अपने नियुक्ति स्थल के 50 से 100 किलोमीटर के दायरें में स्थित गाँव का चयन कर तकनीकी प्रसार कार्य कर रहा है। प्रत्येक वैज्ञानिक समूह द्वारा पाँच गाँव अंगीकृत किए गए। संस्थान के स्तर पर वैज्ञानिकों द्वारा सितम्बर, 2015 तक गाँवों का चयन करने की प्रक्रिया पूरी की गई। स्थानीय स्तर पर कृषि विज्ञान केन्द्र, पंचायत एवं अन्य विभाग चयनित गाँवो में वैज्ञानिक समूहों को आवश्यकतानुसार सहायता ली गई। चयनित गाँव की कृषि, जलवायु, सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थिति के विश्लेषण हेतु विकसित करने की प्रक्रिया पर जोर दिया गया। गाँवों का बेंचमार्क सर्वे किया गया और संस्थान स्तर पर संकलित रिपोर्ट सम्बन्धित क्षेत्रीय परियोजना निदेशक को प्रेषित की जाती रही है।

भाकृअनुप–केकअनुसं, नागपुर अपने क्षेत्रीय केन्द्र कोयंबटूर तथा सिरसा के साथ वैज्ञानिकों के दल के द्वारा इस कार्यक्रम का कार्यान्वयन किया गया। वैज्ञानिकों के प्रत्येक दल में 04–05 वैज्ञानिक तथा गाँवों के 05 समूह दिशानिर्देशों के अनुसार रखे गए हैं। इस प्रकार 13 गाँव–समूहों : गणेशपुर समूह, वर्धा पारशिवनी समूह, नागपुर गिरड समूह, वर्धा नांदुरा समूह, वर्धा हिंगणा समूह, नागपुर उमरेड, सारंडी समूह, नागपुर कलमेश्वर समूह, नागपुर नवेगाव समूह, उमरेड, नागपुर डोंगरगांव समूह, नागपुर वडापुडूर पंचायत, किनाथुकाडावू ब्लाक, जि. कोयंबटूर, सोक्कानूर पंचायत किनाथुकाडावू ब्लाक, जि. कोयंबटूर, कंजापल्ली पंचायत अन्नूर ब्लाक, जि. कोयंबटूर, अल्लापालायम पंचायत अन्नूर ब्लाक, जि. कोयंबटूर, नेजाडेला कलान सिरसा (हरियाणा) से कुल 70 गाँव अंगीकृत किए गए है। इस प्रकार, नागपुर, कोयंबटूर तथा सिरसा ये क्रमशः 09, 04 तथा 01 गाँव समूह रखे गए हैं। वैज्ञानिक दल में केन्द्रक (नोडल) अधिकारी तथा वैज्ञानिकों का दल, समूहों के अंगीकृत गाँवों की सूची तालिका (1) में दी गई है।

तलिका 1: 'मेरा गाँव मेरा गौरव' कार्यक्रम अंतर्गत के.क.अनु.सं, नागपुर, क्षेत्रीय केन्द्र कोयंबटूर एवं क्षेत्रीय केन्द्र सिरसा के वैज्ञानिको द्वारा चयन किये गाँव

क्र.	नोडल ऑफिसर एवं वैज्ञानिकों का नाम	पदनाम	अंगीकृत गाँव
डॉ. एस.एम. वासनिक, प्रधान वैज्ञानिक, प्रसार एवं नोडल ऑफिसर एमजीएमजी			
के.क.अनु.सं, नागपुर			
1.	डॉ. पुनीत मोहन	प्रधान वैज्ञानिक	गणेशपुर समूह, वर्धा
	डॉ. जी. बालसुब्रमणी	प्रधान वैज्ञानिक	गणेशपुर
	डॉ. जे. एच. मेश्राम	वरिष्ठ वैज्ञानिक	दिग्रस

दल	नोडल ऑफिसर एवं वैज्ञानिकों का नाम	पदनाम	अंगीकृत गाँव
	डॉ. ए. आर. रेड्डी	प्रधान वैज्ञानिक	जलगाँव
	श्री. मधु टी. एन.	वैज्ञानिक	बेलगाँव' बोरगाँव (सावली)
2.	डॉ. आर. बी. सिंगनधूपे	प्रधान वैज्ञानिक	पारशिवनी समूह, नागपुर
	डॉ. पी. आर. विजयाकुमारी	प्रधान वैज्ञानिक	नरहर
	डॉ. टी. आर. लोकनाथन	प्रधान वैज्ञानिक	कोलितमारा
	डॉ. के. पी. राघवेन्द्र	वैज्ञानिक	नेहरा
	डॉ. विवेक शाह	वैज्ञानिक	बनेरा, मोहँगांव
3.	डॉ. नंदिनी नरखेडकर	प्रधान वैज्ञानिक	गिरड समूह, वर्धा
	डॉ. शैलेश गावंडे	वैज्ञानिक	जोगिनगुंफा
	डॉ. एम. सरवनन	वैज्ञानिक	शिवनफळ
	डॉ. जॉय दास	वैज्ञानिक	आर्वी, फरीदपुर, मोहगाँव
4.	डॉ. एस. एम. पालवे	प्रधान वैज्ञानिक	नांदुरा क्लस्टर, वर्धा
	डॉ. एम. वी. वेणुगोपालन	प्रधान वैज्ञानिक	नांदूरा
	डॉ. वी. शांती	वरिष्ठ वैज्ञानिक	नागापुर
	डॉ. वी. एस. नगराले	वरिष्ठ वैज्ञानिक	करंजी (भोंगे), करंजी (काजी), मदानी
5.	डॉ. सुमन बाला सिंह	प्रधान वैज्ञानिक	हिंगणा समूह, नागपुर
	डॉ. दिपक नगराले	वैज्ञानिक	मांगली
	डॉ. एच. बी. संतोष	वैज्ञानिक	माण्डव घोराड
	डॉ. राकेश कुमार	वैज्ञानिक	जुनेवानी
	डॉ. सविता संतोष	वैज्ञानिक	नंदा खुर्द उखली
6.	डॉ. एस. बी. नन्देश्वर	प्रधान वैज्ञानिक	उमरेड, सरांडी नागपुर
	डॉ. विनीता गोतमारे	प्रधान वैज्ञानिक	मुरथपूर
	डॉ. ए. मणीकन्दन	वैज्ञानिक	नीशन घाट
	डॉ. ए. प्रभुलिंगा टी	वैज्ञानिक	खापरी, सुराबर्डी
	डॉ. चन्द्रशेखर एन.	वैज्ञानिक	कवडापूर
7.	डॉ. ए. आर. राजू	प्रधान वैज्ञानिक	कलमेश्वर समूह, नागपुर
	डॉ. जे. अमुधा	वरिष्ठ वैज्ञानिक	सोनेगाँव

दल	नोडल ऑफिसर एवं वैज्ञानिकों का नाम	पदनाम	अंगीकृत गाँव
	इं. गौतम मजूमदार	वैज्ञानिक	पोही लादई लिंगा, उप्पलकाडि
	डॉ. अनुराधा नराला	वैज्ञानिक	
	डॉ. बाबासाहेब फंड	वैज्ञानिक	
8.	डॉ. डी. वी. पाटिल	वरिष्ठ वैज्ञानिक	नवेगाँव समूह, उमरेड, नागपुर नवेगाँव साधू तिरखुरा करहांडला, थाना, सेव
	डॉ. चिन्नाबाबू नाइक	वैज्ञानिक	
	डॉ. पूजा वर्मा	वैज्ञानिक	
	डॉ. वनीता साळुंखे	वैज्ञानिक	
9.	डॉ. रामकृष्ण जी. आय.	वरिष्ठ वैज्ञानिक	डोंगरगाँव समूह, नागपूर तुमडी सुकळी, लोधीपांजरी नवरनारी मंगरुळ
	डॉ. सुनील महाजन	वरिष्ठ वैज्ञानिक	
	डॉ. निलकंठ	वैज्ञानिक	
	डॉ. रचना पांडे	वैज्ञानिक	
	डॉ. के. वेलमूरगन	वरिष्ठ वैज्ञानिक	
के.क.अनु.सं, – क्षेत्रीय केन्द्र, कोयंबटूर, तमिलनाडू			
10.	डॉ. एन. गोपालकृष्णन	प्रधान वैज्ञानिक	वडापुडूर पंचायत, किनाथुकाडावू ब्लाक, जि. कोयंबटूर वडापुडूर, सिंगैयानपुडूर, सिक्कालपालायम, येलूर, कल्लापुरम
	डॉ. के. पी. एम. दमयंती	प्रधान वैज्ञानिक	
	डॉ. के. शंकरनारायनन	प्रधान वैज्ञानिक	
	डॉ. ईशाबेला अग्रवाल	प्रधान वैज्ञानिक	
11.	डॉ. के. रथिनावेल	प्रधान वैज्ञानिक	सोक्कानूर पंचायत किनाथुकाडावू ब्लाक, जि. कोयंबटूर सोक्कानूर, मुथुगोंडानपुडूर, पालापथी, वीरप्पागोंड़ानूर, वेंकैयागोंडानपुडूर
	डॉ. एम. अमुथा	वैज्ञानिक	
	डॉ. सी. करपागम	वरिष्ठ वैज्ञानिक	
	डॉ. एम. साबेश	वरिष्ठ वैज्ञानिक	
12.	डॉ. पी. नलायिनी	प्रधान वैज्ञानिक	कंजापल्ली पंचायत अन्नूर ब्लाक, जि. कोयंबटूर कंजापल्ली, धासरपलायम, ऊथूपलायम, कुमारागोंडेपुडूर नीला गोंडारपुडूर
	डॉ. एस. मणिक्कम	प्रधान वैज्ञानिक	
	डॉ. डी. कंजना	वैज्ञानिक	
	डॉ. जे. गूलसारबानू	प्रधान वैज्ञानिक	
13.	डॉ. एस.इ.एस.ए. खादर	प्रधान वैज्ञानिक	अल्लापालायम पंचायत अन्नूर ब्लाक, जि. कोयंबटूर अल्लायलायम
	डॉ. बी. धाराजोती	प्रधान वैज्ञानिक	

दल	नोडल ऑफिसर एवं वैज्ञानिकों का नाम	पदनाम	अंगीकृत गाँव
	डॉ. आर. राजा	वरिष्ठ वैज्ञानिक	कोनारपालायम, उथीरामपालायम, मथीरेड्डीपालायम, अकरावाचेंगापल्ली
	डॉ. एस. उषा रानी	वरिष्ठ वैज्ञानिक	
	डॉ. मनीवन्नन	वैज्ञानिक	
के.क.अनु.सं, – क्षेत्रीय केन्द्र, सिरसा, हरियाणा			
14.	डॉ. ओ. पी. टुटेजा	प्रधान वैज्ञानिक	झोंपरा
	डॉ. आर. ए. मीणा	प्रधान वैज्ञानिक	अल्लीकान
	डॉ. एस. के. वर्मा	प्रधान वैज्ञानिक	नेजाडेला कलान
	डॉ. ऋषि कुमार	प्रधान वैज्ञानिक	रंगारी
	डॉ. सतीश सेन	वरिष्ठ वैज्ञानिक	बेंगू

आधार रेखा सर्वेक्षण

जमीनी हकीकत का आकलन करने तथा बेस–लाइन सर्वेक्षण के लिए पूरे दल द्वारा पंचायत, सरपंच, उपसरपंच तथा कार्यकारी सचिव, ग्रामीण प्रशासनिक अधिकारी तथा दूसरे सदस्यों और गाँव में अनेकों किसानों से चर्चा की व कार्यनीतियों का सूत्रीकरण तथा आगे के कार्यान्वयन के लिए गाँव की बुनियादी जानकारी संकलित की गई। नागपुर जिले का पारशिवनी समूह के अंतर्गत गाँव वनीय क्षेत्र में स्थित हैं तथा यहाँ जन–जातीय बहुलता है। यहाँ के किसानों के पास संसाधनों का अभाव है तथा नई प्रोद्योगिकी को अपनाने में समर्थ नहीं है जब तक कि विभाग की सहायता न हो। इसके साथ ही वे पूरी तरह से वर्षा पर निर्भर हैं। कई अवसरों पर समय पर मानसूनी वर्षा न होने या पर्याप्त न होने पर इनकी खरीफ की फसल को नुकसान होता है। पर्यवेक्षण तथा बहुत से लक्षित व्यक्तियों/किसानों के साथ चर्चा करने के पश्चात समूह में प्रत्येक दल द्वारा कार्यक्रम का निर्माण किया गया तथा आगे के कार्यान्वयन के लिए निम्न कार्यनीति निर्धारित की गई।

- विशेषकर सब्जियों की खेती तथा डेयरी उद्योगों के लिए किसानों में नवीनतम वैज्ञानिक कृषि विधियों/तकनीकों के बारे में जागरूकता निर्माण करना।
- स्वच्छता, जलवायु परिवर्तन तथा बेहतर कृषि विधियों के बारे में जागरूकता निर्माण करना।
- किसानों के साथ संवाद बढ़ाने के लिए नियमित बैठकें लेना तथा गाँव में दौरे करना।
- अध्ययन के अंतर्गत क्षेत्र में कपास की खेती को बढ़ावा देना।
- जानकारी का स्तर बढ़ाने के लिए स्थानीय मराठी भाषा में आवश्यक तकनीकी साहित्य प्रदान करना।
- दूसरी संस्थाओं के साथ संपर्क स्थापित करना तथा अंगीकृत एमजी गाँव के विकास के लिए उन संस्थाओं की सेवा लेना।
- विभिन्न सरकारी विकास कार्यक्रमों के बारे में स्कूल के बच्चों में जागरूकता निर्माण करना।
- गाँवो के आगे के विकास के लिए नियमित तकनीकी जानकारी प्रदान करना।

वैज्ञानिक-किसान संवाद आयोजन

एमजी–एमजी गाँवों में विभिन्न दलों/वैज्ञानिक समूह द्वारा किसानों के साथ परिसंवाद बैठकों का आयोजन करके वर्तमान फसलीय परिदृश्य तथा संबधित मुद्दों/समस्याओं पर चर्चा की जाती है। खेत में मृदा नमूने एकत्र करने, तथा मृदा स्वास्थ कार्ड तैयार करने तथा उन्हें विश्लेषण के लिए भेजने, आदि के बारे में प्रशिक्षण प्रदान किया गया। कपास सहित अन्य महत्वपूर्ण फसलों के नाशीकीटों के नियंत्रण उपाय भी बताए गए। खेती की तथा बागवानी फसलों के

नाशीकीटों के प्रबंधन तथा पशुपालन की समस्याओं, आदि पर वैज्ञानिकों व किसानों के मध्य चर्चा की गई। विभिन्न स्थानों पर आयोजित विचार गोष्ठियों तथा चर्चा–सत्रों में महिलाओं सहित बड़ी संख्या में ग्रामीणों द्वारा सक्रिय भाग लिया गया।

गणेशपुर समूह, वर्धा





पारशिवनी समूह, नागपुर





गिरड समूह, वर्धा





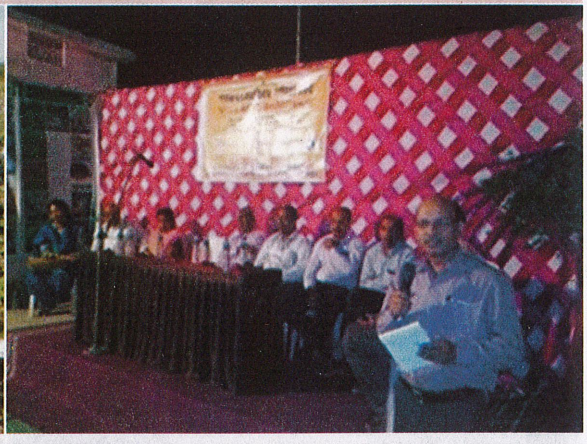
नांदुरा समूह, वर्धा





हिंगणा समूह, नागपुर





उमरेड समूह, सारंडी नागपुर





कलमेश्वर समूह, नागपुर





नवेगाव समूह, उमरेड, नागपुर





डोंगरगांव समूह, नागपुर





कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित प्रशिक्षण कैंप

कपास विकास निदेशालय (डीसीडी) द्वारा प्रायोजित एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम को के.क.अनु.सं, नागपुर द्वारा



'मेरा गाँव, मेरा गौरव' के अंतर्गत अंगीकृत वर्धा तथा नागपुर जिले के किसानों के लिए आयोजन 28 सितंबर, 2015 को किया गया। इस अवसर पर के.क.अनु.सं. द्वारा किसानों तथा वैज्ञानिकों के मध्य मजबूत संबंध तथा विश्वास निर्माण करने पर बल दिया गया। वैज्ञानिकों तथा किसानों को निरंतर संपर्क स्थापित करके 'प्रयोगशाला से खेत तक' एक सफल पहल के तौर उदाहरण विकसित करने पर बल दिया। ई–कपास कार्यक्रम जिसमें 3.75 लाख किसानों को नौ भाषाओं में साप्ताहिक वॉइस–मेल परामर्शी प्रेषित की जाती हैं, किसानो को इनका पूरी तरह से उपयोग करने को कहा गया। डीसीडी, भारत सरकार द्वारा कपास के किसानों के लिए अपने विभाग की योजनाओं के बारे में भी बताया गया। उत्पादन प्रौद्योगिकी एव कपास में उपयुक्त किस्मों के चुनाव के बारे में भी जानकारी दी गई। वैज्ञानिकों द्वारा किसानों का प्रायोगिक प्रक्षेत्र का भ्रमण कराकर किए जा रहे अनुसंधान कार्य की जानकारी भी दी गई। सघन पद्धती के प्रयोग से, अंतःफसल, नाशीकीट तथा रोग प्रबंधन, बकरी पालन, आदि प्रदर्शनों का भ्रमण कराकर उनके बारे में जानकारी दी गई। कपास की उन्नत खेती तथा दूसरे पहलुओं पर स्थानीय मराठी भाषा में प्रसार साहित्य का वितरण भी किसानों में किया गया। कपास पर खेती की विधियों के सम्पूर्ण पैकेज जैसे सघन पद्धती, पोषकतत्व प्रबंधन, दैहिकीय विकृतियां आदि को फिल्म के साथ दिखाया गया। प्रश्नोत्तर सत्र के आयोजन में किसानों की समस्याओं का समाधान किया गया। मेरा गाँव मेरा गौरव कार्यक्रम के अंतर्गत के.क.अनु.सं. के वैज्ञानिकों द्वारा अंगीकृत लगभग 430 किसानों द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया गया।

मृदा स्वास्थ संबंधित जागृति

"मेरा गाँव मेरा गौरव" कार्यक्रम अंतर्गत वैज्ञानिकों द्वारा समय–समय पर मृदा स्वास्थ सबंधित गाँवों में जाकर किसानो में जागृति पैदा की गई। गिरड समूह में प्रशिक्षण आयोजित कर (100 से ज्यादा) मृदा स्वास्थ्य कार्ड का वितरण किया गया तथा किसानों को रासायनिक खादों का समुचित मात्रा में उपयोग करने के लिए कहा गया। वैज्ञानिकों ने किसानों को अवगत कराया कि मिट्टी परीक्षण के पश्चात हर जमीन में कितनी खाद की आवश्यकता है इसका सुझाव दिया गया है। किसानों द्वारा कार्ड में दिये गए उपायों को आजमाकर खेती की उपजाऊ क्षमता बढ़ाई जा सकती है।

कपास–सोयाबीन अंतः फसल पर जागरूकता प्रशिक्षण

नागपुर तथा वर्धा जिलों में किसानों के खेत पर कपास–सोयाबीन अंतःफसल पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों का कार्यान्वयन करके अंतःफसल के बारे में जागरूकता निर्माण करने के लिए एक दिवसीय जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम वर्धा जिले के समुद्रपुर तालुका के गिरड के जोगिनगुंफा गाँव में आयोजित किया गया। वैज्ञानिकों द्वारा अंतः फसल के महत्व को बताया गया तथा किसानों को कपास की दो कतारों के मध्य मूँग, उड़द की लघु अवधि की अंतः फसल लेने की सलाह दी गई। अंतः फसल का अभिप्रयोग लेने के लिए किसानों को सोयाबीन का बीजोपचार करने के लिए ब्रेडीराइजोबियम जेपोनिकम जैवउर्वरक के पैकटों का वितरण किया गया। कपास के साथ अंतः फसल से किसानों





को आर्थिक नफा होने के कारण इस तकनीक को अधिक संख्या में किसानों ने अपनाने की इच्छा जताई।

जनजातीय किसानों को प्रशिक्षण

नागपुर, कळमेश्वर एवं पारशिवणी एम जी एम जी समूह के तज्ञ वैज्ञानिकों द्वारा "ट्रॉयबल सब प्लॉन" कार्यक्रम अंतर्गत सभी अपनाए गए गाँवों के जनजातीय किसानों को प्रशिक्षण का आयोजन करके विभिन्न कृषि तकनीकों से अवगत कराया गया। तथा मुर्गीपालन, बकरीपालन, कपास बीज उत्पादन तकनीकी, हल्की एवं कमजोर जमीनों में मृदा रखरखाव, अंतःफसल, आदि विषयों पर जानकारी प्रदान की गई। साथ ही कृषि विभाग की योजनाएँ, बागवानी, दूध उत्पादन तकनीकी, देशी कपास आदी से ज्यादा आमदनी कैसे प्राप्त करके आर्थिक फायदा किया जा सकता है, इत्यादि विषयों सें किसानों को अवगत कराया गया और पारशिवणी समूह के चार जनजातीय किसानों को देसी कपास तकनीकी अवलंबन करने हेतु सम्मानित किया गया।

सिरसा, हरियाणा वैज्ञानिकों द्वारा स्वच्छता अभियान

केंद्रिय कपास अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र सिरसा के वैज्ञानिकों द्वारा "मेरा गाँव मेरा गौरव" अंतर्गत गाँवों में कपास तकनीकी प्रबंधन के साथ ही हरी–भरी कृषि एवं स्वच्छता हेतु खरपतवार नियंत्रण कपास कीड़ों–रोगों का व्यवस्थापन, कम्पोस्ट तैयार करने की विधि एवं नए पेड़ों को उगाने संबंधित जागरूकता पैदा करके वातावरण हरा–भरा रखने हेतु किसानों को स्वच्छता पखवाड़ा मनाया गया।





कोयम्बटूर, तमिलनाडू में किसानों को खरीफ मौसम पूर्व मार्गदर्शन

केंन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र कोयम्बतूर के "मेरा गाँव, मेरा गौरव" अंतर्गत सोक्कानूर समूह के वैज्ञानिकों द्वारा तामिलनाडू कृषि विभाग एवं बैंक ऑफ बड़ोदा के सहभाग से किसानों को कपास के अलावा टमाटर, मक्का, सब्जियाँ एवं नारियल खेती से संबंधित तकनीकी जानकारियों से अवगत कराया। साथ ही कृषि विभाग की विभिन्न योजनाओं के बारे में भी किसानों को जानकारी दी गई।







स्वच्छता पखवाड़ा, सिरसा

इस प्रकार वैज्ञानिकों के साथ गाँवों में कृषकों का संपर्क बढ़ाकर ना केवल कपास अनुसंधान संबंधित जानकारी प्रदान की जा रही है अपितु दूसरी फसलें फल, बागवानी, पशु पालन, डेअरी आदि के साथ साथ मृदा परीक्षण, स्वछता अभियान, पर्यावरण प्रदूषण एवं उसके दुष्परिणामों के प्रति भी सचेत किया जा रहा हैं।



रोटी को निकले हो ? तो कुछ और चलो तुम।
प्रेम चाहते हो? तो मंज़िल बहुत दूर है।
किंतु कहीं आलोक खोजने को निकले हो तो
क्षितिजों के पार क्षितिज पर चलते जाओ...

– रामधारी सिंह 'दिनकर'

हम नदी की धार से ठंडी हवा आती तो है,
नाव जर्जर ही सही लहरों से टकराती तो है।
एक चिनगारी कहीं से खोज लाना मेरे दोस्त,
इस दीये में तेल से भींगी हुई बाती तो है...।

– दुष्यंत कुमार

जो लोग जान बूझ कर नादान बन गए
मेरा ख्याल है कि वो इन्सान बन गए...।

– अदम

महाराष्ट्र में किसान आत्महत्या : एक विश्लेषण

केशव कुमार
सहायक
भा.कृ.अनु.प.–के.क.अनु.सं., नागपुर

सारांश

किसान आत्महत्या से आशय है किसानों द्वारा अपनी इच्छा से अपनी हत्या। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार व्यक्ति मानसिक विक्षिप्ता की स्थिति में आत्महत्या करता है। समाजशास्त्री इमाईल दुर्खीम के अनुसार आत्महत्या एक सामाजिक समस्या है क्योंकि उसका कारण समाज में स्थित है। वर्तमान में भारत की 48.9% जनता प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर आश्रित है। नेशनल क्राइम रिकार्ड ब्यूरो ऑफ इंडिया 2015 के आँकड़ों के अनुसार वर्ष 2014 में भारत में कुल 5,650 किसानों ने आत्महत्या की जिसमें से 2,586 किसान महाराष्ट्र राज्य से थे। इस प्रकार महाराष्ट्र में किसान आत्महत्या एक ज्वलंत विषय के रूप में विद्यमान है। मानसून की विफलता, सूखा, उचित भाव नहीं मिलना, कीड़ों के कारण फसल का बर्बाद होना, वर्षा का अत्याधिक दबाव आदि किसान को आत्महत्या करने हेतु प्रेरित करनेवाले तथ्य हैं।

कारण : महाराष्ट्र में किसान आत्महत्या के कारक निम्नलिखित हैं –

मनोवैज्ञानिक कारक	सामाजिक कारक
सांस्कृतिक कारक	आर्थिक कारक
राजनीतिक कारक	जलवायु संबंधी कारक
अन्य कारक	

मनोवैज्ञानिक कारक : मनोवैज्ञानिकों के अनुसार व्यक्ति मानसिक विक्षिप्तता, तनाव आदि के कारण आत्महत्या के लिए प्रेरित होता है। महाराष्ट्र के किसानों को कर्ज आदि के कारण मानसिक विक्षिप्तता आती है तो उन्हें लगता है कि उनका जीवन तकलीफों से भरा है जिसका कोई समाधान नहीं है। ऐसी परिस्थितियों में किसान आत्महत्या करता है। नेशनल क्राइम रिकार्ड ब्युरो 2015 के अनुसार कुल किसान आत्महत्या का 85% पुरुष हैं। भारतीय समाज में परिवार की जिम्मेदारी, रोजगार करने की जिम्मेदारी मुख्यतः पुरुषों पर ही होती है। उन पर मानसिक दबाव ज्यादा होता है। तनाव, निराशा, नकारात्मक सोच आत्महत्या के मुख्य मनोवैज्ञानिक कारक हैं।

सामाजिक कारक : दुर्खीम ने बताया कि आत्महत्या एक सामाजिक समस्या है। सामाजिक समस्याएँ (आत्महत्या) सामाजिक परिस्थितियों की देन है। महाराष्ट्र में किसान जब सोचने लगता है कि उसकी आवश्यकताओं (कर्ज, देनदारी) की पूर्ति समाज नहीं कर सकता है और न ही उसके ऊपर समाज की कोई जिम्मेदारी है; ऐसी परिस्थिति में वह आत्महत्या करना चाहता है। समाजशास्त्री दुर्खीम ने इस तरह की आत्महत्या को अहंवादी आत्महत्या (egoistic suicide) बताया है।

सांस्कृतिक कारक : भारतीय संस्कृति का सुन्दर वाक्य है "प्राण जाए पर वचन न जाए"। किसान महाजन से कर्ज लेने के बाद वचन देते हैं कि एक निश्चित समयावधि के दौरान वह इस कर्ज को चुका देंगे। यदि किसी कारणवश कृषि में किसान को नुकसान हो जाता है तो वे इतने परेशान हो जाते हैं कि अपनी इज्जत, प्रतिष्ठा को नीलाम होते हुए देखने से अच्छा आत्महत्या कर लेना मुनासिब समझते हैं।

आर्थिक कारक : महाराष्ट्र में किसान मुख्यतः कपास की खेती करते है और वे ज्यादातर एक फसली कृषि प्रणाली / पध्दति अपनाते हैं। एक फसली कृषि पध्दति में किसान कभी फायदे में रहता है और कभी नुकसान में। कपास नकदी

फसल होने के कारण इसमें पूंजी, धन का काफी मात्रा में निवेश किया जाता है। परंतु किसी कारणवश कपास की फसल बर्बाद हो जाती है तो किसान कर्ज में डूब जाता हैं और आत्महत्या करता है। यही स्थिति कमोवेश संतरा उत्पादन करने वाले किसान पर भी लागू होती है।

वर्तमान में महाराष्ट्र के 21 जिलों को सूखा प्रभावित क्षेत्र घोषित किया गया है। इसमें मराठवाड़ा और विदर्भ क्षेत्र में किसानों की स्थिति सबसे खराब है। वहाँ पर भूमिगत जल का स्तर लगातार गिरता जा रहा है। फसलों को जब सिंचाई की जरूरत होती है तब न तो वर्षा होती है और न मिट्टी में नमी। सिंचाई के संदर्भ में मराठवाड़ा के औरंगाबाद जिले के जायकवाड़ी बाँध की स्थिति काफी दयनीय है।

कुछ विद्वानों ने आंकड़े देकर इस तथ्य को स्पष्ट किया है कि जब (1991) से भारत ने वैश्वीकरण, निजीकरण और उदारीकरण को अपनाया है तब से किसान आत्महत्या की दर में बढोत्तरी हुई है। बीज क्षेत्र का निजीकरण, कृषि बाजार का उदारीकरण इसके मुख्य संघटक हैं।

कई बार अधिक उत्पादन के कारण भी आर्थिक नुकसान होता है। उदाहरण 2016–2017 में टमाटर फसल का इतना अधिक उत्पादन महाराष्ट्र में हुआ कि किसान को उचित भाव नहीं मिला। किसान को लागत मूल्य तक प्राप्त नहीं हुआ। शीत भंडारणयुक्त ट्रकों की सुविधा काफी महँगी है। इससे मध्यवर्गीय किसान इनका लाभ नहीं ले पाते हैं।

राजनीतिक कारक : गुजरात में कपास फसल का उत्पादन, महाराष्ट्र की अपेक्षा दुगुना है। गुजरात का किसान, महाराष्ट्र के किसान से दुगुना लाभ कमा रहा है। इसका कारण है महाराष्ट्र में सिंचाई सुविधाओं का समुचित तरीके से विकास नहीं हुआ है। वर्तमान में विदर्भ क्षेत्र में भारत सरकार मेट्रो परियोजना पर अरबों रुपये खर्च कर रही है। इसका लाभ मूल रुप से शहरी लोगों को होगा। इसकी तुलना में सिंचाई सुविधाओं के विस्तार पर खर्च 'ऊँट के मुँह में जीरा के समान' है। महाराष्ट्र का समेकित विकास के लिए ग्रामीण अर्थव्यवस्था का विकसित होना आवश्यक है।

जलवायु कारक : वर्तमान में महाराष्ट्र के 21 जिले सूखाग्रस्त हैं। सामान्य वर्षा से कम वर्षा (10% या अधिक) होने पर भूमिगत जल का स्तर नीचे गिरने लगता है। मिट्टी में नमी की मात्रा कम हो जाती है। इससे फसलों के उत्पादन पर प्रतिकूल असर पड़ता है।

अन्य कारक : महाराष्ट्र में सभी मुख्य फसलों के सरकारी अनुसंधान केन्द्र स्थापित हैं पर इनके वैज्ञानिकों का अनुसंधान यहाँ के किसान आत्महत्या पर अंकुश लगाने में असमर्थ रहा है। वास्तव में इन वैज्ञानिकों का अनुसंधान कार्य प्रयोगशालाओं और कागजों पर सिमट कर रह गया है। व्यवहार में इनके अनुसंधान का कोई असर किसान आत्महत्या दर पर नहीं दिख रहा है।

निवारण के उपाय

महाराष्ट्र में किसान आत्महत्या रोकने के लिए निम्नांकित उपाय करना चाहिए –

1. मराठवाडा क्षेत्र और विदर्भ क्षेत्र में सबसे ज्यादा किसान आत्महत्याएँ होती हैं। इसलिए वहाँ के प्रत्येक गाँव में मनोचिकित्सक की नियुक्ति होनी चाहिए।
2. कृषकों को पशुपालन कृषि और मिश्रित कृषि अपनानी चाहिए।
3. प्रत्येक गाँव को कोल्ड स्टोरेज सुविधा से जुड़ा होना चाहिए और यह सुविधा सस्ती दर पर मिलनी चाहिए।
4. यह सुनिश्चित करना चाहिए कि नहरी सिंचाई, नलकूप सिंचाई, अन्य साधन का लाभ प्रत्येक किसान को मिले।
5. जल संसाधन का समुचित उपयोग और नदियों को जोड़कर जल प्रबंधन किया जा सकता है। इससे सिंचाई की सुविधा प्राप्त होगी।
6. वर्षा जल का उचित प्रबंधन कर भूजल स्तर को रिचार्ज करना चाहिए।
7. पेड़ पौधों को लगाकर मिट्टी की उर्वरता, भू–जल स्तर को बढ़ाया जा सकता है।
8. ऐसी लघु वित्तीय संस्थान जहाँ से मराठवाडा और विदर्भ के किसान कर्ज लेते हैं। उन पर कड़ी निगरानी रखनी चाहिए।
9. खेती–बाड़ी से संबंधित कर्ज देने के लिए महिलाओं को प्रोत्साहित करना चाहिए।
10. सरकार द्वारा किसानों को कृषि के अर्थपूर्ण तरीके के बारे में दिशानिर्देश देकर उनकी मदद की जा सकती है।
11. सरकार को लघु किसानों को कृषि के साथ–साथ अन्य रोजगार अपनाने हेतु प्रशिक्षित करना चाहिए।
12. विशेष कृषीय क्षेत्र (special agriculture zone) का निर्माण कर वहाँ सुविधा (जैसे मृदा परीक्षण, कीटों पर निगरानी व उन्हें दूर करने की सुविधा, उन्नत बीजों की

व्यवस्था, निर्यात और बाजार की सुविधा, फसल सुरक्षा आदि) दिया जाना चाहिए।

13. किसानों द्वारा फसल चक्र प्रणाली का अपनाना।
14. सरकार द्वारा मौसम संकट प्रबंधन (Weather Risk Management) करना।
15. सरकार द्वारा कीट–रोग चेतावनी तंत्र का विकास करना। सुंदर उदाहरण – नीदरलैंड में रोग चेतावनी तंत्र का विकास किया गया है जो किसानों को फसल पर कीड़ें लगने पर चेतावनी (Alarm) भेजते हैं।
16. अधिक/अतिरिक्त उत्पादन के समय सरकार को विदेशों में निर्यात की सुविधा तुरंत प्राथमिकता के आधार (Priority Basis) पर उपलब्ध करवाना चाहिए।
17. वर्षा जल को तालाब बनाकर संग्रहित करें और वर्षारहित मौसम में सिंचाई के लिए उपयोग करें।
18. गन्ना की खेती महाराष्ट्र के कम सिंचित क्षेत्रों में बंद कर देनी चाहिए क्योंकि इससे भूमिगत जलस्तर में ह्रास हो रहा है।
19. सरकार द्वारा कृषकों को रोजगार के अन्य साधनों का उपलब्ध कराना चाहिए।
20. आर्थिक विशेषज्ञों के अनुसार, जिस गति से प्रतिवर्ष महंगाई बढ़ रही है, उस लिहाज से कपास की वैश्विक दरें घट रही हैं। कपास उत्पादन करने का लागत मूल्य (बीज की कीमत, कीटकनाशी, खाद का मूल्य अन्य कृषि संबंधित आवश्यक चीजें) बढ़ रहा है। इस प्रकार कपास की कृषि का लाभ गिर रहा है। अतः किसानों को अन्य नगदी फसलों के उत्पादन की ओर भी ध्यान देना चाहिए।

निष्कर्ष : जीवन संघर्ष का दूसरा नाम है। जो संघर्ष से घबराता है वही आत्महत्या करता है, कारण कुछ भी हो सकता है। परिस्थितियाँ कितनी भी खराब क्यों न हो जाएँ, जिसमें जीने की आशा होती है वह कभी आत्महत्या नहीं करता ।

"मंजिल उन्हीं को मिलती है,
जिनके सपनों में जान होती है
पंखों से कुछ नहीं होता,
हौसलों से उड़ान होती है।"

उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट परिलक्षित है कि किसान आत्महत्या समाज के लिए अभिशाप है। इसे रोकना हमारा कर्तव्य है। किसान राष्ट्र का अन्नदाता होता है और अन्नदाता को आत्महत्या करने से रोकना राज्य सरकार और केन्द्र सरकार का मुख्य दायित्व है जिसके लिए युद्धस्तर पर प्रयास करने की आवश्यकता है।

भारत में कृषि क्षेत्र की क्रांतियाँ
Revolutions in the Field of Agriculture in India

- सिल्वर फाइबर क्रांति (Silver Fiber Revolution) - कपास उत्पादन (Cotton Production)
- रजत क्रांति (Silver revolution) - अंडा एवं पोल्ट्री उत्पादन (Egg and poultry Production)
- श्वेत क्रांति (White revolution) - दूध एवं डेयरी उत्पाद (Milk and dairy Products)
- पीली क्रांति (Yellow revolution) - तिलहन उत्पादन (Oilseed Production)
- काली क्रांति (Black Revolution) - पेट्रोलियम उत्पादन (Petroleum Production)
- नीली क्रांति (Blue Revolution) - मछली उत्पादन (Fish Production)
- ब्राउन क्रांति (Brown Revolution) - चमड़ा (Leather) / कोको उत्पादन (Cocoa Production)
- गोल्डन फाइबर क्रांति (Golden Fiber Revolution) - जूट उत्पादन (Jute Production)
- स्वर्ण क्रांति (Golden revolution) - फल एवं शहद उत्पादन (Fruit and honey Production)
- हरित क्रांति (Green revolution) - फसल उत्पादन (Crop Production)
- गुलाबी क्रांति (Pink revolution) - प्याज एवं झींगा उत्पादन (Onion and shrimp Production)
- लाल क्रांति (Red Revolution) - मांस और टमाटर का उत्पादन (Meat and Tomato Production)
- गोल क्रांति (Round revolution) - आलू उत्पादन (Potato Production)
- धूसर क्रांति (Grey revolution) - उर्वरक उत्पादन (Fertilizer Production)
- सदाबहार क्रांति (Evergreen revolution) - समस्त खेती–बाड़ी उत्थान के लिए (Over all Agriculture Development)
- खाद्यान्न श्रृंखला क्रांति (Food chain revolution) - खाद्यान्न/सब्जी/फलों को सड़ने से बचाना (Save food/vegetables/Fruits from rotting)

प्याज : उत्पादन की उन्नत विधियाँ

डॉ. वनिता सालुंखे
वैज्ञानिक
भा.कृ.अनु.प.–के.क.अनु.सं., नागपुर

प्याज एक महत्वपूर्ण सब्जी एवं मसाला फसल होने के साथ वाणिज्यिक फसल भी है। इसमें प्रोटीन एवं कुछ विटामिन भी अल्प मात्रा में रहते हैं। प्याज खाने का स्वाद बढ़ाता है एवं इसमें औषधीय गुण भी है जिसके कारण दैनिक आहार में इसका महत्वपूर्ण स्थान है। भारत प्याज उत्पादन में चीन के बाद दूसरे और क्षेत्रफल में पहले स्थान पर है, लेकिन उत्पादकता में बहुत ही पीछे है। स्थानीय किस्मों की कम उपज क्षमता, रासायनिक उर्वरकों के अनुचित प्रयोग, उपलब्ध किस्मों की कीट एवं रोगों के प्रति संवेदनशीलता और अच्छे बीज की अपर्याप्त उपलब्धता, आदि घटक इसके लिए जिम्मेदार है। प्याज उत्पादन की आधुनिक तकनीकों को अपनाकर प्याज उत्पादकता बढ़ाई जा सकती है।

मृदा : आमतौर पर प्याज सभी प्रकार की मृदा में उगाई जा सकती है, लेकिन सफल प्याज की खेती के लिए सबसे अच्छी मिट्टी दोमट और जलोढ़ है, जिसमें जल निकासी प्रवृति के साथ अच्छी नमी धारण क्षमता और पर्याप्त कार्बनिक पदार्थ हों। मिट्टी अधिक क्षारीय एवं अधिक अम्लीय नहीं होनी चाहिए अन्यथा कन्दों की वृद्धि अच्छी नहीं हो पाती है।

जलवायु : प्याज की फसल के लिए समशीतोष्ण जलवायु की आवश्यकता होती है। हल्के मौसम में इसकी अच्छी उपज प्राप्त की जा सकती है। जब न अत्याधिक गरमी या ठंड हो और न ही अत्याधिक वर्षा। वनस्पति चरण और प्याज के विकास के लिए अनुकूलतम तापमान क्रमशः 13–24°सें और 16–25°सें है। इसकी अच्छी वृद्धि के लिए 70% सापेक्ष आर्द्रता और औसतन वार्षिक वर्षा 650–750 मि.मी. अनुकूल होती है।

मौसम : भारत में मुख्य रूप से खरीफ, पछेती खरीफ और रबी के मौसम में प्याज लगाया जाता है। देश में प्याज बुवाई, रोपाई और कटाई का समय क्षेत्रों के साथ बदलता है।

तालिका 1 : महाराष्ट्र में प्याज बुवाई, रोपाई और कटाई का समय

मौसम	बुवाई	रोपाई	कटाई
खरीफ	मई–जून	जुलाई–अगस्त	अक्टूबर–दिसम्बर
पछेती खरीफ	अगस्त–सितम्बर	अक्टूबर–नवम्बर	जनवरी–मार्च
रबी	अक्टूबर–नवम्बर	दिसम्बर–जनवरी	अप्रैल– मई

तालिका 2 : मौसम के अनुसार प्याज की उन्नत किस्में

मौसम	लाल रंग की किस्में	सफेद रंग की किस्में
खरीफ	भीमा सुपर, भीमा रेड, भीमा राज, भीमा डार्क रेड, एन–53, एग्रीफाउंड डार्क रेड, अर्का कल्याण एग्रीफाउंड डार्क रेड, एग्रीफाउंड रोज, बसवंत–780	भीमा शुभ्रा, भीमा श्वेता, भीमा सफेद

मौसम	लाल रंग की किस्में	सफेद रंग की किस्में
पछेती खरीफ	भीमा सुपर, भीमा रेड, भीमा राज, भीमा शक्ति	भीमा शुभ्रा
रबी	भीमा रेड, भीमा राज, भीमा शक्ति, भीमा किरण, अर्का निकेतन, अर्का बिंदू, अर्का कीर्तिमान, अर्का लालिमा, एग्रीफाउंड लाइट रेड	भीमा श्वेता

पौधशाला : उचित पौधशाला प्रबंधन और रोपाई का प्याज की फसल में महत्वपूर्ण योगदान है। लगभग 5 गूंठे (500 चौ.मी.) क्षेत्र की पौधशाला 1 हेक्टेयर में रोपाई हेतु पर्याप्त है। पौधशाला के लिए समतल, उपजाऊ एवं पानी का अच्छा निकास होने वाली भूमि योग्य होती है। पौधशाला के लिए खेत की 5–6 बार जुताई करके पिछली फसल के अवशेष, खरपतवार और पत्थर हटा देना चाहिए। आखिरी जुताई के समय आधा टन अच्छी तरह से सड़ी हुई गोबर की खाद, 250ग्रा. ट्रायकोडर्मा के साथ 0.05 हेक्टेयर मिट्टी में अच्छी तरह से मिलाना चाहिए। पौधशाला हमेशा उठी हुई क्यारियों पर बनाना चाहिए इससे अच्छा जलनिकास होके पौधों में सड़न एवं आर्द्र गलन से छुटकारा मिलता है। क्यारियाँ सामान्यतः 3 मीटर लम्बी तथा 1 मीटर चौड़ी, भूमि से लगभग 15–20 सेमी ऊँची बना लेनी चाहिए। बुवाई से पहले बीज को फफूंदनाशक दवा जैसे, थिरम/कार्बेन्डाजिम/कॅप्टान (2ग्रा/किग्रा) की दर से अवश्य उपचारित करें, ताकि प्रारम्भ में लगने वाली बीमारियों के प्रकोप से पौधे बच सकें। बीज 50 मि.मी. से 75 मि.मी पर कतार में बोया जाना चाहिए, जिससे बीज बुआई के बाद रोपाई, निराई और कीटनाशकों का छिड़काव आसानी से हो सके। पौधशाला में खरपतवार नियंत्रण के लिए 0.2% पेंडीमिथिलीन का इस्तेमाल बीज बोने के तुरंत बाद करना चाहिए और पानी देना चाहिए। बुवाई के बाद बीज को मिट्टी तथा सड़े–गले गोबर की खाद के मिश्रण से ढ़ककर उसके ऊपर कांस अथवा पुआल आदि की एक पतली परत बिछा देना चाहिए, जिससे तेज धूप तथा वर्षा से बीज की रक्षा हो सके। यह परत भूमि में नमी बनाये रखने में भी सहायक होती है। बीज बोने के तुरंत बाद क्यारी में फव्वारे से हल्की सिंचाई करें तथा इसके बाद एक दिन के अंतर पर सिंचाई करते रहें। जब बीज का अंकुरण हो जाये तो कांस अथवा पुआल की परत को हटा दें, ताकि पौधों को धूप एवं हवा लगे। पौधशाला में आवश्यकतानुसार हल्की सिंचाई और निराई करते रहने से 6–7 सप्ताह बाद पौधे रोपाई लायक हो जाते हैं। अंकुरण के बाद कॅप्टान/थायरम/डायथेन एम–45 (2ग्रा/लीटर पानी) का घोल पौधों की जड़ों के पास मृदा में डालने (ड्रेंनचिंग) से जड़ गलन तथा अन्य बीमारियों की संभावना नहीं रहती है।

खेत की तैयारी : अप्रैल–मई के महीने में खेत की गहरी जुताई करके जमीन को तपने देने से मिट्टी में छुपी हुई कीट एवं फफूँद नष्ट करने में मदद होती है। जमीन अच्छे से तपने के बाद 5–6 बार जुताई करके मिट्टी के ढेले खत्म करके मिट्टी भुरभुरी बनानी चाहिए। पिछली फसल के अवशेष एवं खरपतवार नष्ट करने चाहिए। जमीन में प्रति हेक्टेयर 5–10 कि.ग्रा. ट्रायकोडर्मा 100–200 कि.ग्रा. सड़ी हुई गोबर के खाद के साथ मिलाकर डालना चाहिए।

रोपाई : खरीफ प्याज की रोपाई उठी हुई क्यारियों पर करनी चाहिए एवं रबी प्याज के लिए समतल बैठी क्यारियों का इस्तेमाल करें। रोपाई के समय कतारों के बीच 15 सेंमी और पौधों के बीच 10 सेंमी इष्टतम अंतर होना चाहिए। रोपाई के लिए अच्छे पौधों का चयन करें। रोपाई के समय पौध के शीर्ष का एक तिहाई भाग काट देना चाहिए, जिससे उनकी अच्छी स्थापना हो सके। प्याज की पौध बोने के दौरान रोग एवं कीटों से बचने के लिए पौध की जडों को कार्बेन्डाजिम (0.2%) और कार्बोसल्फान (0.2%) के द्रावण में 2 घंटे रख कर रोपाई करें। थ्रिप्स विषाणु जनित रोगों का प्रसार करते है इसीलिए उनका शुरूआत से ही नियंत्रण करना आवश्यक है। इसलिए रोपाई के बाद पहिले पानी के साथ कार्बोफ्युरान 10जी कीटनाशक 10किग्रा/हे की मात्रा में मिट्टी में डालें। फसल को खरपतवार मुक्त रखने के लिए रोपाई से पहले सूखी क्यारिओं में 15 मिली गोल (ऑक्सीफ्लूआरफेन) तथा 30 मिली स्टॉम्प (पेंडीमिथिलीन) 10 लीटर पानी में मिला के छिड़कना चाहिए और रोपाई के तुरंत बाद पानी देना चाहिए। रोपाई के 30–45 दिनों बाद पौधों के आस–पास कि मिट्टी खुरपी से हिलानी चाहिए इससे जड़ों के पास हवा का संचार होता है और प्याज विकास होता है।

पोषक तत्व प्रबंधन : प्याज की फसल द्वारा पोषक तत्वों की खपत मुख्य रूप से प्याज की उपज, किस्मों, उर्वरकों की मात्रा, मिट्टी की स्थिति और मौसम पर निर्भर करती है।

प्याज में मौसम के अनुसार उर्वरकों की सिफारिश मात्रा देनी चाहिए।

तालिका 3 : मौसम के अनुसार उर्वरकों की सिफारिश की गई मात्रा

मौसम	नत्रजन (किग्रा/हे)	फॉस्फोरस (किग्रा/हे)	पोटाश (किग्रा/हे)	गंधक (किग्रा/हे)
खरीप	100	50	50	50
पछेती खरीप	150	50	50	50
रबी	150	50	80	50

सिफारिश किये गए नत्रजन की एक तिहाई और फॉस्फोरस और पोटाश की पूरी मात्रा रोपण के समय देनी चाहिए। जबकि नत्रजन की शेष दो तिहाई मात्रा दो भागों में विभाजित कर रोपण के 30 और 45 दिनों के बाद देनी चाहिए। इसके साथ–साथ गंधक भी प्याज कन्द के तीखापन में सुधार लाने के लिए और प्याज का उत्पादन बढ़ाने के लिए एक महत्वपूर्ण पोषक तत्व है। पौधों की वृद्धि के समय यदि किसी सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी का पता चलता है, तो फसल पर छिड़काव या मिट्टी अनुपयोग द्वारा पोषकतत्वों का इस्तेमाल करें।

जैव उर्वरक : जैव उर्वरकों में सूक्ष्मजीव उपस्थित होते है। जैव उर्वरकों का उपयोग बीज उपचार तथा मिट्टी में डालने के लिए किया जाता है। जब इन्हें बीज प्रक्रिया कर मिट्टी में डालते है, तब इनमे उपस्थित सूक्ष्म जीव नत्रजन स्थिरीकरण, फॉस्फोरस घुलनशीलता और दूसरे विकास वर्धक पदार्थो द्वारा प्राथमिक पोषक तत्वों की उपलब्धता में वृद्धि करते है, जिससे पौधों का विकास होता है।

सिंचाई प्रबंधन : मौसम, मिट्टी का प्रकार, सिंचाई की विधि और फसल की आयु पर प्याज में सिंचाई की आवश्यकता निर्भर करती है। आम तौर पर रोपाई के समय, रोपाई से तीन दिनों बाद और मिट्टी की नमी के आधार पर 7–10 दिनों के अंतराल पर सिंचाई की जरूरत होती हैं। खरीफ फसल में 5–8 बार, पछेती खरीफ फसल में 10–12 बार और रबी की फसल में 12–15 बार सिंचाई की जरूरत है। फसल परिपक्व होने के पश्चात(फसल कटाई से 10–15 दिन पहले) सिंचाई बंद कर देनी चाहिए इससे भण्डारण के दौरान सड़न को कम करने में मदद मिलती है। अतिरिक्त सिंचाई प्याज की फसल के लिए हानिकारक होती है। तथा शुष्क समय के बाद सिंचाई करने से दुफाड़ कन्द और तोर बनते हैं। आधुनिक सिंचाई तकनीक जैसे, टपक सिंचाई और फव्वारा सिंचाई को अपनाने से पानी की बचत होती है।

रोग एवं कीट प्रबंधन : अच्छी गुणवत्ता वाली, उच्च विपणन योग्य उपज पाने के लिए उचित तरीकों से रोग एवं कीट प्रबंधन जरूरी है। प्याज में रोग एवं कीट की तीव्रता के आधार पर 10–15 दिनों के अंतराल पर फफूंदीनाशक एवं कीटनाशक छिड़काव किया जाना चाहिए। छिड़काव करते समय द्रावण में स्टिकर (0.5–1.0%) जरूर डालें। एक ही वर्ग के कीटनाशक एवं फफूंदीनाशक का बारबार इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। एक क्षेत्र के किसानों द्वारा एक साथ छिड़काव करने से प्रभावी कीट/रोग प्रबंधन होता है।

तालिका 4 : फफूंदीनाशक एवं कीटनाशकों का छिड़काव

छिड़काव	समय	फफूंदीनाशक + कीटनाशक
पहला	रोपाई के 30 दिन बाद	मैंकोजेब (2.5 ग्रा/लि) + मिथोमिल (40% एस पी) (0.8 ग्रा/लि)
दूसरा	रोपाई के 45 दिन बाद	ट्रायसायक्लाझोल (1 ग्रा/लि) + कार्बोसल्फान (2 मिली/लि)
तीसरा	रोपाई के 60 दिन बाद	हेक्ज़ाकोनाज़ोल (1 मिली/लि) + प्रोफेनोफॉस (1 मिली/लि)

कटाई एवं भण्डारण : प्याज की कटाई उपरान्त विधियों पर प्याज भण्डारण निर्भर करता है। खेत में 50 प्रतिशत गर्दन गिरावट दिखने के बाद ही प्याज की कटाई करनी चाहिए। जमीन से प्याज निकालते समय प्याज को चोट (क्षति) न

पहुँचे ये ध्यान में रखना जरूरी है। भण्डारण में होने वाली सड़न रोकने के लिए प्याज निकालने से 15–20 दिन पूर्व कार्बान्डाजिम 0.2% (2 ग्राम/ली) + स्ट्रेप्टोसायक्लीन (0.1 ग्रा/ली) का छिड़काव करना चाहिए। प्याज निकालने के बाद उसे खेत में 3–4 दिन पत्तियों समेत सुखाना चाहिए। प्याज को लम्बी डंडियों (2–3 सेमी) के साथ काटना चाहिए। फिर मोटी गर्दन तथा दुफाड़ प्याज छाँटकर निकालना चाहिए एवं अच्छे प्याज को छाया में 15–20 दिन सुखाने के बाद ही भण्डारगृह में रखना चाहिए। प्याज भण्डारगृह सतह हवादार, स्वच्छ एवं सूखी जगह पर होना चाहिए। प्याज भण्डारण के लिए अन्य सब्जियों की तुलना में अधिक तापमान (25–30° सं.) एवं कम सापेक्ष आर्द्रता (60–70 प्रतिशत) आवश्यक होती है। भण्डारगृह में सूरज की रोशनी आने से प्याज का रंग हरा होता है एवं उसकी गुणवत्ता कम हो जाती है इसलिए सावधानी रखनी चाहिए। डेढ़–दो महीने बाद भण्डारगृह के प्याज को हिलाना/पलटना चाहिए एवं अंकुरित और सड़े प्याज को छाँटकर अलग करना चाहिए। बीच–बीच में प्याज के भण्डारगृह में नीचे से गंधक का धुआँ देना लाभदायक होता है। इस प्रकार प्याज को अधिक अवधि के लिए अच्छी हालत में भण्डारित करके रख सकते हैं और अच्छा भाव मिलने पर आवश्यकतानुसार बाजार में बेच कर अधिक लाभ उठा सकते हैं।

इस तरह से प्याज की उन्नत तकनीकी अपनाकर हम प्याज उत्पादकता को निश्चित रूप से बढ़ावा दे सकते हैं।

राष्ट्रभाषा की चेतना जगाएँ

संस्कृति तब तक गूँगी रहती है, जब तक राष्ट्र की अपनी वाणी नहीं होती, राष्ट्रभाषा नहीं होती। राजनीतिक पराधीनता की हमारी हथकड़ी–बेड़ी जरूर कटी है, किन्तु अंग्रेजी और अंग्रजियत के रूप में हमारे मनोजगत में जो दासता के चिन्ह विद्यमान है, उन्होंने हमें निष्क्रिय बना रखा है। भाषा परिधान–मात्र नहीं, राष्ट्र का व्यक्तित्व है। हमारे बहुभाषी देश के ही समान रूस भी बहुभाषी देश है, जिसमें 42 भाषायें बोली जाती हैं, किन्तु उनकी राष्ट्रभाषा रूसी है। हमारी संस्कृति के गोमुख से निकली हुई सब भारतीय भाषायें हमारी हैं, किन्तु उनमें अपनी व्यापकता, आरम्भ से ही जन–विद्रोह और जन–संघर्ष को वाणी देते रहने के कारण एवं जीवन के हर क्षेत्र को सँभालने में समर्थ होने के कारण हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है। केवल संविधान में लिख देने मात्र से यह बात पूरी नहीं हो पाती, इसे राष्ट्र के जीवन में प्रतिष्ठित करना होगा, अन्यथा स्वतंत्रता का क्या मूल्य है? विश्व–चेतना जगाने के पहले अपने देश में राष्ट्रभाषा की चेतना जगाएँ।

– महादेवी वर्मा

युवक और युवतियाँ अंग्रेजी और दुनियाँ की दूसरी भाषाऐं खूब पढ़े और जरुर पढ़ें लेकिन उनसे मैं आशा करुँगा कि वे अपने ज्ञान का प्रसाद भारत को और सारे संसार को उसी तरह प्रदान करें जैसे बोस, राय और स्वयं कवि रवीन्द्रनाथ ने प्रदान किया है। मगर मैं हरगिज यह नहीं चाहूंगा कि कोई भी हिन्दुस्तानी अपनी मातृभाषा को भूल जाए या उसकी उपेक्षा करे या उसे देखकर शरमाए अथवा यह महसूस करे कि अपनी मातृभाषा के जरिए वह ऊँचे–से–ऊँचे चिन्तन नहीं कर सकता।

– महात्मा गाँधी

किसानों के लिए 'अदरक' एक लाभदायक खेती

रामचंद्र सलामे, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी
सुशिल मावळे, एस.आर.एफ.
सुश्री पायल वाघाय, कुशल कार्मिक
भा.कृ.अनु.प.–के.क.अनु.सं., नागपुर

अदरक : उद्भव एवं विकास



अदरक की उत्पत्ति दक्षिण पूर्वी एशिया भारत या चीन में हुई है। भारत से व्यापार के माध्यम से अदरक पहली शताब्दी में भूमध्यसागरीय क्षेत्र में पहुँची। पुर्तगालियों व्दारा इसको पश्चिमी आफ्रिका में पहुँचाया गया और उसका उत्पादन महत्वपूर्ण फसल के रूप में होने लगा। अदरक से सोंठ पाउडर, पेय पदार्थ, तेल, जिंजरी नए ओलियोजिन प्राप्त किया जाता है।

गुण : अदरक से बनी कई देशी दवाईयाँ जो मुख्यतः सर्दी–जुखाम व पेट संबंधी रोगों के लिये दी जाती है। अदरक छिल्का सुखाकर जल विहीन करके सूखी अदरक बनती है। अदरक का उपयोग मसाला, पेय पदार्थ बनाने में किया जाता है।

जड़ तना एवं पत्ती : अदरक की फसल में बीज नहीं बनते, बीज के लिए एक या दो आखों वाले प्रकंद बीज के रूप में उपयोग करते है।

जलवायु : अदरक की खेती गर्म एवं नम आर्द्र जलवायु वाले क्षेत्रों में सिंचित एवं असिंचित दोनों अवस्थाओं में की जा सकती है। अगर असिंचित अवस्था हो तो उत्पादन एवं उसकी खुदाई समय से पहले करनी पड़ती है। इसके लिए 30–32 डिग्री तापमान एवं 80 आपेक्षित आर्द्रता उपयुक्त होती है।

भूमि एवं तैयारी : जिवांश युक्त 6.50 से 7.50 पी एच समुचित जल निकास वाली दोमट मृदा। खेत की तैयारी दो बार मिट्टी पलटने वाले हल से की जा सकती है।

उन्नत किस्मे :

किस्में	अवधि(दिवस)	उत्पादन / टन / हे
सुरभी	225	20–21
सुप्रभा	225	23–25
सुरूची	220	20–22

बुआई / रोपण तकनीक

अच्छे उत्पादन के लिए असिंचित खेती की बुआई जून–जुलाई और सिंचित फसल की बुआई मई–जून माह में करें। क्यारी एवं समतल विधि में प्रति क्विंटल 22–25 बीज की आवश्यकता होती है, जब कि मेढ़ विधि में 15–18 किलो बीज लगता है।

रोपन सामग्री – रोपण के लिए प्रकंद (राइजोम)

प्रकंद 15–20 ग्राम और लंबाई 2.50–5.00 सेमी प्रत्येक प्रकंद में दो–तीन सुविकसित कलियाँ होनी चाहिए बुवाई के पहिले उपयुक्त आकार एवं वजन के अनुरूप फिर इन प्रकंदों को टुकड़ों में तोड़ लिया जाये फिर इन प्रकंदो को मेटालेक्सिल मैकोजेब 1.25 ग्रा / ली पानी में 15–20 मिनिट और बाद में 15–20 मिनट डुबाने के बाद छाया में सुखाकर उपयोग करें।

खाद एवं प्रबंधक गोबर (कम्पोस्ट खाद) 20–25 टन / हे.

नीम खली 1 टन / हे. 100–200एन, 100पी, 1200 के मात्रा में डाले।

सिंचाई मात्रा : अद्रकी खेती में 1300–1500 एमएम पानी लगता है। अक्टूबर एवं दिसंबर में पानी 15 दिन के अंतराल



में सिचाई करें। अच्छे अंकुरण हेतु बीज बोने के बाद तुरन्त सिंचाई करें। फसल की खुदाई करने के 15 दिन पूर्व सिंचाई बंद कर देना जरूरी है।

खुदाई : पौंधों की तना एवं पत्तियाँ जब पीली पड़ जायें और पत्तियां सूखने लगें तो समझना चाहिए की फसल खुदाई के योग्य हो गई है। बाजार मांग एवं बीज उत्पादन की दृष्टि से परिवक्व फसल की खुदाई होनी चाहीए।

अदरक उत्पादन में सहायक बातें

1. उचित फसल चक्र अपनाना खेती की सफलता के लिए जरूरी है।
2. स्वस्थ रोग एवं कीट रहित प्रकंद का उपयोग करें।
3. बोने के समय ध्यान रखें कि बीज के नीचे एवं ऊपर गोबर/कंम्पोस्ट खाद अवश्य रखें।
4. बुआई के समय नायट्रोजन उर्वरक डालना आवश्यक है।
5. बुआई में देरी नहीं करनी चाहिए।

उर्वशी

"कितना विलक्षण न्याय है !
कोइ न पास उपाय है !
अवलंब है सबको, मगर, नारी बहुत असहाय है।
दु:ख-दर्द जतलाओ नहीं,
मन की व्यथा गाओ नहीं
नारी ! उठे जो हूक मन में, जीभ पर लाओं नहीं !
तब भी मरूत अनुकूल हों,
मुझको मिलें, जो शुल हों,
प्रियतम जहाँ भी हों, बिछे सर्वत्र पथ में फूल हों"

– रामधारीसिंह दिनकर

जैविक खाद एवं उनके उपयोग

डॉ. उल्हास नंदनकर
वरिष्ठ प्रक्षेत्र अधीक्षक
भा.कृ.अनु.प.–के.क.अनु.सं., नागपुर

मयूर कुमार आर. मेश्राम
प्रक्षेत्र प्रबंधक
भा.कृ.अनु.प.–के.क.अनु.सं., नागपुर

जैविक खाद क्या है ?

जैविक उर्वरक को सूक्ष्म जीवों की जीवित कोशिकाओं को किसी वाहक में मिश्रित कर के बनाया जाता है तथा जिन्हें मृदा या बीज के साथ मिला देने पर यह जैविक खाद पौधों के लिए वायु मण्डलीय नत्रजन को भूमि में स्थिर करती हैं अथवा अघुलनशील स्फुर उर्वरक पदार्थों को घुलनशील फास्फोरस में परिवर्तित करती है। भूमि में पड़े पादप अवशेष सड़न क्रिया को बढ़ाते है जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति एवं फसल उत्पादन क्षमता बढ़ती है।

जैविक उर्वरकों की उपयोगिता

1. जैविक उर्वरक प्रदूषण मुक्त होते हैं।
2. ये अन्य उर्वरकों की तुलना में कम से कम कीमत पर पोषक तत्व प्रदान करते हैं।
3. ये वायुमंडलीय नत्रजन को स्थिर करके पौधे को उपलब्ध करने की क्षमता रखते हैं।
4. भूमि की संरचना एवं रचना को अच्छा बनाते है।
5. जैविक उर्वरक भूमि से पैदा होने वाले रोगों को कम अथवा नियंत्रित करते हैं।
6. इनका प्रभाव काफी दिनों तक रहता है और इससे पौधे, निरोगी और मजबूत बनते हैं।
7. इनके प्रयोग से औसतन 10–12 प्रतिशत फसल की उत्पादन में वृद्धि होती है।
8. इनसे पौधे को वृद्धि हार्मोन्स, विटामिन्स आदि भी प्राप्त होते है।
9. जैविक उर्वरक – रासायनिक उर्वरक के प्रयोग के अनुपूरक हैं।
10. शुष्क भूमियों में जैविक उर्वरक अन्य उर्वरकों की तुलना में सबसे अधिक लाभकारी सिद्ध हुए है।

जैविक उर्वरकों के नाम

1. राइजोबियम कल्चर
2. एजोटोबैक्टर
3. पी.एस.बी. कल्चर

जैविक उर्वरक उपयोग करने की विधियाँ

जैविक उर्वरकों को मुख्यतः तीन विधियों से प्रयोग किया जाता है

अ. बीजोपचार द्वारा : इस विधि में सबसे पहले 25 ग्राम गुड़ को आधा लीटर पानी में घोल लेते हैं। इस घोल को 25 मिनिट तक उबालकर ठंडा कर लें। जीवाणु उर्वरक के एक पैकेट 200 ग्राम को ठंडे किये गये गुड़ के घोल में अच्छी तरह मिला लें। इस घोल को एक एकड़ में बोये जाने वाले बीज में हल्के हाथों से मिलाकर छाया में सुखा लें, उसके तुरंत बाद बीज की बुवाई करें।

ब. मृदा उपचार : मृदा उपचार के लिए जैविक उर्वरक की 2–3 कि.ग्रा. मात्रा 50 किलो छने हुए कम्पोस्ट या भुरभुरी मिट्टी में मिलाकर बुवाई के समय या 24 घंटे पूर्व एक एकड़ में भुरकें।

स. पौध जड़ उपचार : पौध जड़ उपचार उन फसलों के लिए उपयुक्त है जहाँ पौधों को रोपा जाता है। यह उपचार दो अवस्थाओं में किया जाता है।

1. नर्सरी लगाते समय बीज को पानी से हल्का नम करें उसमें एक पैकेट कल्चर डालकर एवं अच्छी तरह मिलाकर बुवाई कर दें।

2. रोप लगाते समय 4 पैकेट कल्चर लगभग 15 लीटर पानी में घोल बनाकर पौधों की जड़ों को इस घोल में 20–30 मिनिट तक डुबाने के बाद रोपाई करना चाहिए।

द. नील हरि शैवाल को 4 किलो प्रति एकड़ की दर से धान की रोपाई के एक सप्ताह बाद छिड़काव करना चाहिए।

व. खड़ी फसल में जैविक उर्वरक देने की विधि :

खड़ी फसल में जैविक उर्वरक देने की विधि करने के लिए पहले मिश्रण तैयार करें, मिश्रण बनाने की विधि निम्नानुसार हैं :

क्रमांक	मिश्रण बनाने हेतु समाग्री	मात्रा प्रति एकड़ की दर से	मात्रा प्रति हेक्टेयर
1.	गोबर खाद	20 किलोग्राम	50 किलोग्राम
2.	राइजोबियम	0.6 किलोग्राम	1.5 किलोग्राम
3.	एजोटोबैक्टर	0.5 किलोग्राम	1 किलोग्राम
4.	पी.एस.बी. कल्चर	1–1.5 किलोग्राम	3 किलोग्राम

जैविक उर्वरक उपयोग करते समय ध्यान देने योग्य बातें

1. शुष्क एवं अति शुष्क क्षेत्रों में अधिक तापमान की स्थिति में जीवाणु नष्ट हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में खड़ी फसल में उपयोग करना अधिक लाभदायक है।
2. कई बीजों के सुरक्षा हेतु बीज का कवच फिनोल का रहता है जो कि जीवाणुओं की सक्रियता को प्रभावित करता है। ऐसी स्थिति में जीवाणु खाद खड़ी फसल में उपयोग करना चाहिए।
3. बीजों को रोगों से बचाव के लिए फफूंदीनाशक दवा से उपचारित किया जाता है। अतः उपचारित बीज के साथ जीवाणु खाद की सक्रियता नष्ट हो जाती है। अतः खड़ी फसल में जीवाणु खाद उपयोग करने से सक्रियता एवं उपयोगिता बढ़ती है।
4. पतले छिलके वाले बीज जैसे मूंगफली आदि को जीवाणु खाद से उपचारित करने से उनका छिलका उतर जाता है। जिससे अंकुरण क्षमता प्रभावित होती है। ऐसी स्थिति में खड़ी फसल में जीवाणु खाद उपयोग करना लाभप्रद है।
5. राइजोबियम कल्चर को पैकेट पर लिखी हुई फसल के लिए ही इस्तमाल करें।
6. कल्चर को आग और धूप से दूर रखें।
7. कल्चर के पैकेट पर लिखी अंतिम तारीख से पहले उपयोग कर लें।
8. पैकेट को उस समय खोलें, जब उपयोग करना हो और इतना ही बीज उपचारित करें जितना एक बार में बोया जा सकें। उपचारित बीज को जल्द से जल्द बोने का प्रयास करें।
9. कभी भी गर्म घोल में राइजोबियम कल्चर अथवा बीज को न डालें। घोल के ठंडा होने पर ही उसमें कल्चर और बीज को डालें।
10. कल्चर को उपयोग से पहले किसी ठंडे या छायादार स्थान पर रखें परंतु रेफरीजरेटर में रखने की आवश्यकता नहीं है। इसे कमरे के तापमान पर गर्मी और सर्दी दोनों प्रकार के मौसम में 6 माह तक रखा जा सकता है।

विभिन्न फसलों के लिए जैविक उर्वरकों की मात्रा एवं प्रयोग विधि

क्र.	फसल	जैविक उर्वरक	मात्रा कि.ग्रा. प्रति एकड़	प्रयोग विधि	प्रयोग का समय
1.	दालें जैसे उड़द, मटर, अरहर, चना, मूंग, मसूर	राइजोबियम पी.एस.बी.	150–250ग्राम 0.5–0.8कि.ग्रा.	बीज उपचार बीज उपचार	बुआई के समय

क्र.	फसल	जैविक उर्वरक	मात्रा कि.ग्रा. प्रति एकड़	प्रयोग विधि	प्रयोग का समय
2.	सोयाबीन, मूंगफली, सेम	राइजोबियम पी.एस.बी.	0.5–0.8कि.ग्रा. 0.5–0.8कि.ग्रा.	बीज उपचार	बोवाई के समय
3.	चरा जैसे बरसीम, ग्वार, मेथी	राइजोबियम पी.एस.बी.	0.5–0.8कि.ग्रा. 0.5–0.8कि.ग्रा.	बीज उपचार	बोवाई के समय
4.	अनाज फसलें जैसे गेहूँ, जौ, ज्वार, बाजरा, मक्का, धान	एजोटोबैक्टर पी.एस.बी. एजोटोबैक्टर	0.5–0.8कि.ग्रा. 0.5–0.8कि.ग्रा. 0.8–1.2कि.ग्रा.	बीज उपचार बीज उपचार	बोवाई के समय बोवाई के समय
5.	तिलहन जैसे सरसों, तिल, सूर्यमुखी	एजोटोबैक्टर एजोटोबैक्टर पी.एस.बी.	80–100 ग्राम 200–300ग्राम 0.5–0.8कि.ग्रा.	बीज उपचार बीज उपचार	बोवाई के समय बोवाई के समय
6.	नकदी फसलें जैसे 1. कपास 2. जूट 3. गन्ना 4. तम्बाकू	1. एजोटोबैक्टर 2. एजोटोबैक्टर 3. एजोटोबैक्टर 4. एजोटोबैक्टर पी.एस.बी.	250–400ग्र. 300–400ग्रा. 1.5–2 किग्रा. 1–1.5 किग्रा. 0.5–1 किग्री.	बीज उपचार बीज उपचार मृदा उपचार पौध उपचार	बोवाई समय बोवाई समय पौधरोपण समय पौधरोपण समय
7.	सब्जियाँ 1. आलू 2. गोभी,टमाटर,प्याज बैंगन, मिर्च 3. भिण्डी,मूली 4. गाजर,शलजम, परवल,	1. एजोटोबैक्टर 2. एजोटोबैक्टर 3. एजोटोबैक्टर 4. एजोटोबैक्टर पी.एस.बी.	1.5–2.5किग्रा 0.5–1.0किग्रा 150–250ग्रा. 100 ग्रा. 0.5–1.0 किग्रा.	मृदा/कंद उपचार पौध उपचार बीजोपचार बीजोपचार	बोवाई समय पौधरोपण समय बोवाई समय बोबाई समय

कोई प्यासा मर जाता है, कोई प्यासा जी लेता है।
कोई परे मरण-जीवन से, कड़वा प्रत्यय पी लेता हे।
- अज्ञेय

खाद्यान्न उत्पादन एवं संरक्षण के लिए विकिरण का प्रयोग

आराधना कुमारी
कृषि महाविद्यालय जवाहरलाल नेहरु कृषि विश्वविद्यालय गंज बासोंद

महेश कुमार
भाकृअनुप–राष्ट्रीय अजैविक स्ट्रस प्रबंधन संस्थान, माळेगाव, बारामती, पुणे

भारत अनाज, फल और सब्जियों के उत्पादन में अग्रणी है। एफ.ए.ओ. के अनुमान के अनुसार कटाई के बाद सभी प्रकार के खाद्य उत्पादन का 25% कीट, रोग, यांत्रिक चोट और खराब भंडारण के कारण नष्ट हो जाता है। इन विभिन्न नुकसानों में, लगभग 25–40% का फलों और सब्जियों के उत्पादन में नुकसान कटाई उपरांत खराब रखरखाव /प्रबंधन के कारण होती है। भंडारण की गुणवत्ता बढाने के लिए सुरक्षित तरीकों में उपयुक्त रसायनों का प्रयोग और उनमें से कुछ के प्रतिस्थापन भौतिक उपचार का उचित उपयोग शामिल है।

हालांकि, वैज्ञानिक, कृषक समुदाय और उपभोक्ता संरक्षण के लिए रसायनों के उपयोग के पक्ष में बहुत नहीं है और इन रसायनों का उपयोग बाद में प्रतिबंधित किया गया, जैसे मिथाइल ब्रोमाइड, मॉलिक हाइड्राजाईड आदि। फसल कटाई के बाद नुकसान को कम करने के लिए एक अन्य विधि कोल्ड स्टोरेज का इस्तेमाल है, लेकिन इसमें वांछित कम तापमान बनाए रखने के लिए उच्च उर्जा की आवश्यकता होती है। बिजली की कमी काफी आम है, अतः कोल्ड स्टोरेज की भारी उर्जा की माँग ग्रामीण भारत में वास्तविक स्थिति के अनुरुप नहीं है और गरीब किसानों के लिए आर्थिक रुप से व्यवहार्य विकल्प नहीं है। ऐसी परिस्थितियों में फसल कटाई के बाद विकिरण के माध्यम से सामान्य तापमान पर खाद्य संरक्षण और उत्पादन, भंडारण की अवधि के विस्तार के लिए विश्वसनीयता हासिल कर रहा है।

विकिरण (आयोनाइजिंग और गैर आयोनाइजिंग) ऊर्जा का प्रयोग कृषि के विभिन्न क्षेत्रों में अपार क्षमता प्रस्तुत करते है। विकिरण ऊर्जा में उच्च ऊर्जा वाली गामा किरण, एक्स – रे और त्वरित इलेक्ट्रॉन शामिल हैं। आयनीकरण विकिरण का इस्तेमाल आमतौर पर कुछ कृषि उत्पादों को जिवाणुरहित बनाने के लिए ताकि निर्यात और आयात के दौरान उनकी भंडारण की अवधि को बढ़ाया जा सकें एवं रोगाणुओं के प्रसार को कम किया जा सकें। गामा किरण इलेक्ट्रोमैग्नेटिक विकिरण का सबसे उर्जावान रुप है, जिसमें लगभग 10 किलो इलेक्ट्रॉन वोल्ट से लेकर कई सौ किलो इलेक्ट्रॉन वोल्ट उर्जा होती हैं। इसलिए, ये अन्य प्रकार के विकिरणों जैसे अल्फा और बीटा किरणों की तुलना में अधिक भेदक होते हैं। अतः गामा विकिरण शारीरिक कार्यिकी के परिवर्तन के लिए उपयोगी हो सकता हैं। गामा किरणों का जैविक प्रभाव कोशिका में परमाणुओं या अणुओं के साथ परस्पर किया कर (विशेष रुप से पानी के साथ) मुक्त कणों के उत्पादन पर आधारित है। इन प्रभावों में पादप कोशिकीय संरचना और चयापचय क्रियाओं में परिवर्तन शामिल हैं। जैसे, थायलकायड झिल्ली का फैलाव, प्रकाश संश्लेषण में परिवर्तन, विरोधी ऑक्सीडेटिव प्रणाली का नियमन, और फिनोलिक यौगिकों का संचय।

उच्च तीव्रता वाले गामा किरण अपचयिक शर्करा और स्टार्च सामग्री की गुणवत्ता को प्रभावित करते है। इसके अलावा कार्बनिक रंगद्रव्य जैसे कैरोटीनोइड्स जो पौधों के क्लोरोप्लास्ट में प्राकृतिक रुप से पाए जाते हैं और प्रकाश संश्लेषण के लिए उपयोग में आने वाले प्रकाश ऊर्जा को अवशोषित करती है और प्रकाश द्वारा विनाश से क्लोरोफिल की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार हैं, अतः इस प्रकार चयापचय कार्यों से जुड़ा हुआ है। ये कण पादप कोशिकाओं

के महत्वपूर्ण घटकों और विभिन्न आकृति, शरीर रचना, जैव रसायन और पौधों के शरीर क्रिया को नुकसान या संशोधित कर सकते हैं जो विकिरण खुराक पर निर्भर करता है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, खाद्य विकीरण को विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लू.एच.ओ.), वाशिंग्टन डीसी, खाद्य और कृषि संगठन (एफ.ए.ओ.), रोम और वियन्नाना में अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी द्वारा एक सुरक्षित और प्रभावी प्रौद्योगिकी माना गया है। गामा विकीरण का इस्तेमाल आलू अंकुरण को नियंत्रित करने, अनाज में कीटों को मारने, सामग्री को संशोधित करने, भौतिक एवं रसायनिक परिवर्तन लाने और भोजन के संवेदनशीलता में परिवर्तन लाने के लिए किया जाता है। इसमें भोजन को या तो पैक या थोक में विकीरण करना शामिल है ताकि एक निश्चित समय के लिए सावधानी से विकिरण को नियंत्रित कर वांछित उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकें. खाद्य विकीरण भौतिक रसायनिक परिवर्तन का कारण बनता है जो चयापचय घटना के साथ हस्तक्षेप करता है जिससे गुणवत्ता और सुरक्षा में कोई समझौता किए बिना ही फसल की कटाई उपरान्त संरक्षण और उत्पाद की भंडारण की अवधि को बढ़ाया जा सकता है।

वर्तमान परिदृश्य में जहाँ बच्चों में कुपोषण बहुत प्रचलित है, तब मात्रा के साथ ही उत्पाद की गुणवत्ता में सुधार लाना सर्वोच्च महत्व की बात है। अतः विश्व भर में अधिकांश विकसित देशों में विकीरण और आइसोटोप का प्रयोग मानव जाति के लाभ के लिए जीवन का एक रास्ता बन गया है। यहाँ तक भारत जैसे विकासशील देशों में भी पिछले कुछ दशकों में परमाणु तकनीक का उपयोग कृषि, रक्षा तथा बिजली उत्पादन के क्षेत्र में बढ़ा है तथापि, विकीरण के प्रयोग की प्रभावशीलता खुराक पर निर्भर होती है।

कम खुराक (< 1 kGy) अनाज और फल में कीड़े का नियंत्रण, कुछ फल / सब्जियों के पकने में देरी तथा कंद में अंकुरण को बाधित करता है। जबकि उच्च खुराक(> 10 kGy) मसालों में सूक्ष्मजीवों और कीडों को मारता है और खाद्य पदार्थों को जीवाणुरहित बनता है। भौतिक उर्जा आर्थिक उत्पादो की मात्रा और गुणवत्ता को प्रभावित कर सकते हैं। यह पादप बीजों की अंकुरण शक्ति और अनाज की उपज में सुधार के लिए उपयोगी हो सकता है। पादप के उन्नति में, बीजों का विकीरण आनुवांशिक परिवर्तनशीलता उत्पन्न करता है जो पादप प्रजनकों को अच्छे विशेषताओं जैसे बीजों का पौधों में न जमना लवणता सहिष्णुता, अनाज की उपज और गुणवत्ता में सुधार वाले नए जीनोटाइप को चयन करने में सक्षम बनाता हैं।

गामा विकीरण पोषक तत्वों के भौतिक तथा रसायनिक गुणों को बदलने की क्षमता रखता है तथा 0.5 से 5 मिलियन रेडिएशन खुराक में गेहूं की भूसी से प्रोटीन और फास्फोरस के बेहतर उपयोग करने की क्षमता को बढ़ाता है। गेहूँ में विकिरण की बहुत कम मात्रा से अंकुरण बढ़ता है और खेतों में पौधों के समरुप प्रदर्शन क्षमता को बढ़ाता है। इस प्रकार हम सुझाव दे सकते है कि कम खुराक गामा विकीरण निश्चित तौर पर आनुवांशिक स्तर की तुलना में कार्यिकी प्रभाव डालती है। कम खुराक गामा विकीरण (0.01-0.10 kGy) से उपचारित बीज पौधे की ऊँचाई कम करने, पादप शक्ति में सुधार लाने, सबसे उपर के पूर्ण रूपित विकसित पत्ती (फ्लैग पत्ती) के क्षेत्रफल को बढ़ाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

गामा विकीरण जड़ निकलने की विशेषताओं को बदल देती है और इस तरह खनिज पोषक तत्वों के अधिग्रहण को भी बदल देती है। यह संभावना है कि गामा विकीरण की कम खुराक इनपुट उपयोग दक्षता को अनुकूल रूप से प्रभावित करती है। गामा विकीरण के उपचार से सेम के पोषक तत्वों की गुणवत्ता में सुधार की सूचना मिली है। भिंडी की वृध्दि और विकास के लिए 0-15 kGy के गामा विकीरण के प्रयोग से महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव की सूचना मिली है। फल और सब्जियों के लिए रसायनों के उपयोग को कम करने की मजबूत इच्छा और गैर अवशिष्ट सुविधा के कारण विकीरण एक महत्वपूर्ण सुविधा बन गई है।

इस प्रकार हम विकीरण ऊर्जा का प्रयोग फसल उत्पादन को बढ़ाने तथा उत्पाद संरक्षण के लिए करके देश के वे लोग जो भूखे सो जाते हैं उनके लिए भी भोजन की उपलब्धता को सुनिश्चित कर मानवता को एक सार्थक दिशा दे सकता है।

मानवीय समस्याओं का समाधान : महामृत्युंजय मंत्र

डॉ. रामरत्न गुप्ता 'आर्य',
सेवानिवृत्त विषय विशेषज्ञ (फसल सुरक्षा)
कृषि विज्ञान केन्द्र
भा.कृ.अनु.प.–के.क.अनु.सं., नागपुर

महामृत्युंजय मंत्र

ओ३म् त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुश्टि वर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात ।।

यजुर्वेद अ. ३-६०

महामृत्युंजय मंत्र यजुर्वेद के अध्याय 3–60 एवं ऋग्वेद 7–59–12 का मंत्र है। बहुत से व्यक्तियों की धारणा है कि इस मंत्र का जप करने/कराने से मनुष्य को मुक्ति मिलेगी अथवा मृत्यु के भय से मुक्ति मिलेगी। इसलिए मरणासन्न व्यक्ति के सामने इस मंत्र का जप कराया जाता है। व्यक्ति के मरने के बाद भी परिवार के सदस्य इस मंत्र का जप कराते हैं। तांत्रिक लोग तांत्रिक साधना/सिध्दी के लिए इस मंत्र का विभिन्न ताम–झाम के साथ जप करते हैं।

"मंत्र" का अर्थ विचार है और विचार तभी सार्थक होता है जब उसके आशय/संदेश को व्यक्तिगत रूप से आत्मसात किया जाए और जन–जन के कल्याण के लिए और सामाजिक, राष्ट्रीय व्यवस्था में भी समाहित किया जाए। अतः इस मंत्र के विचार/संदेश को आत्मसात करने पर मृत्यु से नहीं अपितु मृत्यु के भय से अवश्य मुक्ति मिलती है। यहाँ इस लेख का उद्देश्य इस मंत्र के संदेश को पाठकों के समक्ष रखना है।

वैदिक काल में कोई संप्रदाय/मजहब़/पंथ/जाति नहीं थे। वैदिक शिक्षाएँ मानवमात्र ही नहीं प्राणिमात्र के लिए भी हैं। वेदों में मानव, मानवेतर प्राणी एवं पर्यावरण हितैषी शिक्षाएँ हैं। अतः वेदों को आज की जातिवादी, मजहबी, नस्लवादी, मानसिकता के आधार पर समझना तर्कसंगत नहीं होगा।

हम यहाँ उपर्युक्त मंत्र को मानवीय समस्याओं के संदर्भ में देखेंगे। अधिकांश वेद मंत्रों के एक से अधिक अर्थ (सामाजिक/आध्यात्मिक/लौकिक, आदि) होते हैं। हम यहाँ इस मंत्र की व्याख्या व्यक्तिगत एवं सामाजिक कल्याण के दृष्टिकोण से देखेंगे।

इस मंत्र में खरबूजे की बेल का उदाहरण दिया गया है। यहाँ खरबूजे की बेल मनुष्य का परिवारिक/सामाजिक बंधन का प्रतीक है अर्थात मनुष्य इस बंधन से बँधा या जुड़ा हुआ है। खरबूजे की उपमा मनुष्य से दी गई है। खरबूजे की विशेषताओं को मनुष्य पर लागू करने से पहले, मानव व्यक्तित्व क्या है, इस पर हम नज़र डाल लेते हैं।

अब मूलभूत प्रश्न उठता है कि मनुष्य और मनुष्येतर प्राणियों के मध्य क्या अंतर है अर्थात मनुष्य अन्य सभी प्राणियों से अलग कैसे है? यानी मनुष्य को मनुष्येतर प्राणियों से अंतर बताने वाली मनुष्य की अपनी विशेषताएँ क्या हैं?

जो मनुष्य सिर्फ इंद्रियों (ज्ञानेंद्रियों + कर्मेंद्रियों) के स्तर पर जीवन जीते हैं वे मनुष्य होते हुए भी मनुष्येतर प्राणियों के समान ही है। ज्ञानेंद्रियों से ऊपर मन है। ज्ञानेंद्रियाँ मन के वशीभूत होकर कार्य करती हैं। मन भी सभी प्राणियों में नहीं होता है। उच्च विकसित प्राणियों में ही मन होता है। मन को बुध्दि नियंत्रित करती है। वेदों में बुध्दि के विकास के स्तरों के

अनुसार कई प्रकार की बुध्दियों का वर्णन आता है। इनमें साधारण स्वार्थ बुध्दि जो सिर्फ अपने बारे में ही सोचती है,

परमात्मा
↑
आत्मा(जीवात्मा)
↑
बुध्दि
ऋतंभरा
प्रज्ञा
सुमेधा
मेधा
साधारण स्वार्थ बुध्दि
↑
मन
↑
ज्ञानेंद्रियां
जीभ
त्वचा
नाक
कान
आँख

इसके अतिरिक्त मेधा, सुमेधा, प्रज्ञा, ऋतंभरा बुध्दि के नाम भी आते हैं। ऋतंभरा बुध्दि सर्वश्रेष्ठ बुध्दि का नाम है। ऋतंभरा के स्तर पर बुध्दि का विकास होने पर मनुष्य मानवीय कमजोरियों से ऊपर उठ जाता है। इनके अतिरिक्त सरस्वती और लक्ष्मी जैसे बुध्दि के नामों का वर्णन भी वेदों में आया है। बुध्दि के उत्तरोत्तर परिष्कृत होने के बाद हम आत्मविकास की ओर बढ़ जाते हैं। यानी राक्षसवृत्ति व पाश्विकवृत्ति (पशुवृत्ति) से ऊपर उठकर हम अपने आत्मविकास की ओर ले जाते हैं। आत्मविकास के स्तर पर विकसित विवेक, विचारशीलता, संकल्पशक्ति ही मनुष्य की अपनी विशेषता है जो उसे मानवेतर प्राणियों से अलग पहचान दिलाती है। अब खरबूजे की विशेषताओं की तुलना मनुष्य से करते हैं। खरबूजे में हम निम्न विशेषताएँ पाते हैं।

1. खरबूजा पकने पर स्वतः बेल के बंधन से अलग (मुक्त) हो जाता है। यदि कच्चे खरबूजे को उसकी बेल से तोड़ेंगे तो बेल को भी नुकसान होने की संभावना होती है। कच्चा खरबूजा उपयोगी भी नहीं होता। दूसरे शब्दों में कहें तो खरबूजे को बेल से स्वतः अलग होने के लिए उसका पकना आवश्यक है। अधूरा पका हुआ खरबूजा स्वतः बेल से अलग नहीं होता। इसी प्रकार मनुष्य बहुत सारी इच्छाओं को पाल कर रखता है। यहाँ तक कि उसकी इच्छाएँ इस विश्व व्यापार संगठन युग में ''हवस'' का रूप लेती जा रही हैं। इसके फलस्वरूप मनुष्य में बहुत सारी बुराईयाँ आ जाती हैं जो व्यक्ति और समाज की सुख–शांति के लिए बाधक है। काम (कामुकता) क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष, छल कपट, झूठ, अहंकार दूसरों का शोषण करना, आदि अनेकों बुराईयों के कचरे को मनुष्य अपने मस्तिष्क के सॉफ्टवेअर में ''सेव'' करके रखता है। यही कारण है कि कई दशकों तक प्रवचन सुनते रहने, पूजा–पाठ करने के बावजूद उसके व्यक्तित्व में गुणात्मक सुधार नहीं होता। हम अपने दिमाग से उपर्युक्त कचरा/गंदगी निकालने को तैयार नहीं हैं। इसलिए हम जीवनभर पक नहीं पाते और जीवन के अंतिम समय तक भी सांसारिक बंधनों में जकड़े रहते हैं। इस भोगवादी संस्कृति में तो इसे ही दुनियादारी कहकर इसका औचित्य सिध्द करते हैं। यानी हम पकना ही नहीं चाहते खरबूजे की तरह। मनुष्य के पकने का मतलब है अपनी मानवीय कमजोरियों से उपर उठते हुए अपनी बुध्दि को परिष्कृत करना इसके साथ ही हमारा आत्मविश्वास प्रारंभ हो जाता है, नैतिक बल बढ़ने लगता हैं और हम पकने लगते हैं।
2. खरबूजे की दूसरी विशेषता है कि पकने पर सुगंधित हो जाता है। यदि हम पके हुए खरबूजे को छिपाकर भी रखना चाहें तो दूर से ही उसकी सुगंध के कारण उसकी उपस्थिति का अहसास हो जाता है। अर्थात मनुष्य के भी पकने के बाद उसके व्यक्तित्व से मनुष्यता की सुगंध आने लगती है। उसके परिसर के सभी लोगों को मालूम पड़ जाता है कि यहाँ 'अमुक' भला आदमी रहता है।
3. खरबूजे की तीसरी विशेषता है कि पकने पर वह पौष्टिक हो जाता है। यह खाने वाले के स्वास्थ के लिए पोषक व लाभदायक बन जाता हैं। इसी प्रकार मनुष्य भी पकने के बाद समाज व राष्ट्र के लिए उपयोगी, लाभदायक बन जाता है। ऐसा व्यक्ति समाज व राष्ट्र को बल प्रदान करता है। पकने के बाद व्यक्ति के अंदर अपने लिए

मोह–लालच की भावना समाप्त होकर त्याग भाव से जीवन जीते हुए भी बंधन मुक्त रहता है अर्थात कर्तव्य भावना से जीवन जीते हुए ही बंधन मुक्त रहता है। इसी में मानवीय समस्याओं का समाधान निहित है। ऐसे व्यक्ति का जीवन समाज, राष्ट्र व पर्यावरण के लिए हितैषी हो जाता है।

विश्व के अधिकांश महापुरूषों ने मनुष्य को पकने के लिए कहा है। अब पुनः यह मूलभूत प्रश्न उठता है कि क्या हम पकना चाहते है खरबूजे की तरह। इसी प्रश्न के उत्तर में मानवीय समस्यायों का समाधान निहित है जो हमें अपने अंदर से ही मिलेगा।

मनुष्य व्यक्तिगत प्रयत्न द्वारा तथा सामाजिक और सरकारी स्तर पर ऐसी व्यवस्था बनाएँ जिससे सभी मनुष्यों का बौध्दिक व आत्मिक स्तर तक अधिकाधिक विकास हो सके। इसी में लोकतंत्र की सफलता होगी।

यही महामृत्युंजय मंत्र और वेदों का संदेश है । यह मानवीय समस्याओं के समाधान और समाज के अंतिम व्यक्ति के सुख–शांति का भी मूलमंत्र है।

भारत की फसलें

- **रबी की फसलें – ये जाड़े की फसलें हैं, जोकि अक्टूबर–नवम्बर में बोई जाती हैं और मार्च–अप्रैल में काटी जाती हैं, ये हैं – गेहूँ, जौ, चना तिलहन इत्यादि।**
- **खरीफ़ की फसलें – जून–जुलाई में बोई जाती हैं और अक्टूबर में काटी जाती हैं। ये हैं – मक्का, चावल, कपास, ज्वार, बाजरा इत्यादि।**
- **नकदी की फसलें – ये वे फसलें हैं, जो व्यापार के उद्देश्य से किसानों व्दारा उगाई जाती हैं, क्योंकि इनके माध्यम से किसान के पास सीधी मुद्रा आती है इसलिए इन्हें नकदी फसल कहते हैं। ये हैं – कपास, गन्ना, जूट, तम्बाकू, तिलहन इत्यादि।**

उच्च शिक्षा प्राप्त करने की प्रवेश यात्रा

डॉ. टी. आर. लोकनाथन
प्रधान वैज्ञानिक, फसल सुधार विभाग
भा.कृ.अनु.प.–के.क.अनु.सं., नागपुर

सन् 1981 की बात है, जब मुझे पादप प्रजनन के विषय उच्च शिक्षा के लिए आवेदन करने का समय आया। 3 अक्तूबर को मैंने तय किया कि निश्चित रूप से सफलता प्राप्त करने का प्रयास करूंगा। उन दिनों हरियाणा और पंजाब इन दोनो राज्यों में कृषि शोध एवं विकास में सफलता प्राप्त करने की चर्चा होती थी। मुझे करनाल के केन्द्रीय मृदा लवनता संस्थान सें 23 तारीख को पत्र मिला। मैं अपने पादप प्रजनन के विषय में ज्ञान प्राप्त करने के कार्य के लिए एकजुट हो गया। विषय क्रमांक में मुझे अधिक परिश्रम करना पड़ा।

मैंने अपनी यात्रा का प्रारंभ नागपुर से ग्वालियर के लिए किया। ग्वालियर में मेरे मौसाजी एवं मौसी के यहाँ दो दिन व्यतीत करने के बाद मैं ग्वालियर से करनाल के लिए रवाना हुआ। करनाल पहुँचा तो छोटा बस्ती रेल्वे स्टेशन दिखाई दिया। स्टेशन के बाहर कुली द्वारा अपना समान रिक्शा में रखवाया। रिक्शा छोटी थी। करनाल के राष्ट्रीय दुग्ध अनुसंधान केन्द्र एनडीआरआई पहुँचने पर एक अपनापन महसूस हुआ।

संस्थान के वैज्ञानिक गृह में दाखिल हुआ । अच्छे भोजन की सुविधा प्राप्त हुई। कुछ अंजान व्यक्ति मित्र बनें और ऐसा बिल्कुल ही महसूस नहीं हुआ कि मैं एक नये शहर में आया हुँ। हरियाणा की बोली भले ही खड़ी बोली है लेकिन यहाँ के लोग नर्म दिल एवं मिलनसार हैं। अलग अलग किस्म के रसीले पदार्थ एवं शुद्ध घी के बने हुए पकवान चखने का मजा आ गया।

राष्ट्रीय दुग्ध अनुसंधान केन्द्र एन.डी.आर.आई., करनाल यह भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का दुग्ध संबंधित अनुसंधान संस्थान है इसमें अलग अलग वर्गों में विशिष्ट एवं सर्वोत्तम शिक्षा दी जाती है। सी.एस.आर.आय. व्दारा मृदा, पादप प्रजनन विषयों में शिक्षा का प्रबंध रखा हुआ है। इस संस्थान की शिक्षा एवं खूबसूरत परिसर के नजारे ने मुझे आकर्षित किया। अच्छी तैयारी सें इंटरव्यू में दाखिल हुआ, कुछ अच्छे विद्यार्थी भी शामिल थें। इंटरव्यू में पादप प्रजनन के विषय एवं शोध के संबंध के काफी प्रश्न पूछे गए। मैं अपने कुछ किताबी ज्ञान से उत्तर देने में उत्तीर्ण हुआ। इस इंटरव्यू का निर्णय दो दिन बाद आया और मैं सफल हुआ। कुछ अधिक उम्र वाले विद्यार्थी से संपर्क हुआ तो कुछ अच्छे मित्र बने। इस सफलता का विशेष आनंद था। एक दूसरे की मदद करने में एक विशेष झलक दिखाई देती है। किसी भी प्रकार का विरोध लोगों में नहीं था। खुशी का माहौल था। करनाल की दवाएँ भी मशहूर है। भोजन की कोई कमी नहीं थी। इस शहर में एक पवित्र भूमि का रूप धारण किया। आज भी वह पवित्रता कायम है। यहाँ का उत्तम भोजन एवं निवासियों में प्रेम बरकरार है। सन् 1981 से हमारी शोध यात्रा प्रारंभ हुई तथा 1984 तक चली। अतः कुछ स्मरणीय अनुभव एवं विचार मेरे शोध जीवन में महत्वपूर्ण बन गए।

अखिल भारत के परस्पर व्यवहार के लिए ऐसी भाषा की आवश्यकता है, जिसे जनता का अधिकतम भाग पहले से जानता समझता है।

–महात्मा गाँधी

भारतीय कृषि अनुसंधान चयन मंडल परीक्षा में प्रवेश करने का रोचक अनुभव

डॉ. टी. आर. लोकनाथन
प्रधान वैज्ञानिक, फसल सुधार विभाग
भा.कृ.अनु.प.–के.क.अनु.सं., नागपुर

कृषि अनुसंधान की राष्ट्रीय स्तर की ए.आर.एस प्रमुख परीक्षा में गिनी जाती है। 24 जनवरी, 1984 की तारीख थी। अत्यंत ठंड का मौसम था। शीत लहर बरकरार थी। पंजाब राज्य के लुधियाना शहर जाने का अवसर मिला। शहर में सन्नाटा छाया हुआ था। संत बिंद्रावाले के नेतृत्व में पंजाब राज्य को देश से अलग करने का आंदोलन चल रहा था।

इस कारण कर्फ्यु लगा हुआ था। उस परिस्थिती में उस शहर में प्रवेश करना एक धैर्य की बात थी। उस समय में हरियाणा राज्य के करनाल शहर में भा.कृ.अनु.प–केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, में उच्च शिक्षा के लिये दाखिल हुआ। पादप प्रजनन विषय से संबंधित धान संकरित किस्मों का साधारण एवं बंजर जमीन में धान के रासायनिक गुणवत्ता में अंतर तथा परिणाम पर शोध चल रहे थे।

हमने जब इस परीक्षा के लिए आवेदन पत्र भरा, तो उस में लुधियाना शहर को अपना परीक्षा केंद्र चुन लिया। कारण यह था कि, पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना कृषि शिक्षण एवं शोध के लिए राष्ट्र भर में प्रसिद्ध था। छात्रों के लिए रहने की उत्तम व्यवस्था तथा स्वादिष्ट भोजन का प्रबंध किया गया था। पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना, का परिसर हराभरा था। गोल्फ, हॉकी, फुटबॉल के लिए उचित खेल मैदान बनाए गए थें। कई खेलों की मैदानी प्रतिस्पर्धाएँ आयोजित की जाती थी।

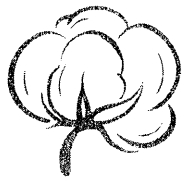
पुस्तकालय में कृषि संबंधित कई पुस्तकों का बड़ा संकलन था। विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं उन किताबों एवं शोध पत्रिकाओं को पढ़ने में व्यस्त रहते थे। हमें इस सुविधा से सहायता मिली। परीक्षा देने की इच्छा बनी रही। उत्तीर्ण होने की संभावना नजर आई।

मेरा एक व्यक्ति से संपर्क हुआ जिन्होंने रहने के लिए अपना कमरा मुझे दिया। पादप प्रजनन की कुछ किताबों को लाकर भी दिया। उस छात्रवास के भोजन कक्ष में पाँच दिन के लिए भोजन का प्रबंध रखा गया था। अतः कृषि अनुसंधान परीक्षा में चार पेपर भी सम्मिलित किए गये। सामान्य ज्ञान, निबंध, पादप प्रजनन एवं कोशिकानुवांशिक विज्ञान विषयों के प्रश्नपत्र थे। मैंने एक भी अतिरिक्त काग़ज नहीं लिया। तीन घंटे का पेपर दो घंटे में कर लिया। वहाँ के परीक्षक ये समझ बैठे कि मैं सफल हो जाउँगा। वहाँ के छात्रावास के लोगों की बोली एवं भोजन मुझे बहुत भाया। उन लोंगो के हँसतें हुये चेहरे, आत्मविश्वास भरा जीवन, ये सभी गुण मुझे सिखने को मिले, रोमांचक लोग तथा रोचक अनुभव ने मेरी सोच को एक नया मोड़ दिया।

इस हर्षोल्लास से भरी यात्रा ने मेरे आत्मविश्वास को बढ़ाया और एक अविस्मरणीय अनुभव मेरे जीवन में शामिल हुआ। एक वर्ष बीत जाने के बाद परीक्षा में सफलता पाकर मुझे वैज्ञानिक का पद प्राप्त हुआ। पंजाब राज्य के लुधियाना शहर के सिक्खों से नया रिश्ता जुड़ गया। आज पंजाब राज्य तरक्की के उच्च स्तर पर है।

मैंने अपनी इस यात्रा के दौरान ये समझा की, पंजाब, हरियाणा राज्य एवं करनाल शहर की प्रगति में वहाँ के लोगों के सकारात्मक दृष्टिकोण ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन गुणों का प्रभाव उनके निजी जीवन में भी दिखाई देता है।

हिंदी में काम करना अपने देश का गौरव बढ़ाना है।



मानिनी

डॉ. (श्रीमती) नंदिता महेन्द्रकुमार साहू
हिंदी अनुवादक
भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण, नागपुर

निधि ने खिड़की से झाँक कर बाहर देखा तो बारिश की हल्की बूँदो से भीगी धरा उसे अपनी ही तरह दुःखी लगी। उसे लगा जैसे लगातार एक सप्ताह की बारिश ने धरती के जीवन में भी रूकावट ला दी है। उसी प्रकार आकाश द्वारा चलाई आँधी ने भी निधि के जीवन को सावन आने पूर्व ही पतझड़ में बदल दिया है। वह दिन जब आकाश का रिश्ता उसे लिए आया था, पूरा परिवार यह सोचकर खुश था कि एक रईस परिवार से रिश्ता आया है। परंतु आकाश से दो ही मुलाकातों में निधि को समझ गया कि हम एक–दूसरे के लिए नहीं बने हैं। आकाश पहली बार उसे लेकर जब सगाई के बाद घूमने गया तो वह नशे में था और इस बात को लेकर उसे कोई शर्मिन्दिगी नहीं थी।

दूसरी बार शादी के पाँच दिन पहले वह आया और बाहर चलने को कहा। मम्मी ने समझाया कि शादी को सिर्फ पाँच दिन है लोग क्या कहेंगे? उसने मम्मी को झिड़ककर कहा क्या कर लेंगे लोग और शराब की गंध चारों और फैल गई। मजबूरन निधी को जाना पड़ा।

तालाब के किनारे बैठकर आकाश बोला "शादी के बाद तुम अपने घर पर ही रहना, मैं तुम से हर हफ्ते मिलने आ जाऊँगा।" यह सुनकर निधि अवाक हो गई। निधी बोली "ये कैसे हो सकता है?" शादी के बाद तो ससुराल ही घर होता है। आकाश बोला "मैं तुमसे इसी शर्त पर शादी करूँगा कि तुम अपने घर पर ही रहो, तुम्हारा सारा खर्चा भी मैं उठाऊँगा। महीने के पन्द्रह–बीस हजार मेरे लिए कोई मायने नहीं रखते।" निधि हैरान–परेशान घर पर पहुँची। आकाश के जाते ही वह फूट–फूट कर रोने लगी। उसने पिताजी–माँ के सामने आकाश द्वारा कहे गए एक–एक शब्द को दोहराया। पिताजी खामोश होकर दूसरे कमरे में चले गए।

दूसरे दिन सुबह निधि के जीवन में पिताजी के इन शब्दों ने उथल–पुथल मचा दी "यह शादी होगी, हमारे पास कोई और रास्ता नहीं है।" निधि जानती थी कि उनका कोई भाई नहीं है, वे लोग तीन बहने हैं। वह घर की मझली लड़की है। पिताजी सरकारी कार्यालय में लिपिक है। घर में आमदनी भले ही कम रही हो पर घर में पिताजी का दब–दबा है।

दीदी की शादी को पाँच साल हो चुके थे, बारहवीं पास करते ही उनकी शादी कर दी गई। आए दिन घर पर आकर जीजाजी के पियक्कड़पन और माली हालत ठीक न होने का रोना रोती थी। यही देखकर निधी ने अपनी पढ़ाई जारी रखी और एम.एस.डबलू. कर लिया था। परंतु पिताजी उसे नौकरी करने के पक्ष में नहीं थे। अतः घर बैठकर योग्य वर तलाशा जा रहा था, परंतु ऐसा वर। ऐसी अपेक्षा तो कोई अनपढ़, अबला स्त्री भी नहीं करती। ऊपर से पिताजी का यह फरमान।

निधि घुटने लगी, मन में आया आत्महत्या कर लूँ। माँ समझाने लगी। शादी के बाद सब ठीक हो जाएगा। तेरी शादी के बाद समृद्धि की शादी भी तो करनी है। शादी के कार्ड बँट गए हैं। लोगों को क्या मुँह दिखाएंगे? दीदी आई और कहने लगी "अरे इतना पैसे वाला लड़का है, लाखों की संपत्ति पर ऐश करना"। निधि सोचने लगी कि क्या पैसा ही सब कुछ है? सब अपना स्वार्थ साधने में लगे है। माँ को समृद्धि के विवाह की चिन्ता है, पिताजी को समाज में अपनी प्रतिष्ठा की चिंता है। क्या कोई उसके लिए चिन्तित नहीं है? कमरा बंदकर वह फूट–फूट कर रोने लगी। शाम को उसकी प्रिय सहेली शिखा आई। निधी की हालत देखकर वह हैरान होकर बोली "दो दिन बाद शादी है और यह क्या हालत बना रखी है, कुछ लेती क्यों नहीं? बोलकर वह जोर–जोर से

हँसने लगी। निधि उससे भाग कर लिपट गई और बेतहाशा रोने लगी। शिखा पूरी आप बीती सुनकर बोली "चल सामान बाँध, तू मेरे घर चल कर रहना" निधी बोली नहीं यह नहीं हो सकता। मेरी बली तो चढ़ने ही वाली है। शिखा उसे यह कह कर चली गई "मेरी जब भी जरूरत हो फोन कर देना, पर याद रख आज, कल दो ही दिन है तेरे पास?" पढ़ी–लिखी है जो तुझे सही लगे निर्णय ले, मैं हर मोड़ पर तेरा साथ दूँगी। रात कब दिन में बदली निधि को पता भी न चला परंतु उसके दिमाग में प्रकाश लेकर दिन निकला। अपने दो–तीन जोड़ी कपड़े और सारे सर्टिफिकेट लेकर वह घर से निकल गई और हॉस्टल पहुँची। जल्दी ही विद्या और निधि यवतमाल पहुँच गए।

यवतमाल में उसे अपने घर पर छोड़कर शिखा वापस चली गई। शिखा से ही निधी को अपने घर के सब सामाचार मिले। बारात नहीं आई, उसे बहुत ढूँढा गया, विद्या से पूछ–ताछ की गई परंतु फिर सब शांत हो गए। यहाँ निधी ने एक गैर–सरकारी संस्था के साथ आदिवासी स्त्रियों के लिए काम करना शुरू कर दिया। वेतन नियमित मिलने लगा तो शिखा के घर के पास ही एक कमरा ले लिया। अपनी छोटी सी गृहस्थी में एक ओर मेहमान शामिल हो गया वह थी सात साल की गहना एक आदिवासी लड़की जो अनाथ थी। पहले तो गहना उसे छोट–मोटे काम करती थी और बदले में कमरे में सोने की जगह और दो वक्त की रोटी पाती थी। साल भर में गहना पूरे घर पर अपना अधिकार जताने लगी। पास ही के एक स्कूल में उसका दाखिल कराकर निधि ने मानो चैन की साँस ली। नौकरी से आने के बाद गहना को पढ़ाना उसका सबसे महत्वपूर्ण कार्य हो गया। कभी–कभी घर की याद आती परंतु शिखा के मुँह से सुनी बाते उसे वहाँ न जाने की ही सलाह देती। सालों बीत गए। शिखा की शादी हुई, वह अपने पति साथ उससे मिलने भी आई। निधी को कभी भी अकेलापन महसूस नहीं होता था क्योंकि गहना थी उसके जीवन में खुशियाँ बिखेरने वाली।

सुबह से गहना विद्यालय जाने को तैयार बैठी थी आज दसवीं का परीक्षा फल आने वाला था। निधी ने कहा परिणाम तो तीन बजे नेट पर आएगा अभी से क्यों कूद रही हो। निधि नहाने चली गई। दरवाजे पर खड़ी गहना चिल्लाते हुए जल्दी बाहर आने को कह रही थी "लोग आए है आपसे मिलने" तैयार होकर वह ड्राईंग रूम में पहुँची तो हैरान हो गई। कुछ पत्रकार गहना से सवाल–जवाब कर रहे हैं, कैमरा लगा हुआ है। पत्रकार, निधी की और मुड़कर बोले "आपकी बेटी जिले में प्रथम आई है। आप कुछ कहिए।" निधि के पाँव जमीन पर नहीं पड़ रहे थे। दूसरे दिन सभी अखबार में निधि और गहना की फोटो छपी, सब जगह से बधाई संदेश आ रहे थे। तभी फोन की घंटी घन–घनाई। गहना ने फोन उठाया और कुछ बोलकर निधी को फोन दे दिया। निधि को रोने की आवाज सुनाई दी बेटा मुझे माफ कर दे, मैं तुझसे मिलना चाहता हूँ, तू हाँ बोलेगी तो ही आऊँगा। मैं तेरा गुनहगार हूँ। निधी अपने पिताजी की आवाज को इतने साल बाद भी पहचान गई, निधि ने कहा "घर आपका है आइये, सब आपके आशीर्वाद और ऊपर वाले की मेहरबानी है। निधि ने फोन रखा तो पास खड़ी गहना मुस्कुरा उठी। माँ नाना आ रहे हैं ना?"

निधि की आँखे आज फिर नम हो उठी थी.....।

हम में ही थी न कोई बात, याद न तुमको आ सके
तुमने हमें भुला दिया, हम न तुम्हें भुला सके...।

– हफ़ीज जालंधरी

किसी से मेरी मंज़िल का पता पाया नहीं जाता
जहाँ मै हूँ फ़रिश्तों से वहाँ जाया नहीं जाता

– मखमूर देहलवी

दुविधा...

रजनीकांत चतुर्वेदी
वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (फसल संरक्षण विभाग)
भा.कृ.अनु.प.–के.क.अनु.सं., नागपुर

इन्फेक्ट 'आई लव यू,' तुम समझ रही हो मैं क्या कह रहा हूँ।

मेरी बात को गौर से सुनो। तुम्हें पता है कि मैं अपने परिवार को नजर अंदाज नहीं कर सकता। ये बातें मोबाईल पर हो रही थी रवि बरामदे में बैचेनी से टहलते–टहलते चंचल से बातें कर रहा था। एक तरफ अपना परिवार तो दूसरी तरफ चंचल। इसी कशमकश में टहलते–टहलते थक कर कोने पर रखी आराम कुर्सी पर बैठ गया। बैठे–बैठे कब आँख लग गयी, रवि को पता नहीं चला। आँख खुली तो शाम ढल चुकी थी और सामने से चरवाहा मवेशियों को चरा कर वापस ला रहा था। हाथ में लाठी, कंधे पर छ़ाता और गर्दन पर गमछा लपेटे दीन–दुनिया से बेखबर अपनी धुन में गुनगुनाते मवेशियों के पीछे–पीछे चला आ रहा था। रवि सोचने लगा यदि मेरा परिवार मुझे शहर पढ़ने नहीं भेजता तो मैं भी इसी तरह से, ये सोच कर रह गया। पुरानी बातें याद आने लगी, गाँव की प्राथमिक शाला के मैले–कुचैले, बस्ते, लकड़ी का फट्टा, स्याही के धब्बे से रंगा; टूटी कलम से लगा पीतल के चमकता निब, धोती कुर्ते वाले एक मात्र मास्टरजी और उनकी छ़डी पर इन सब को छोड़ कर शहर पढ़ने के लिए आना महज संयोग नहीं था। इन सब के पीछे़ रमा बुआ का बड़ा हाथ था। जब भी वो गाँव आती हमेशा बाबूजी पर शहर पढ़ने के लिए भेजने का दबाव बनाती। रमा बुआ का ससुराल पढ़ा लिखा था जमीन–जायदाद भीं अच्छी खासी थी। मतलब पैसें वाले लोग थे और पढ़ाई–लिखाई में भी पूरा परिवार नम्बर एक था। बहरहाल रमा बुआ की मेहरबानी से छोटी सी उम्र में रवि पढ़ाई के लिए शहर आ गया।

शहर के तौर तरीके गाँव से बिल्कुल अलग .....सुबह और शाम की भागमभाग, साफ सुथरी सड़कें, लम्बी लम्बी गाडियाँ, रोशनी से जगमगाते बाज़ार, मनोरंजनों के नये नये माध्यम, इन सब में उसने अपने–आप को बड़ी तेजी से ढाल लिया था। पहले मिडिल स्कूल फिर हायस्कूल और कॉलेज में बड़े आराम से गुजर रही थी फिर स्नातक करते समय चंचल से जान पहचान हुई। जान–पहचान कब आत्मीयता में बदल गयी पता नहीं चला। स्नातकोत्तर करते करते नौकरी की तलाश में दफ्तर–दफ्तर के चक्कर दिनचर्या का अहम हिस्सा बन गयी। सफलता तो मिली पर असफलताओं के दौर में चंचल की सांत्वना कब प्यार में बदल गई मालूम नहीं चला। अंदर ही अंदर पनपता प्यार इतना गहरा हो गया कि चंचल जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गयी और एक दिन दफ्तर से नौकरी से बुलावा खुशियों में चार चाँद लगा गया। वो दिन आज–कल की तरह नहीं थे। जात–पात, अमीरी–गरीबी के बंधन बहुत गहरे थे। अपनी भावना को जाहिर करना घर या बाहर चुनौती थी। इन सब को दरकिनार करके रवि अपने मन की राह पर चलने का दृढ संकल्प था पर परिवार में चर्चा के लिए अनुकूल वातावरण की प्रतीक्षा कर रहा था। इसी बीच गाँव से संदेशा आया कि बड़े पिताजी के बड़े भाई जो कि परिवार में कर्ता–धर्ता थे उनकी तबीयत खराब हो गयी है और रवि को तुरंत गाँव बुलाया है। इस बात की सूचना चंचल को दे कर रवि गाँव चला गया और गाँव में स्थिति बिल्कुल विपरीत थी बडे पिताजी की तबियत तो थोड़ी खराब जरूर थी पर चिंता की कोई विशेष बात नहीं थी और माहौल कुछ अलग था।

रमा बुआ को भी बुलाया गया था वो भी पहुँचने वाली थी। एक बार में माजरा समझ में नहीं आया की चल क्या रहा है? लगा कि प्रॉपर्टी बँटवारे का कोई मामला हों पर रमा बुआ के आते ही पता चल गया कि बात क्या है। यहाँ पर तो रवि की विवाह की बातें तय की जा रही है। बुआ ने आते ही साफ कर दिया की तेरा विवाह तय कर दिया गया है कल सुबह रिश्ता पक्का करने की रस्म होगी। रवि के पैरो के नीचे से धरती खिसक गयी। कैसे वो चंचल और अपने रिश्ते के बारे में पिताजी से कहे। और वो कह नहीं पाया। आज 30 साल बाद उसी स्थिती में रवि का बेटा है और उसके रिश्ते की बात घर में चल रही है अनुज सुन्न बैठा हुआ है, सुन रहा है। एका–एक वह उठा और रवि के पास आया और रवि से बोला "पापा मैं ये रिश्ता नहीं कर सकता। मैं आपकी तरह दुविधा में नहीं रहना चाहता। मुझे क्षमा करें। कुछ निर्णय समय रहते न लिये जाए तो सिवाय अपराध बोध के कुछ नहीं मिलता। मैं आपकी इज्जत करता हूँ और मुझे पूर्ण विश्वास हैं कि आप मेरे निर्णय का विरोध नहीं करेंगे कहते हुए अनुज रवि के गले से लिपट गया।

अद्‌भुत सत्य

- गरीब : मन्दिर के बाहर भीख माँगता है और अमीर–मन्दिर के अन्दर भीख माँगता है।
- किसी की बुराई तलाश करने वाले इंसान की मिसाल उस मक्खी सी है जो सारे खूबसूरत शरीर को छोड़कर केवल जख्म पर ही बैठती है।
- जिन्दगी बड़ी अजीब होती है। कही हार तो कही जीत होती है। तमन्ना रखों सागर की गहराई चूमने की, किनारों पर तो जिन्दगी की शुरूआत होती है...।
- लोग डूबते हैं तो समन्दर को दोष देते है। मंजिल न मिले तो किस्मत को दोष देते है। खुद तो संभल कर नहीं चलते जब लगती है ठोकर, तो पत्थर को दोष देते हैं...।
- बुजदिल तो वो लोग है जो मुहब्बत नहीं करते। ए दोस्त । बहुत हौसला चाहिए बरबाद होने के लिए...।
- किसी को चाहो...तो इस अंदाज से चाहो उसे कि उसे जब भी किसी का प्यार मिले, तब तुम–ही–तुम याद आओ उसे...।
- इंसानियत आदमी को इंसान बना देती है लगन हर मुश्किल को आसान बना देती है। वरना कौन जाता मन्दिर में, आस्था ही है, जो पत्थरों को भगवान बना देती है...।
- इरादे नेक हो तो तो सपने साकार होते है।

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का महिला उत्थान में योगदान

डॉ. दिपक टी. नगराले
वैज्ञानिक (पादप रोगविज्ञान)
भा.कृ.अनु.प.–के.क.अनु.सं., नागपुर

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर भारत के महान सपूतों में से एक रहे है। लेकिन उन्हें हमेशा एक दलित वर्ग सुधारक के रूप में प्रचारित किया गया है। महिलाओं के अधिकारों के लिए हमेशा वे कानूनी और सामाजिक स्तर पर लड़ते रहे है।

1. मताधिकार का हक

भारत 1950 में विश्व का सबसे बड़ा प्रजातंत्र बना और सभी नागरिकों के लिए वयस्क मताधिकार दिया गया। ये सभी वयस्क स्त्री और पुरूषों के लिए लागू था । यह एक बड़ा कदम था जब कई पश्चिमी देश महिलाओं को अधिकार (मताधिकार) देने के पक्ष में नहीं थे। यह काफी क्रांतिकारी निर्णय था जब कि महिलाओं का केवल घर में सिमित कार्य करने के लिए भारतीय समाजव्यवस्था ने मजबूर किया गया था। यह अधिकार किसी की जात–पात, धर्म, रंगरूप, शिक्षा से प्रभावित ना होकर सबके लिए समान था। बाबासाहेब ने अनुच्छेद 326 के तहत यह अधिकार सभी वयस्क मतदाताओं के लिए संविधान में कानूनी अधिकार दे कर दिया था।

2. मातृत्व लाभ अधिनियम

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर हमेशा से ही सामाजिक उत्थान के लिए लड़ते रहे और महिलाओं के अधिकार के लिए वे आधुनिक भारत में सबसे आगे रहे हैं। जब वे वाइसराय कॅबिनेट परिषद में 1942 से 1946 तक कामगार मंत्री रहे उस समय उन्होंने महिलाओं और सभी वर्गों के मजदूर श्रमिकों के लिए बड़ा योगदान दिया हैं। उन्होंने गर्भवती खान श्रमिकों के लिए आठ सप्ताह के लिए मातृत्व निधी और अन्य लाभ लागू किया था। यह लाभ चार सप्ताह पहले स्तर पर और चार सप्ताह गर्भवती समय बाद लागू किया था। सभी के लिए समय सीमा कामों की पहले 14 घंटे हुआ करती थी जो कि डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के प्रयासों के बाद आठ घंटे कर दी गई। महिला एवं बाल कल्याण अधिनियम जो आज आधुनिक भारत में लागू है की उन्हीं के सिफारिशों पर आधारित रहा है।

3. सामाजिक उत्थान और अधिकार

उन्होंने अपने पत्रिकाओं जैसे की मूकनायक (1920) और बहिष्कृत भारत (1927) में हमेशा से महिलाओं के उत्थान के लिए लेख लिखे है। उन्होंने लिखा है कि दलित और पिछड़े वर्ग का विकास करना होगा तो उन्हें महिलाओं को शिक्षित करना होगा और बराबरी का अधिकार देना होगा। इसके साथ ही उन्होंने दलित, पिछड़े वर्ग के लिए अलग से निर्वाचन क्षेत्र की भी माँग की थी, क्योंकि जाति प्रथा और भेद–भाव उस समय चरम सीमा पर थी और दलित महिलाओं, पिछड़ों के लिए वह काफी मुश्किल समय था। जब उन्होंने कालाराम मंदिर, नासिक में दलितों के लिए प्रवेश आंदोलन चलाया था उस समय भी वहा 500 महिलाओं ने उस समय आंदोलन में भाग लिया था।

जब वे भारत के कामगार मंत्री रहे (1942–46) उस समय उन्होंने अखिल भारतीय दलित महिला सम्मेलन का आयोजन किया था और उसमें उन्होंने महिलाओं के अधिकार जैसे की संपत्ती का अधिकार, विवाह, बालविवाह, शिक्षा आदि पर जोर देते हुए महिलाओं के अधिकारें की जोरदार वकालत की थी। उस सम्मेलन में 25,000 से अधिक महिलाओं ने भाग लिया था।

वैसे ही 6 सितंबर, 1946 को अखिल भारतीय महिला सम्मेलन उन्होंने आयोजित किया था और महिलाओं के अधिकारों और उनके उत्थान के प्रयासों की जोरदार वकालत की थी। महिलाएँ हमेशा उनके सामाजिक

आंदोलनों में साथ रही है। 25 सितंबर, 1927 को महाड चवदार तालाब के आंदोलन में भी महिलाएँ उनके साथ रही हैं। वे हमेशा महिलाओं और पिछड़े वर्ग के अधिकारों के लिए लड़ते रहे, जो कि उस समय काफी कठिन परिस्थिति में जीवनयापन कर रहे थे और सभी अधिकारों से वंचित थे।

4. महिलाओं के लिए बनाए कुछ अधिनियम

1) खान महिला श्रमिक अधिनियम
2) खान महिला मातृत्व निधी
3) महिला एवं बालकल्याण अधिनियम
4) पैतृक संपत्ती अधिकार अधिनियम

5. हिंदु कोड बिल

हिंदु कोड बिल डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के उच्चतम प्रयासों का एक सबसे महत्वपूर्ण बिल रहा है। बाबासाहेब जब स्वतंत्र भारत के पहले कानून मंत्री बने जो की उस समय काँग्रेस सरकार थी और पंडित नेहरू भारत के प्रधानमंत्री थे। पंडित नेहरू ने डॉ. बाबासाहेब को संविधान सभा के प्रारूप समिति के अध्यक्ष के रूप में काम करने का अनुरोध किया जो बाबासाहेब ने 27 अगस्त, 1947 को स्वीकार किया। यह काफी अच्छा मौका था जो की भारत के पिछड़ों, दलितों, महिलाओं और वंचित वर्ग के लिए कानूनी तौर पर अधिकार दे सके। इसलिए उन्होंने भारतीय संसद में हिंदु कोड बिल प्रस्तुत करने की कोशिश 1948 में की लेकिन उनके तमाम प्रयासों के बावजूद ये भारतीय संसद में पेश नहीं हो सका। करीब तीन साल तक प्रयासों के बावजूद यह बिल संसद में पारित नहीं हो सका।

हिंदु कोड बिल यह भारतीय महिलाओं के अधिकार हेतु जोरदार प्रयास था। लेकिन सांसदों की संकीर्ण विचारधारा और सामाजिक व्यवस्था के कारण यह पारित नहीं हो पाया। अंत में डॉ. आंबेडकर ने 1951 में अपने कानून मंत्री के पद से इस्तीफा दे दिया।

इस बिल में महिलाओं को पैतृक संपत्ती में अधिकार, विवाह और तलाक का अधिकार, शिक्षा का अधिकार, समान वेतन का अधिकार जैसे महत्वपूर्ण मुद्दे शामिल थे, लेकिन कुछ कट्टरपंथियों के वजह से यह बिल पारित नहीं हो सका और इसी मुद्दे को एक एक कर वर्ष 1952 में 1956 के दौरान चार भागों में पारित किया गया। उस समय के सांसद श्री श्याम प्रसाद मुखर्जी और सरोजिनी नायडु जो कि एक महिला थी इन्होंने इस बिल का जोरदार विरोध किया था।

6. समान वेतन का अधिकार

डॉ. बाबासाहेब ने महिला और पुरूष ऐसे लिंग पर आधारित वेतन में भेद–भाव को न मानकर, सभी महिला और पुरूषों के लिए एक समान वेतन अधिकार की सिफारिश की थी। उस समय महिलाओं को पुरूषों के मुकाबले कम वेतन और दुय्यम दर्जे का काम दिया जाता था और आज भी कई निजी क्षेत्र में महिलाओं को कम वेतन और दुय्यम दर्जे का काम दिया जाता है।

डॉ. बाबासाहेब हमेशा से ही स्वतंत्रता, समता और बंधुता के आधार पर सभी नागरिकों को अधिकार देने के पक्षधर रहे हैं। यह अधिकार किसी भी लिंग भेद, जात–पात, धर्म के आधार पर भेद–भाव ना करते हुए समानता के अधिकार पर आधारित है। इसीलिए उन्होंने भारतीय संविधान के तहत सभी महिलाओं, पुरूषों एवं पिछड़ों को संवैधानिक अधिकार देकर भारत में एक मजबूत लोकतंत्र की नीव रखी। आज विश्व में भारत एक प्रगतिशील लोकतंत्र के रूप में उभरा है और इसका श्रेय भारतीय संविधान के शिल्पकार डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर को जाता है।

7. महिलाओं का उत्थान

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने तत्कालीन भारतीय समाज में यह देखा कि महिलाओं को अधिकारों से वंचित कर उसे चार दिवारी के अंदर गुलाम की तरह रखा जाता था। लिंग भेद के आधार पर महिलाओं के साथ हो रहे इस अत्याचार को खत्म करने के लिए उन्होंने महिलाओं की स्थिति को मजबूत करने के लिए और उन्हें स्वतंत्रता समानता का अधिकार देने के लिए कई महत्वपूर्ण कानून बनाए, जिसके फलस्वरूप आज की भारतीय नारी पूरे आत्मविश्वास के साथ प्रगति की राह पर बढ़ रही है।

भारत में कई अच्छे समाज सुधारक राजाराम मोहन राय, धोंडो केशव कर्वे, महात्मा ज्योतिबा फुले हुए जिन्होंने भारतीय नारी के उत्थान हेतु एवं सामाजिक जागरण की दिशा में बहुत अच्छे कार्य किए जिससे डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर प्रभावित हुए। डॉ बाबासाहेब आंबेडकर ने भारतीय संविधान के अंतर्गत महिलाओं के उत्थान हेतु अनेक सशक्त कानून बनाए ताकि महिलाओं को सर्वांगीण विकास संभव हो, जिसके फलस्वरूप आज की भारतीय नारी जीवन के हर क्षेत्र में पुरूष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर देश के भविष्य को उज्ज्वल बना रही है। इसलिए हम उन्हें महिलाओं के अधिकारों का समर्थक मानते है।

महिला सशक्तिकरण में डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का योगदान

श्रीमती रमा अय्यर
वैयक्तिक सहायक (निदेशक)
भा.कृ.अनु.प.–के.क.अनु.सं., नागपुर

प्राचीन भारत में मध्ययुगीन काल के दौरान जब पितृसत्तात्मक व्यवस्था अत्याधिक प्रचलित थी, तब भी महिलाओं ने उच्च पदों पर कार्य किया। इतिहास गवाह है कि नारी शक्ति, रानी लक्ष्मी बाई, अहिल्याबाई होल्कर ने राज्यों और शक्तिशाली शासकों को नष्ट कर दिया। लेकिन, धीरे–धीरे, महिलाओं की स्थिति कमज़ोर होती गई और उन्हें एक निश्चित उद्देश्य की पूर्ति के लिए बनाए गए आनंद की वस्तु समझा जाने लगा। धीरे–धीरे, महिलाओं ने अपने बुनियादी अधिकारों और व्यक्तिगत पहचान को ही खो दिया।

प्राचीन काल से ही हमारे इस देश में महिलाओं को एक तरह की चीज माना जाता था। विवाह और गृहस्थ जीवन उनके लिए अनिवार्य हो गए और पति के प्रति निर्विवाद समर्पण उनका कर्तव्य बन गया। महिलाओं को किसी भी सामाजिक समारोह में शामिल होने की अनुमति नहीं थी और उन्हें केवल घरेलू मजदूर माना जाता था। लगभग सभी धर्मों में महिलाओं को जानवरों या भोग की वस्तुओं की तरह रखा गया था। वे बिल्कुल भी इंसानों के बराबर नहीं थी। 'संस्कारों' के नाम पर महिलाओं को उन अंधविश्वासों के बंधन में बाँध दिया गया, जिसे तत्कालीन समाज की स्त्री ने उसे सतीप्रथा के रूप में अपनी मृत्यु तक निभाया।

लैंगिक समानता, मुख्य स्ट्रीमिंग, नेट वर्किंग, लीडरशिप और वित्तीय स्वतंत्रता महिलाओं की मुक्ति के आवश्यक घटक हैं। डॉ. आंबेडकर ने अपने समय पर इसका एहसास किया और उन्हें सामाजिक सुधारों की प्रक्रिया में शामिल किया। उन्होंने महिलाओं को जाति व्यवस्था के उन्मूलन के लिए संघर्ष में भाग लेने और समाज के वंचितों के उत्थान के लिए प्रेरित किया। डॉ. आंबेडकर का दृढ़ विश्वास था कि महिलाओं द्वारा स्वयं को मुक्त किए बिना यह संभव नहीं हो सकता। इसलिए, उन्होंने महिलाओं को प्रेरित किया और उन्हें खुद को व्यवस्थित करने और जातिगत पूर्वाग्रहों के खिलाफ एक इकाई के रूप में काम करने की सलाह दी। 1927 में मंदिर प्रवेश के लिए महा सत्याग्रह में हिंदुओं ने भी भाग लिया। महिलाओं ने जुलूस में पुरुषों के साथ मार्च किया। डॉ. आंबेडकर ने महिलाओं को प्रगतिशील होने के लिए प्रोत्साहित किया, अमानवीय परंपराओं, रिवाजों और रीति–रिवाजों को समाप्त कर दिया जो उनकी प्रगति के लिए हानिकारक थे। एक शोधकर्ता के रूप में, डॉ. आंबेडकर ने केवल हिंदू धर्म में ही नहीं, बल्कि अन्य धर्मों के भी उनके अधिकारों पर प्रकाश डालते हुए, महिलाओं की स्थिति का गहन अध्ययन किया।

'मेटरनिटी बेनिफिट बिल' और 'बर्थ कंट्रोल' पर उनका तर्क महिलाओं की गरिमा को पहचानने के लिए काफी प्रासंगिक था। उन्होंने मातृत्व विधेयक का समर्थन किया। उनका तर्क था 'यह सरकार के हित में है कि एक मां को प्रसवपूर्व अवधि के दौरान एक निश्चित मात्रा में आराम मिलता है।' उन्होंने 1948 में 'हिंदू कोड बिल' की शुरुआत की जो महिलाओं के मालिकाना हक के साथ क्रांतिकारी था, और जब संसद द्वारा स्वीकार नहीं किया गया, तो डॉ. आंबेडकर ने 1951 में मंत्रिमंडल से मंत्री पद का इस्तीफा दे दिया।

डॉ. आंबेडकर ने कहा कि बौद्ध धर्म महिलाओं को स्वतंत्रता एवं समानता का अधिकार देते हुए उसे पुरुष के समतुल्य मानते हुए स्त्री एवं पुरुष में किसी भी प्रकार का भेद–भाव नहीं रखता। बौद्ध धर्म का सहारा लेकर उन्होंने एक सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था बनाने के लिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर महिलाओं के साथ ही साथ पिछड़े वर्ग

का प्रतिनिधित्व किया, ताकि सभी को समान अवसर मिल सके। डॉ. आंबेडकर मूर्ति पूजा के उपासक नहीं थे और उन्होंने महिलाओं को अमानवीय रीति–रिवाजों, परंपराओं और अंधविश्वासों से मुक्त कर महिलाओं के उत्थान हेतु प्रगति का मार्ग प्रशस्त किया।

डॉ. आंबेडकर का मत था कि अज्ञानता ही पाप का मूल है, इसलिए उन्होंने शिक्षा एवं ज्ञान को सर्वोपरि मानते हुए शिक्षा के महत्व की जोरदार वकालत की और इसे लोकतंत्र का रक्षक माना। डॉ. आंबेडकर ने भारत के सभी नागरिकों को बिना किसी भेद–भाव के उन्हें बुनियादी शिक्षा दिये जाने का संवैधानिक प्रावधान किया।

डॉ. आंबेडकर ने महिलाओं के सर्वांगीण विकास हेतु उन्हें कई प्रकार की संवैधानिक सुरक्षा प्रदान की ताकि महिलाओं के अधिकारों का कोई हनन ना कर सकें। तदहेतु भारतीय संविधान में हिन्दू विवाह नियम एवं पैतृक संपत्ति में महिलाओं के अधिकार को लेकर महिलाओं के स्थिति को सशक्त एवं मजबूत बनाया गया, जिससे समाज में महिलाओं को सम्मान मिला। महिलाओं की सहमति के बिना हिंसक और बलपूर्वक गर्भपात करवाने को अपराध माना गया। हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम में यह प्रावधान किया गया कि महिला और पुरुष को पैतृक संपत्ति में उनका समान अधिकार होगा।

डॉ. आंबेडकर का जीवन संघर्ष सही अर्थों में महिलाओं के उत्थान एवं अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के कल्याण हेतु समर्पित रहा, जिसके फलस्वरूप आज महिलाएं तेजी से जीवन के हर क्षेत्र में कदम बढ़ाकर सरकारी एवं गैरसरकारी क्षेत्रों में नित्य नए मुकाम को हासिल कर रही है। सरकारी क्षेत्रों में आरक्षण के फलस्वरूप पिछड़े वर्गों को अवसर मिलने से उनकी दयनीय स्थिति में आज सुधार आया है और उनका भविष्य उज्ज्वल हुआ है।

सभी को स्वतंत्रता एवं समानता का अधिकार मिले इस दृष्टिकोण से हाल ही में उच्च न्यायालय ने माना कि किसी भी पूजा स्थल पर जाने से महिलाओं को रोका नहीं जा सकता यह उनका मौलिक अधिकार है और इसकी रक्षा के लिए सरकार बाध्य है। हम सभी जानते हैं कि शनि शिंगणापुर मंदिर के मुख्य क्षेत्र में महिलाओं के प्रवेश पर 400 साल पुराना प्रतिबंध हटा दिया गया है। यह सब डॉ. आंबेडकर ने हमें जो भारतीय संविधान के अंतर्गत हमारे मौलिक अधिकारों की सुरक्षा हेतु जो कानून बनाए उसके ही फलस्वरूप यह संभव हो पाया है।

अतः आज मैं डॉ. आंबेडकर की 125 वीं जयंती की पूर्व संध्या पर उन्हें शत–शत नमन करते हुए उनके द्वारा नारी मुक्ति हेतु चलाये गए विभिन्न आंदोलन एवं महिलाओं के सर्वांगीण विकास हेतु भारतीय संविधान के अंतर्गत बनाए गए सशक्त कानून के लिए मनपूर्वक उनका हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ जिसके फलस्वरूप आज महिलाओं को जीवन के सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ने का सुअवसर मिला है। यह डॉ. आंबेडकर की स्वर्णिम सोच थी कि महिलाओं के कल्याण के बिना सामाजिक सशक्तिकरण असंभव है और उनका यह दृढ़ विश्वास था कि किसी भी राष्ट्र की प्रगति काफी हद तक महिलाओं के योगदान पर निर्भर करती है। आज देश के सर्वांगीण विकास हेतु यह जरूरी है कि हम भारतीय संविधान के शिल्पकार डॉ. आंबेडकर के विचारों का अनुकरण करते हुए इस देश को खुशहाल बनाए।

सारा जहाँ जिनके शरण में
नमन है उस बाबा के चरण में
बने उस बाबा के चरण की धूल
आओ मिलकर अर्पण करें उनको
श्रद्धा के फूल...

ऐसा है अपना सीआईसीआर का कपास

ऐसा है अपना सीआईसीआर का कपास
जो रूठे को मनाए बिछड़ों को लाए पास
जगाए अपनेपन का एहसास
ऐसा है अपना सीआईसीआर का कपास
खादी वस्त्र इसके खास, स्वदेशी का देते अहसास
चारों तरफ एक ही आवाज
अपना सीआईसीआर का कपास,
किसानों को इससे है आस, वैज्ञानिकों ने किये प्रयास
प्रगति का फैलाया व्यास,
ऐसा है अपना सीआईसीआर का कपास
ऐसा है अपना सीआईसीआर का कपास
बोले तो एकदम झकास.....

–प्रशांत ग. गव्हाळे
तकनीशियन (फसल सुधार विभाग)
भा.कृ.अनु.प.–के.क.अनु.सं., नागपुर

———◆———

राष्ट्रभाषा के प्रचार–प्रसार में दक्षिण–भारतीयों ने बहुत बड़ा योगदान दिया है।

–सा.का.पाटील

भाषा राष्ट्रीय एकता का सशक्त माध्यम है। हिंदी इस दृष्टि से एकता का अच्छा माध्यम बन सकती है।

–लाल बहादुर शास्त्री

मैं किसी भी कीमत पर अपना देश किसी अन्य देश से नहीं बदलना चाहूँगा।

–निर्मल वर्मा

हिंदी जब तक शिक्षा का माध्यम नहीं बनती, उसमें मौलिक वैज्ञानिक साहित्य की वृद्धि संभव नहीं।

–निहालकरण सेठी

———◆———

पुरूष की शोभा न तो बाहुभूषण से, न चंद्र के समान उज्ज्वल हार से और न बालों को संवारने से, न उबटन से, न स्नान से, न श्रृंगार से होती है, जितनी सुसंस्कृत वाणी से होती है।

– भर्तृहरि

पतंगे की प्रेम व्यथा....

प्रेम की तलाश में
अनबुझ इस प्यास में
जल गयी पतंगे की पाँख 2

जीने की चाह में
मृत्यु की राह में
दर्द से वो गया कराह
जल गयी पतंगे की पाँख 2

हो न सका अपनो के संग
पंख बिना हुआ जो अपंग
जीवन पर चढ़ा काला रंग
कि जल गयी पतंगे की पाँख 2

किसे कहे अपनी ये व्यथा
यही है दीप और पतंगे की प्रेम कथा
कि प्रेम में जल गयी पाँख
जल गयी पतंगे की पाँख 2

काश.....
होता न उसको ये भ्रम,
करता न कभी वो प्रेम
रहता जो अपनो के संग,
होता न कभी वो अपंग

लेकिन मूढ़ वो
प्रेम की तलाश में
उड़ गया आकाश में
खो गये अपने पँख,
कि जल गयी पतंगे की पाँख 2

रजनीकांत चतुर्वेदी
वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (फसल संरक्षण विभाग)
भा.कृ.अनु.प.–के.क.अनु.सं., नागपुर

कपास गाथा...

धरती के गर्भ से अंकुरित होता हूँ मैं।
प्रकृती की गोद में जन्म लेता हूँ मैं।।

लेता हूँ फिर धीरे धीरे मैं पौधे का रूप।
मानव मेरा खयाल भी रखता है क्या खूब।।

नहीं करता है वो मुझे जरा भी दुर्लक्ष।
मेरी अच्छी फसल ही होता उसका लक्ष्य।।

खयाल रखता है वो मेरा बहुत ही खास।
हो सके फिर मेरा जिससे सही विकास।।

धीरे–धीरे तय करता हूँ मैं अपना सफर।
फिर जाकर उत्पन्न होते है मुझमें गूलर।।

फूटते है गूलर फिर हो कर परिपक्व।
मिले अगर सही समय पर, सारे पोषक तत्व।।

लहलहाता हूँ मैं लेकर अपना श्वेत फूल।
आँधी, तूफान या कितनी भी हो परिस्थितियाँ प्रतिकूल।।

कर दिया जाता है बीजों से, रेशों को पृथक।
तब कहीं जाकर सारी मेहनत, होती है सार्थक।।

रूई कहलाती है बिनौले रहित कपास।
जे बरती सावधानी तो, उपज होती है खास।।

गुणवत्ता की कसौटी पर, मुझे जाता है परखा।
फिर कहीं जाकर कातता, है मुझको चरखा।।

बुनी जाती है मुझसे, दरी खेस और चद्दर।
और भी कई रूप है मेरे, जैसे कि खद्दर।।

मानव मशीन और कारखाने।
सभीं जुट जाते हैं, मुझे नया रंग रूप दिलाने।।

मेरे मित्र है अच्छी मृदा, वायु और बरखा।
ठीक उसी तरह हाथ करघा और चरखा।।

मेरा श्वेत रंग है मेरा गर्व।
रोशन करता हूँ हर तीज, त्यौहार व पर्व।।

बीज से कपड़े तक का ये सफर।
बीत जाता है कुछ इस कदर।।

हे मानव, स्वदेशी है इस देश की पहचान।
बनाए रखना तुम मुझे, वतन की आन, बान और शान।।

देश की हार या देश का विस्तार ?

आता मेरे दिल में सदैव ये विचार है।
ये मेरे देश की हार हैं या मेरे देश का विस्तार हैं ?
हर तरफ फैला भ्रष्टाचार हैं।
देश का युवा बेरोजगार हैं।
किसान मजबूर व लाचार हैं।
गरीब का शिशु कुपोषण का शिकार है।
ये मेरे देश की हार हैं या मेरे देश का विस्तार हैं ?

नहीं रह गई अब देश की नारी सुरक्षित
जाने कब होगा ये देश सुशिक्षित
क्यों है हमारे देश मे बेटियाँ उपेक्षित
करना होगा इस देश को विकसित
ये मेरे देश की हार हैं या मेरे देश का विस्तार हैं ?

मन को लुभाते जरूर है नेताओं के भाषण।
मोमबत्ती हाथ में लिए सड़कों पर प्रदर्शन।
मंडप तले बैठे समाज सेवियों का अनशन।
पर क्या किसी ने भी किया है अध्ययन।
गरीब की चाहत है दो वक्त का राशन।
उसके भूखे बच्चों को अन्न प्राशन।
ये मेरे देश की हार हैं या मेरे देश का विस्तार हैं ?

अनमने से मेरे हृदय में, चुभते कुछ सवाल है
उलझनों से सरोबार दिल में कुछ खयाल है
खा रहा है देश को कुरीतियों का कीड़ा।
कौन समझेगा आखिर शोषित वर्ग की ये पीड़ा।
ये मेरे देश की हार हैं या मेरे देश का विस्तार हैं ?

आइये इस नव वर्ष पर ये संकल्प करें।
दुर्गा, काली, लक्ष्मी कों पूजने वाले इस देश में
चलो भस्मासुरों का अंत करें।
वापस लौटायें देश को अब उसका सम्मान।
यहीं मेरे देश की जीत हैं यहीं मेरे देश का विस्तार हैं ?

कभी तो हाथ बढ़ाना होगा
कभी तो हिम्मत दिखानी होगी
हमेशा नहीं रहेगी हार।
हाँ जरूर होगा मेरे देश का विस्तार।
हाँ जरूर होगा मेरे देश का विस्तार।

कु. उषा सतिजा
एस.आर.एफ.
भा.कृ.अनु.प.–के.क.अनु.सं., नागपुर

क्या बढ़ रहा किसान है ?

माथे पर जिसके हिमालय चमके
पग में सागर का वंदन है।
हे भारतवर्ष तू धन्य है
जिसमें जय जवान जय किसान है।
विश्वपटल पर सोने की चिड़िया का
हो रहा आज गुणगाण है।
मेक इन इंडिया के साथ
क्या बढ़ रहा किसान है ?

तंत्रज्ञान की दुनियाँ में,
मुट्ठी में सारा ज्ञान है,
मगर खेत पर अज्ञान है।
भारत सुदृढ कंधों को,
मजबूत सहारा किसान है।
कृषि विकास चारों ओर
फिर ऐसे हरित क्रांती की आन है।
विकास की इन लहरों के साथ
क्या बढ़ रहा किसान है ?
मेक इन इंडिया के साथ
क्या बढ़ रहा किसान है ?

आँसमा भी खेल रहा है
किसान बेचारा फँस रहा है
लगाँऊ कि ना लगाँऊ बीज
बस यही सोच रहा है।
जैसे तैसे मेहनत के संग किसान
पौधों को पाल रहा है।
क्या मतलब इन पानी के तालाबों का
अगर किसान खेत सूख रहा है।
नई सिंचाई की यंत्रणा में
किसान पानी को तरस रहा है।
मेक इन इंडिया के साथ
क्या बढ़ रहा किसान है।

अन्नदाता तू भारत का
दानों को मोहताज है
है आंकड़ें में बस तरक्की
क्यों आफत में तू आज
सब तो है जिम्मेदार इसलिए
मगर किसान तू भी जिम्मेदार है।
शस्यचक्र, बहुफसल, सेंद्रिय खाद
भूल गया तू किसान है
कम लागत की खेती
ज्यादा मुनाफा देती है
तू जब खुशहाल रहेगा
तभी देश की शान है
सच में तब कह पायेंगे
के मेरा देश कृषि प्रधान है।
मेक इन इंडिया के साथ
क्या बढ़ रहा किसान है ?

मयूरकुमार आर. मेश्राम
प्रक्षेत्र प्रबंधक
भा.कृ.अनु.प.–के.क.अनु.सं., नागपुर

ढोंगी बाबा और अंधे भक्त

काले धागे, पीले धागे बांधे वो घूमे
बाबा के कहने पर वो पत्थर भी चूमे
सुंदर था, सु–संस्कृत था, भारत था महान,
ढ़ोंगी बाबा के संगत आकर
कितना भटक गया इन्सान।।2।।
विश्वास था, भक्ति थी, सच्ची ही थी
वो लड़की 'सच्चे बाबा की बच्ची सी थी
बुलाया उसे गुफा में, क्योंकि लिया था उसने ठान
हर दिन नित नई नवेली चेली होगी मेरे साथ
कितना भटक गया इन्सान।।2।।
किसे खिलाए, किसे पिलाए बताते है 'झिलमिल' बाबा
इनके दर्शन में दिखते हैं साधारण गण नेता और अभिनेता
कान लगाए सुनते किस्से, सीखे सुंवरे बन अज्ञान
बाबा को क्या लेना देना, वो तो है 'अनसुने' नुस्खों की खान
कितना भटक गया इन्सान।।2।।
सुन मेरे बंधु, सुन मेरे सखा
इन बाबाओं में कुछ नहीं रखा
आँखें खोल, कान खोल, खोल ले सारी इंद्रियाँ
मेहनत कर, काम कर बचा कर रख आत्मसम्मान
फिर शान से कहेंगे सब
कितना सुधर गया इन्सान।।2।।

श्रीमती चैताली रोड़गे
वरिष्ठ तकनीकी सहायक
भा.कृ.अनु.प.–के.क.अनु.सं., नागपुर

ग़ज़ल

हम नहीं देते

होकर उनपे मेहरबान,
अपने हिस्से का आसमान, हम नहीं देते।

भले ही खाली रखना पसंद करेंगे पर,
बेईमानों को मकान, हम नहीं देते।

अदालत की लड़ाई में देना पड़े तो,
कभी भी झूठा बयान, हम नहीं देते।

जितना जरूरी है उतना ही पढ़े हैं,
कभी बेवजह इम्तीहान, हम नहीं देते।

प्यार, वफा, दोस्ती, शोहरत कुछ देर की,
इनकी जुदाई में जान हम नहीं देते...।

रिश्तों के दर्पण

घर की अनबन, अपनी जगह है,
दहलीज, आंगन, अपनी जगह है।

खिलौनों से न बहलाओ उसे,
प्यासा बचपन, अपनी जगह है।

कोशिश करना उसे भरने की,
अपना दामन, अपनी जगह है।

कौन रोक सका है उड़ान को,
ज़मीं का बन्धन, अपनी जगह है।

हम जोड़े कितने, तोड़े कितने,
रिश्तों के दर्पण, अपनी जगह है।

कौन किससे ख़फा हो जाता है,
हर उलझन, अपनी जगह है।

कहीं सुनहरी धूप का मौसम,
आँख का सावन, अपनी जगह है।

घर से लड़ना

इधर से लड़ना या उधर से लड़ना
आसान नहीं अपने घर से लड़ना

यहाँ तो हर किसी को पड़ता
जिन्दगी के लम्बे सफर से लड़ना।

हिम्मत सभी लोग रखते लेकिन,
कितना मुश्किल है बुरी खबर से लड़ना।

जब कीं मंदिर में जा के जगह मिली,
जब से उसने सीखा पत्थर से लड़ना।

हर मुश्किल आसान हो जायेगी तो,
तू भी सीख ले दिल और जिगर से लड़ना...।

ये पहेली मैं

नहीं सुलझा पायी ये पहेली मैं
क्यों सब से मिलकर रही अकेली मैं।

इन हाथों ने सब को भर भर के दिया,
अब देख रही खाली हथेली मैं।

रिश्तों ने हमें ऐसे बाँट दिया है
तुम आसमान, सूनी हवेली मैं।

बातें कर के मन को समझाती रही,
जैसे खुद ही खुद की सहेली मैं।

साथ हो न हो ग़ज़ल के रास्तों पर,
चुपचाप सी निकल पड़ी अकेली मैं।

- श्रीमती माधुरी राऊलकर (गज़लकारा)
रामनगर, नागपुर

साहित्यकार एवं महापुरूषों की नजरों में प्यार...

रहिमन धागा प्रेम का मत तोड़ो चटकाय। तोड़े से फिर ना जुड़ै, जुड़ै गाँठ पड़ी जाय।। - **रहीम**

चाहा और प्यार मिला–यह तो अच्छा है, लेकिन बिन चाहे प्यार मिले तो स्वर्गिक है। - **शेक्सपियर**

महानता, उत्कृष्टता तथा प्रेम का सार एक ही है–दूसरों के लिए सहर्ष पीड़ा भोगना। - **स्पेंसर**

थोड़ी बहुत मुहब्बत से काम नहीं चलता ऐ दोस्त,
ये वो मामला है जिसमें या सब कुछ या कुछ भी नहीं। - **फिराक गोरखपुरी**

प्यार एक दूसरा ही जीवन है–हर आत्मा में उपजता है,
हर तंतु को उष्णता देता है, और हर नब्ज में धड़कता है। - **जोसेफ एडीसन**

प्रेम–रोग–यह जितनी देर से लगता है, उतना ही बुरा होता है। - **जेरॉल्ड**

प्रेम कीजिए तो प्रेम मिलेगा, बिल्कुल गणित के समीकरण की तरह। - **इमर्सन**

किसी से सच्चा प्यार करो तो अपने आप सबसे प्यार करने लगोगे। - **रिक्टर**

विश्वास और प्रेम में एक बात समान हैं, दोनों जबर्दस्ती से पैदा नहीं होते। - **शोपेनहॉवर**

एक समझदार व्यक्ति पागलों की तरह प्यार कर सकता है, मूर्खों की तरह नहीं। - **रॉचेफ कोड**

मैंने दिल के दरवाजे पर लिखा, अंदर आना मना है। प्रेम हँसता हुआ आया और भीतर चला गया। - **हरबर्ट**

कबिरा यह घर प्रेम का, खाला का घर नांहि, सीस उतारै हाथि करि, सौ पैसे मांहि। - **कबीर**

पोथी पढ़ि–पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय, ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय। - **कबीर**

किसी ऐसे व्यक्ति से प्यार करना जो तुम्हें प्यार न करता हो, ठीक वैसा है
जैसे किसी उस देश का नुमाइंदा बनना है जिसका अस्तित्व ही न हो। - **खलील जिब्रान**

मुहब्बत में नहीं है फर्क जीने और मरने का, उसीको देखकर जीते हैं, जिस काफिर पे दम निकले। - **मिर्जा गालिब**

मुझे प्यार के लिए क्या करना होगा–प्यार...।। - **लाईटन**

कोई रस्सी या बंधन इतनी जल्दी, इतनी मजबूती से नहीं बाँध पाता,
जितना प्यार का एक धागा बाँध लेता है। - **बर्टन**

स्त्रियों के प्रारंभिक जीवन में प्रेमियों का भीड़भाड़ होती है, बाद में पति की। - **ऑस्कर वाइल्ड।**

दिल में न हो उल्फत, तो मुहब्बत नहीं मिलती, खैरात में इतनी बड़ी दौलत नहीं मिलती। - **निदा फाजली**

जख्म–पे–जख्म खाके जी, अपने लहू के घूंट पी, आह ना कर,
लबों को सी, इश्क है दानिश दिल्लगीं नहीं। - **एहसान दानिश**

इस अर्पण में कुछ और नहीं केवल उत्सर्ग छलकता है,
मैं दे दूँ और फिर कुछ लूँ, इतना ही सरल झलकता है। - **जयशंकर प्रसाद**

नयनों ने उर को कब देखा, हृदय न जाना दृग का लेखा, आग एक में और,
दूसरा सागर ढुलकाता है। धुला यह वह निखरा आता है। - **महादेवी वर्मा**

रति का क्रंदन सुन आँसू से तुमने ही तो दृग धोए थे।
कालिदास सच–सच बतलाना रति रोई या तुम रोए थे। - **नागार्जुन**

प्यार में गुजर गया जो पल वह पूरी एक सदी से कम नहीं है,
जो विदा के क्षण नयन से छलका अश्रु वो नदी से कम नहीं। - **नीरज**

खुसरो दरिया प्रेम का, उल्टी वाकी धार। जो उतरा सो डूब गया, जो डूबा सो पार। - **खुसरो**

यदि तुम प्रिय बनना चाहते हो तो प्रेम करो और प्रेम के योग्य बनो। - **फ्रैंकलिन**

शायद तेरा इश्क भी अंबर की आग है कि जिसे बुझाने के लिए आज कोई सागर भी काफी नहीं है।- **अमृता प्रीतम**

मादक थी मोहमयी थी मन बहलाने की क्रीड़ा, अब हृदय हिला देती है वह मधुर प्रेम की पीड़ा...। - **जयशंकर प्रसाद**

जो लोग प्रेम को समझते हैं, वो कभी प्यार नहीं कर पाते। - **डगलस येट्स**

इश्क पर जोर नहीं, है ये वो आतिश गालिब, कि लगाए न लगे और बुझाए न बने। - **गालिब**

रोग पैदा करले कोई जिन्दगी के वास्ते, सिर्फ सेहत के सहारे जिन्दगी नहीं कटती। - **फिराक**

संकलन : **प्रेम प्रकाश गोकुलपुरे**
मुख्य तकनीकी अधिकारी
भा.कृ.अनु.प.–के.क.अनु.सं., नागपुर

महापुरूषों के अनमोल वचन

- महान ध्येय महान मस्तिष्क का जनक है। - **इमर्सन**
- जो अवसर को पकड़ ले, वही सफल है। - **गेटे**
- आशा उत्साह की जननी है। आशा में तेज है, बल है, जीवन है।
  आशा ही संसार की संचालक शक्ति है। - **प्रेमचंद**
- निराशा से जीवन के अमूल्य तत्व नष्ट हो जाते हैं, विजय के बहुत से अवसर भी खो जाते हैं। - **स्वेट मार्डेन**
- ईमानदार व्यक्ति न चाहते हुए भी प्रसिद्ध हो जाता है। - **रूजवेल्ट**
- जिसका ईमान नहीं वह इंसान नहीं, ईमान न बेचो, भले ही सब कुछ बेच दो। - **सुकरात**
- बिना उत्साह के कभी किसी उच्च लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होती। - **इमर्सन**
- साहस की सुगंध वीरों का प्रथम गुण है। - **चर्चिल**
- जिसके पास धैर्य है, वह जो कुछ इच्छा करता है, उसे प्राप्त कर सकता है। - **बेंजामिन फ्रैंकलिन**

- धैर्य दर्द से भरा है, किन्तु उसका फल मधुर होता है। – **रामकृष्ण परमहंस**
- स्वभाव ही मनुष्य के जीवन का स्वर्ग या नरक निर्धारित करता है। – **डी. बारिया**
- परिश्रम की चाबी ही किस्मत का व्दार खोलती है। – **चाणक्य**
- जीवन संघर्ष में वही सफल होते हैं,
  जिन्हें माता–पिता ने शांत रहने और धैर्य रखने की शिक्षा दी हो। – **भर्तृहरि**
- सुगंध के बिना पुष्प, तृप्ति के बिना प्राप्ति,
  ध्येय के बिना कर्म व प्रसन्नता के बिना जीवन व्यर्थ है। – **जयशंकर प्रसाद**
- भाषा विचारों की वेश–भूषा है। – **जॉनसन**
- संसार में न तो कोई हमारा शत्रु है न ही कोई मित्र।
  उनके प्रति हमारे विचार मित्र और शत्रु का अंतर करते हैं। – **चाणक्य**
- दिल में कभी बुरे विचार मत आने दो, वह अपना असर दिखाए बिना नहीं रहते। – **महात्मा गांधी**
- मनुष्य की वाणी से उसके गुण और अवगुण जाने जा सकते हैं। – **शेख सादी**
- जो विनम्र है वही विश्व विजयी है। – **चाणक्य**
- संसार में सबसे बड़ा अधिकार सेवा और त्याग से प्राप्त होता है। – **प्रेमचंद**
- चरित्र की पहचान विचारों से होती है। – **जेम्स ऐलन**
- कष्ट सहने पर अनुभव होता है। – **प्रेमचंद**
- पाँच वर्ष तक पुत्र को प्यार करें, दस वर्ष तक पुत्र को अच्छे मार्ग पर चलाने के लिए
  दण्डित कर सकते हो, लेकिन सोलह वर्ष के बाद पुत्र को मित्र की भांति स्वीकार कर लो। – **चाणक्य**
- जो मन की पीड़ा को स्पष्ट रूप से नहीं कह सकता, उसी को क्रोध आता है। – **रवीन्द्रनाथ ठाकुर**
- क्रोध में व्यक्ति सच्चाई नहीं कहता, वह तब सिर्फ दूसरे का दिल दुखाना चाहता है। – **प्रेमचंद**
- कुलीन व सज्जन व्यक्ति क्रोध आने पर भी मर्यादा पूर्ण वचन कहता है।
  जैसे गन्ना निचोड़े जाने पर भी मधुरता ही उगलता है। – **अज्ञात**
- गुस्से का बेहतरीन इलाज खामोशी है। – **स्वामी विवेकानंद**

संकलन : डॉ. उल्हास नंदनकर
मुख्य तकनीकी अधिकारी
भा.कृ.अनु.प.–के.क.अनु.सं., नागपुर

सुविचार

यह मत मानिए कि जीत ही सब कुछ है।
अधिक महत्व इस बात का है कि आप किसी आदर्श के लिए संघर्षरत हो। - **लेन कर्कलैंड**

कृत्रिम प्रेम बहुत दिनों तक चल नहीं पाता। स्वाभाविक प्रेम की नकल नहीं हो सकती। - **स्वामी रामतीर्थ**

कोई गलती न करना मनुष्य के बूते की बात नहीं है, लेकिन अपनी त्रुटियों और
गलतियों से समझदार व्यक्ति भविष्य के लिए बुद्धिमता अवश्य सीख लेते हैं। - **प्लूटार्क**

मित्र के तीन लक्षण है – अहित से हटाना, हित में लगाना और
हर तरह की मुसीबत में साथ निभाना। - **बुद्धचरित**

बुद्धिमान व्यक्ति बोलते हैं क्योंकि उनके पास बोलने के लिए कुछ होता है,
मूर्ख व्यक्ति बोलते हैं क्योंकि उन्हें कुछ कहना होता है। - **प्लैटो**

मानवता प्रकाश की वह नदी है जो सीमित से असीमित की और बहती है। - **खलील जीब्रान**

जब तक शरीर स्वस्थ है, इन्द्रियों की शक्ति क्षीण नहीं हुई है
तथा बुढ़ापा नहीं आया है तब तक समझदार को अपने हित साध लेना चाहिए। - **भर्तृहरि**

विद्वता अच्छे दिनों में आभूषण, विपत्ति में सहायक और बुढ़ापे में संचित धन है। - **हितोपदेश**

बुद्धिमान व्यक्तियों को सलाह की आवश्यकता नहीं होती और मूर्ख लोग इसे स्वीकार नहीं करते। - **बेंजामिन फ्रैंकलिन**

दुनिया की वस्तुओं में सुख की तलाश व्यर्थ है। आनंद का खजाना तो आपके अंदर ही है। - **स्वामी रामतीर्थ**

भूल करना मनुष्य का स्वभाव है, की गई भूल को स्वीकार करना एवं
उसे फिर न करने का प्रयास करना वीर एवं शूर होने का प्रतीक है। - **महात्मा गाँधी**

रत्नों से भरा रहने पर भी समुद्र मद में चूर नहीं होता,
किंतु एक–आध मोती पा लेने से ही लोभी मदमस्त हो जाता है। - **अज्ञात**

त्याग का आर्दश महान है और वही जगत में कुछ कर सकता है,
जिसमें त्याग की मात्रा अधिक हो। - **महावीर स्वामी**

ब्रह्मांड अपनी सृष्टि स्वयं करता है। स्वयं विघटित होता है। स्वयं अभिव्यक्त भी होता है। - **स्वामी विवेकानंद**

सज्जन पुरूष की वास्तविक परिभाषा यही है कि वह कभी किसी व्यक्ति को पीड़ित नहीं करता। - **न्यू मैन**

यदि विचारों को सजाकर मधुर ढ़ंग से व्यक्त करने वाला प्राप्त हो तो
संसार शीघ्र उसके आदेशों को सुनेगा। - **तिरूवल्लुर**

दर्शनशास्त्र पर 10 किताबें लिखना आसान है। एक सिद्धांत को अमल में लाना मुश्किल है। - **टॉलस्टॉय**

जो बुद्धिमान है उसे सभी प्रकार के बल प्राप्त हैं। वह सभी प्रतिकूल परिस्थितियों का मुकाबला
सहजता से करते हुए उन पर विजय प्राप्त कर लेता है। - **चाणक्य**

पढ़ना तो बहुत जानते हैं, पर क्या पढ़ना है, यह कोई नहीं जानता। - **प्रेमचंद**

इंसान के आधे गुण तो उसी वक्त विदा हो जाते हैं, जब वह दूसरे की दासता स्वीकार करता है। - **होमर**

व्यस्त व्यक्ति के पास आँसू बहाने के लिए भी वक्त नहीं होता। - **बायरन**

बोझ हल्का हो जाता है यदि प्रसन्नतापूर्वक उठाया जाए। - **ओविड**

स्मृति पीछे नजर डालती है, आशा आगे की ओर। - **अज्ञात**

व्यक्ति को जरूरत से ज्यादा सरल व ईमानदार नहीं होना चाहिए।
सीधे तने के पेड़ सबसे पहले काटे जाते हैं। - **चाणक्य**

अपनी बुराई को अपने पहले ही मर जाने दो। - **फ्रैंकलिन**

संकलन : श्रीमती रमा अय्यर
वैयक्तिक सहायक (निदेशक)
भा.कृ.अनु.प.–के.क.अनु.सं., नागपुर

पहरूए सावधान रहना.....

आज की रात, पहरूए, सावधान रहना।
खुले देश के व्दार, अचल दीपक समान रहना।
ऊँची हुई मशाल हमारी, आगे कठिन डगर है
शत्रु हट गया, लेकिन उसकी छायाओं का डर है
शोषण से मृत है समाज, कमजोर हमारा घर है
किन्तु आ रही नयी जिन्दगी, यह विश्वास अमर है
जन–गंगा में ज्वार, जहर, तुम प्रवहमान रहना।
आज की रात, पहरूए, सावधान रहना।

- डॉ. गिरिजाकुमार माथुर

विचार - कण

- दुनिया में जितनी भी तरह की फिजूलखर्ची हो सकती हैं उनमें से समय की बरबादी सबसे नुकसानदेह है। **-थियो फ्रेस्टस**
- प्रकृति का हम जितना अधिक दोहन करते हैं, हमारे विकल्प उतने ही सीमित होते चले जाते हैं। एक स्थिति ऐसी आती है जब हमारे पास सिर्फ एक विकल्प बचता है, और वह होता है किसी तरह अपने अस्तित्व को बचाए रखना। **-मॉरिस के. उडाल**
- समाजशास्त्र के अनुसार समाज में महिला का स्थान सभ्यता के स्तर को दर्शाता है। **-एलिजाबेथ कैडी स्टेनटन**
- स्त्री पुरूष की सहचरी है जो किसी भी दृष्टि से उससे कम नहीं है। **-महात्मा गांधी**
- वैज्ञानिक और मानवतावाद की विचारधाराओं के बीच कोई प्रतिस्पर्धा नहीं है बल्कि वे दोनों एक दूसरे की पूरक हैं और दोनों का अंत अनिवार्य हैं। **-रॉबर्ट सी. बुड**
- कृषि में खरपतवार हटाना उतना ही आवश्यक है जितनी की बुआई जरूरी है। **-महात्मा गांधी**
- शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य को क्या था और क्या है, इसको एहसास कराना तथा क्या हो सकता है, इसकी खोज के लिए प्रोत्साहित करना है। शिक्षा मनुष्य का समझना, मूल्यांकन करना और सम्प्रेषण करना सिखाती है। **-ओट्ओ क्लेपनर**
- जो लोग देखने के इच्छुक हैं उनके लिए पर्याप्त प्रकाश है और जो इसके विपरीत इच्छा रखते हैं उनके लिए अंधकार है। **-ब्लेस पास्कल**
- सफलता के लिए मन और आत्मा से प्रयास करने की आवश्यकता पड़ती है और अगर आप सचमुच कुछ हासिल करना चाहते हैं तो उसके लिए अपने मन और आत्मा दोनों को दाँव पर लगा सकते हैं। **-डी. श्वाट्र्ज**
- किसी युद्ध को जीतने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि इसे रोक दिया जाए। **-जॉर्ज कैटलेट मार्शल**
- किसी भी व्यक्ति को चाहिए कि उसका जो भी व्यवसाय है उसका सम्मान करे और अपने आप को उसके प्रति समर्पित माने तथा उस व्यवसाय को करते हुए जिस सम्मान का हकदार है उसका दावा करे। **-चार्ल्स डिकेन्स**
- मैं श्रम की गरिमा में विश्वास रखता हूँ। चाहे वह मानसिक हो या फिर शारीरिक। संसार में हर एक प्राणी का वह जीविकोपार्जन का अवसर देता है। **-जॉन डी. रॉकफैलर**
- शिक्षा का उद्देश्य हमारी अन्तर्दृष्टी को परिपक्व, दृष्टिकोण को व्यापक और विचारधारा को अर्थपूर्ण बनाना है। **-डॉ. एस. राधाकृष्णन**
- प्रकृति पर नियंत्रण के लिए जरूरी है कि इसके नियमों का पालन किया जाए। **-फ्रांसिस बेकन**

संकलन : श्रीमती स्वाती दीक्षित
सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी(पुस्तकालय)
भा.कृ.अनु.प.–के.क.अनु.सं., नागपुर

बात पते की

- प्रेम –बस की यात्रा है और शादी–विमान की यात्रा जैसी। पसंद नहीं आया तो बस से उतर सकते है पर विमान से नहीं...।
- प्रेम में मनुष्य अंधा और शादी के बाद गूँगा।
- विवाह का अर्थ –घोड़े पर बैठकर, गधा बनने का मौका।
- औरत सिर्फ एक पुरूष की बात हमेशा मानती है – फोटोग्राफर
- चार्ली चैप्लीन – मुझे बरसते पानी में चलना अच्छा लगता है क्योंकि किसी को मेरे आँसू दिखाई नहीं देते।
- शाहरूख खान – मुझे कोहरे में चलना पसन्द है क्योंकि किसी को पता नहीं चलता कि मैं सिगरेट पी रहा हूँ।
- आम आदमी – मुझे तो कभी भी, कहीं भी चलना अच्छा लगता है, क्योंकि पेट्रोल बहुत महँगा है न।
- दूसरों की अपेक्षा अगर सफलता देर से मिले तो निराश न हो क्योंकि मकान बनाने से ज्यादा समय महल बनाने में लगता है. ..।
- जरूरत के मुताबिक जिन्दगी जियो, ख्वाहिशों के मुताबिक नहीं। क्योंकि जरूरते फकीरों की भी पूरी होती है और ख्वाहिशें बादशाहों की भी अधूरी रहती है...।
- सौ सुख पाकर भी सुखी नहीं होता और एक गम का दुःख मनाता है, तभी तो कैसी करामात है कुदरत की, लाश तो तैर जाती है पानी में पर जिंदा आदमी डूब जाता है...।
- अपने कर्म पर विश्वास करो, राशियों पर नहीं क्योंकि : राम–रावण / कृष्ण–कंस / गाँधी–गोडसे / ओबामा–ओसामा। – इनकी राशियाँ एक है पर कर्म...?
- इंसान से मुहब्बत आपकी सबसे बड़ी कमजोरी बन जाती है...
  भगवान से मुहब्बत आपकी सबसे बड़ी ताकत बन जाती है...।

- श्रीमती चैताली रोडगे
वरिष्ठ तकनीकी सहायक
भा.कृ.अनु.प.–के.क.अनु.सं., नागपुर

——◆——

सबसे बलवान	**- मृत्यु**	**सबसे बडी ताकत**	**- आत्मविश्वास**
सबसे चंचल	**- लक्ष्मी**	**सबसे अस्थायी चीज**	**- जीवन**
सबसे बड़ा धर्म	**- मानवता**	**सबसे अधिक शक्तिशाली**	**- नारी**
सबसे बड़ा दुश्मन	**- क्रोध**	**सबसे बड़ा दान**	**- अभय दान**
सबसे बड़ा दोस्त	**- शिक्षा, विद्या, ज्ञान**		

चुटकुले

- अध्यापक ने परीक्षा में चार पृष्ठों का निबंध लिखने को दिया।
  विषय था –"आलस्य क्या है ?"
  एक विद्यार्थी ने तीन पृष्ठों को खाली छोड़ दिया और चौथे पृष्ठ पर बड़े–बड़े अक्षरों में लिखा–
  "यही आलस्य है।"

- नेता –"देवियों और सज्जनों! मेरा और हिंदी का संबंध ठीक वैसा ही है जैसा मेरा और मेरी पत्नी का है। मुझे उससे बड़ा प्यार है, पर उस पर मेरा अधिकार नहीं है।"

- संगीत के गुरू ने अपने शिष्य से पूछा : तुम किस 'ताल के विषय में अधिक जानते हो ?'
  शिष्य ने तुरंत कहा : हड़ताल के विषय में।

- बेटा : अम्मी हमें ईद के रूपये चाहिए।
  मम्मी : क्यों, ईद को तो बहुत दिन बाकी हैं किसने कहा कि आज ईद है ?
  बेटा : नहीं मम्मी, आप गलत कह रही हो ईद आज ही है। अभी मैंने देखा पापा बाजू वाली अण्टी से गले मिल रहे थे।

– समीर चालखुरे
वैयक्तिक सहायक

- टीचर – तुम्हें 5 नंबर मिले है फिर भी हँस रहे हो।
  सन्ता – मुझे ये समझ नहीं आ रहा कि मुझे पाँच नंबर क्यों दिए...
  मैंने तो पेपर में सिर्फ गाना लिखा था...
  "तुझ में रब दिखता है..."

- आदमी – हे भगवान मुझे शादी–शुदा से अविवाहित बना दो।
  भगवान– बेटा मन्नत माँगों, जीते जी जन्नत नहीं।

- गाँव में बिजली आने वाली है ये सुनकर गाँव वाले नाचने लगे तो एक कुत्ता भी नाचने लगा।
  गधा–अबे तू क्यों नाच रहा है ?
  कुत्ता– अबे गधे बिजली आएगी, तो खंबे भी तो लगेंगे।

- चूहों की टोली हाथ में नंगी तलवार को लेकर भाग रही थी।
  शेर ने पुछा क्या हुआ?
  चूहा–चल बे हट उधर...
  हाथी की गर्लफ्रेंड को किसी न प्रपोज किया और हमारा नाम आ गया।

– राजेंद्र लोखंडे
सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी

- टीचर क्लास में पढ़ा रही थी – एक बार अकबर बादशाह अपने पलंग पर सो रहा था।
  (बीच में एक लड़की चिल्लाई...टीचर ये संता मेरा टिफिन चुरा रहा है)
  टीचर – क्यों रे सन्ते। मार पड़ेगी दोबारा ऐसा किया तो। हाँ तो मैं कहा थी।
  संता – अकबर बादशाह के पलंग पर

- ये इन्श्योरेन्स वाले भी क्या गजब ढाते है। सरे आम लोगों को बेबकूफ बनाते है। लोगों की बीबीयों को बगल में घण्टों बैठाकर उन्हें पति के मरने के फायदे समझाते है।

- पप्पू क्लास में हँस रहा था।
  एक लड़का बोला : खड़े हो जाओ?
  कौन हो तुम ?
  पप्पू : तुम कौन हो ?
  लड़का : मैं मॉनिटर हूँ ?
  पप्पू : तो फिर मैं सी.पी.यू. हूँ ?

- टीचर : ए फॉर
  बच्चे : एप्पल
  टीचर : जोर से बोलो
  बच्चे : जय माता दी....
  टीचर : फिर से बोलो
  बच्चे : जय माता दी...।

– डॉ. पी. बी. देऊलकर
वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी(टी–6)

- नर्सरी क्लास में बच्चों से पूछा गया।

  टीचर : भगवान कहाँ हैं ?

  राजू : हमारे बाथरूम में,

  टीचर : तुम्हें कैसे पता ?

  राजू : मेरे पापा रोज सुबह बाथरूम का दरवाजा पीटते हुए कहते हैं – हे भगवान तुम अब तक अंदर हो।

- युवक – "मैं उस लड़की से शादी करूँगा जो अच्छा खाना बनाना जानती हो। सादगी से रहती हो और घर का खूबसूरती से सँवार सकती हो।"

  युवती – "मेरे घर आना। ये सारे गुण मेरी नौकरानी में हैं।

- प्रेमी–"तुम्हारी उम्र क्या है ?

  प्रेमिका–"पच्चीस वर्ष"

  प्रेमी–"ये कैसे हो सकता है? पिछले वर्ष भी तुमने अपनी उम्र पच्चीस वर्ष ही बताई थी।"

  प्रेमिका –"मैं एक बार जो कह देती हूँ उससे पीछे कभी नहीं हटती।"

- विवाहिता प्रेमिका–"मैं तुम्हें चेतावनी देती हूँ कि मेरे पति घण्टे भर में लौट आएँगे।"

  प्रेमी–"लेकिन मैं क्या कर रहा हूँ जो तुम मुझे चेतावनी दे रही हो ?"

  प्रेमिका–"यही तो मैं कर रहीं हूँ कि जो कुछ करना है घण्टे भर में कर लो।"

– मयूर मेश्राम
तकनीकी सहायक

- "हैलो रवि!" मीना बोली।

  "रवि...! मैं तो सुनील हूँ।"

  "ओह...आई एम सॉरी...मैं समझी आज बुधवार है।"

- चाँद पर जानेवाला रॉकेट शिप लांच होने वाला था, आखिरी क्षणों में उसके एक अंतरिक्ष यात्री को उसकी पत्नी ने इन शब्दों के साथ विदा किया– "सीधे चाँद पर ही जाना, चुन्नू के पापा, कहीं इधर–उधर न चल देना, नही तो मुझे फिक्र लगी रहेगी।"

- एक आदमी दौड़ता हुआ थाने पहुँचा और बिलखता हुआ फरियाद करने लगा–"थानेदार साहब, मुझे गिरफ्तार कर लीजिए मैंने लाठी से अपनी बीवी का सिर फोड़ दिया है।"

  "तो क्या वह मर गई?" थानेदार पूछा।

  "जी नहीं, लेकिन वो वही लाठी लेकर मेरे पीछे आ रही है...।"

- एक आदमी की पत्नी मर गई।

  शवदाह के दौरान पत्नी का एक प्रेमी बड़े जोर–जोर से हिचकियाँ ले–लेकर रोने लगा।

  पति उसे कुछ क्षण देखता रहा लेकिन जब प्रेमी का रोना बन्द नहीं हुआ तो वह उसके पास पहुँचा और तसल्लीपूर्ण स्वर में बोला–"हौसला रखों भाई...जल्दी ही मैं दोबारा शादी कर लूँगा।"

- प्रेमी – "प्रिये, क्या मैं पहला युवक हूँ जिससे तुमने प्यार किया है?"

  प्रेमिका–"हाँ पहले ही पुरूष हो जो मुझसे प्रेम कर रहे हो। इससे पहले तो मैं ही पुरूषों से प्यार करती रही हूँ।

- टीचर : देर से क्यों आए ?

  छात्र : अम्मी अब्बू की लड़ाई हो रही थी।

  टीचर : वहाँ तुम्हारा क्या काम था?

  छात्र : मेरा एक जूता अम्मी के और दूसरा अब्बू के हाथ में था।

– आर. व्ही. सलामे
वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी

राजभाषा कार्यान्वयन : जाँच बिंदु

राजभाषा के प्रगामी प्रयोग के लिए कुछ जाँच बिंदु स्थापित किए जाते हैं, जिनका कठोरता से अनुपालन करना आवश्यक होता है। इन बिंदुओं का सार निम्नलिखित है :

क्र.	जाँच बिंदु	अनुपालन का उत्तरदायित्व
01	निम्नलिखित कागजात द्विभाषी जारी किए जाने चाहिए संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएँ, प्रशासनिक या अन्य, प्रतिवेदन, प्रेस विज्ञाप्तियाँ, संविदाएँ, करार, अनुज्ञाप्तियाँ, अनुज्ञापत्र, निविदा सूचनाएँ, निविदा प्रारूप तथा संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखें जाने वाले प्रशासनिक तथा अन्य प्रतिवेदन और राजकीय कागजपत्र।	हस्ताक्षरकर्ता
02	मैनुअल, कोड और अन्य प्रक्रियात्मक साहित्य हिंदी और अंग्रेजी में मुद्रित कराए जाएँ / प्रयोग किए जाएँ।	निर्धारक / प्रयोगकर्ता
03	फार्म और रजिस्टरों / रोस्टरों के शीर्ष हिंदी और अंग्रेजी दोनों में मुद्रित कराए जाएँ / प्रयोग किए जाएँ।	निर्धारक / प्रयोगकर्ता
04	हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर निरपवाद रूप से हिंदी में दिए जाएँ।	हस्ताक्षरकर्ता / प्राप्तकर्ता
05	समस्त नामपट्ट, सूचनापट्ट, पत्रशीर्ष, निमंत्रण पत्र, बैनर, आगंतुक कार्ड, लिफाफों एवं उत्पादों पर विवरण हिंदी और अंग्रेजी में दिए जाएँ। पैकिंग पर्ची एवं दर सूची आदि द्विभाषी हों।	संबंधित विभाग / अनुभाग
06	सभी राष्ट्रीय विज्ञापन हिंदी और अंग्रेजी में उसी समय प्रकाशन हेतु संबंधित समाचार पत्रों में जारी किए जाएँ।	संबंधित विभाग / प्रशासन अनुभाग
07	यथासंभव सभी करार / पैम्पलेट / बुकलेट / प्रकाशन / पत्रिका / समाचार पत्र आदि हिंदी और अंग्रेजी दोनों में तैयार किए जाएँ।	संबंधित विभाग / अनुभाग
08	हिंदी में प्रवीणता प्राप्त / कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त अधिकारी / कर्मचारी अधिक से अधिक टिप्पण हिंदी में करें।	टिप्पणी करने वाले अधिकारी / कर्मचारी
09	यदि कार्यालय राजभाषा नियम 10(4) के अंतर्गत अधिसूचित है तो हिंदी में प्रवीणता प्राप्त कर्मचारियों को हिंदी में काम करने हेतु व्यक्तिशः आदेश जारी किए जाएँ।	कार्मिक विभाग
10	"क" एवं "ख" क्षेत्रों को भेजे जाने वाले पत्रों के लिफाफों पर पते देवनागरी में ही लिखे जाएँ।	प्रेषण अनुभाग
11	सेवा पंजियों / निजी फाइलों में यथा संभव प्रविष्टयाँ हिंदी में की जाएँ।	प्रविष्टिकर्ता
12	राजभाषा अधिनियम और उसके अधीन बनाए गए नियमों के अनुसार जो पत्र, परिपत्र आदि हिंदी में या हिंदी और अंग्रेजी में जारी होने चाहिए या तो प्रलेख हिंदी तथा अंग्रेजी, दोनो भाषाओं में तैयार किए गए हों, या उसी रूप में जारी होते हैं। यह देखने की जिम्मेदारी पत्र या प्रलेख पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी की है। अतः हस्ताक्षर से पूर्व ऐसे अधिकारी को यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि ऐसे पत्र / परिपत्र / प्रलेख आदि हिंदी में या द्विभाषी रूप में जारी किए जाएँ।	हस्ताक्षरकर्ता
13	खरीद : पुस्तकों की, द्विभाषी इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की, कम्प्यूटरों की यथादेश हो।	क्रय विभाग / माँगकर्ता
14	आयोजन : राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों, कार्यशालाओं, हिंदी पखवाड़े, सम्मेलन आदि	राजभाषा अधिकारी

उन्होंने कहा था...

मुझे विश्वास है कि एक दिन आएगा जब हिंदी विश्व की सांस्कृतिक भाषा होगी। - **सुमित्रनंदन पंत**

हमें अपनी सभी प्रादेशिक कार्यवाहियाँ अपनी–अपनी प्रांतीय भाषाओं में चलानी चाहिए तथा हमारी राष्ट्रीय कार्यवाहियों की भाषा हिंदी होनी चाहिए। - **महात्मा गाँधी**

यदि भारत की किसी भाषा को सर्वसाधारण की भाषा माना जाए तो वह हिंदी है। - **बंगला मैगजीन, १८७४ ई.**

भारतीय भाषा ही राष्ट्रभाषा हो सकती है, कोई विदेशी भाषा नहीं। - **हिदायतुल्ला खाँ**

कोई भाषा ऐसी हो, जिसे सब बोल सकें,
जो एक कड़ी की तरह सबको मिला–जुला कर रख सके।
इसलिए हिंदी को बढ़ावा देना सबका काम है। - **इंदिरा गाँधी**

घर के आँगन में जैसे तुलसी दल या सुहागन के माथे पर बिंदी।
देवता के मुकुट पर जैसे फूल, वैसे ही भारत के भाल पर हिंदी। - **गोविन्द प्रसाद श्रीवास्तव**

भाषा विचार का परिधान है। - **डॉ. जॉनसन**

मातृभाषा का अनादर, माँ के अनादर के बराबर है। - **महात्मा गाँधी**

एक राष्ट्रीय अस्मिता और
राष्ट्रीय चरित्र का विकास भाषा के साथ अभिन्न रूप से जुड़ा होता है। - **अज्ञेय**

हिंदी राष्ट्र की आत्मा है। - **महात्मा गाँधी**

भाषा हमारी राष्ट्रीय एकता का साशक्त साधन है।
हिंदी इस दृष्टि से एकता का अच्छा माध्यम बन सकती है। - **लाल बहादुर शास्त्री**

हिंदी सीखे बिना भारतीयों के दिल तक नहीं पहुँचा जा सकता। - **डॉ. लोथर लुत्से**

देश का सब से बड़े भूभाग में बोली जाने वाली हिंदी ही राष्ट्रभाषा पद की अधिकारिणी है।- **सुभाष चन्द्र बोस**

हिंदी जब तक शिक्षा का माध्यम नहीं बनती,
उसमें मौलिक वैज्ञानिक साहित्य की वृद्धि संभव नहीं। - **निहालकरण सेठी**

हिंदी के बिना भारत की राष्ट्रीयता की बात करना व्यर्थ है। - **डॉ. वी.वी.गिरी**

हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है। - **महर्षि दयानन्द सरस्वती**

हिंदी से किसी भी भारतीय भाषा को भय नहीं है, यह सब की सहोदरी है - **महादेवी वर्मा**

भारत की एकता चाहने वालों को हिंदी अपनानी ही पड़ेगी। - **जे वेंकट रामन**

राष्ट्रीय मेल और राजनीतिक एकता के लिए सारे देश में हिंदी और
नागरी का प्रचार आवश्यक है। - **लाला लाजपतराय**

राष्ट्र को राष्ट्रध्वज की तरह राष्ट्रभाषा की आवश्यकता है,
और ये स्थान हिंदी को प्राप्त है। - **अनन्त गोपाल शेवड़े**

भारत की अखण्डता और व्यक्तित्व बनाए रखने के लिए
हिंदी का प्रचार अत्यन्त आवश्यक है।

-महाकवि शंकर कुरूप

"दुल्हन का श्रृंगार, अधूरा है बिना बिंदी के।
राष्ट्र का उद्धार, अधूरा है बिना हिंदी के।।"
भाषा के संसार की सरताज है हिंदी,
अभिव्यक्ति का सुमधुर साज है हिंदी।
निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान तें, मिटत न हिय को सूल।

- भारतेंदु हरिशचंद्र

हिंदी जानदार भाषा है, वह जितनी बढ़ेगी, उतना अधिक लाभ होगा।

- पं. जवाहरलाल नेहरू

जो मनुष्य लोगों के व्यवहार से ऊब कर क्षण प्रतिक्षण अपने विचार बदलते रहते हैं, वे दुर्बल हैं, उनमें आत्मबल नहीं है।

- सुभाषचन्द्र बोस

संकलन : नितिन तांदुलकर
सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी
भा.कृ.अनु.प.–के.क.अनु.सं., नागपुर

भारत : फल उत्पादक राज्य

अंगूर – महाराष्ट्र, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, तामिलनाडु, कर्नाटक, तेलंगाना।

सेब – हिमाचल प्रदेश, कश्मीर घाटी, असम।

संतरा – हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, कश्मीर, महाराष्ट्र, पं. बंगाल, असम, मध्य प्रदेश, मेघालय।

आम – उत्तर प्रदेश, पंजाब, पं. बंगाल, बिहार, ओडिसा, तामिलनाडु, आंध्रप्रदेश, गुजरात।

लीची – उत्तर प्रदेश, पंजाब, बिहार, उत्तराखण्ड।

अनार – पंजाब, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, तेलंगाना, तामिलनाडु, महाराष्ट्र, राजस्थान।

केला – गुजरात, महाराष्ट्र, तामिलनाडु, केरल, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, असम, बिहार, पं. बंगाल।

अमरूद – उत्तर प्रदेश, बिहार, आन्ध्र प्रदेश, गुजरात।

अनन्नास – असम, पं. बंगाल, गुजरात, तामिलनाडु, कर्नाटक, मेघालय, मणिपुर।

अंजीर – राजस्थान, उत्तर प्रदेश, पंजाब।

काजू – केरल, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, गोवा।

अनुरोध

फाइल पर टिप्पणी लिखते समय या आदेश

		A	
1.	As directed	:	निर्देशानुसार
2.	Await reply	:	उत्तर की प्रतीक्षा करें
3.	As revised	:	यथा संशोधित
4.	Ascertain the position	:	स्थिति का पता लगाए
		B	
5.	Background of the case	:	मामले की पृष्ठभूमि
6.	Barred by time	:	काल–वर्जित, समय वर्जित
7.	Bring into notice	:	ध्यान में लाना
8.	Beg to state	:	निवेदन है
		C	
9.	Corrigendum may be put up	:	शुद्धि पत्र पेश करें
10.	Call for the report	:	रिपोर्ट मँगाइये
11.	Convene a Joint Meeting	:	संयुक्त बैठक बुलाई जाए
12.	Come into force	:	लागू होना
13.	Copy enclosed	:	प्रतिलिपि संलग्न है
		D	
14.	Delay in submitting the case	:	मामले को प्रस्तुत करने में देरी
15.	Draft for approval please	:	मसौदा अनुमोदनार्थ प्रस्तुत
16.	Discretionary power	:	विवेकाधिकार
17.	Dispose of	:	निपटान
		E	
18.	Explanation may be called for	:	स्पष्टीकरण माँगा जाए
19.	Early action in the matter	:	अनुरोध है कि इस मामले में शीघ्र कार्रवाई करें
20.	Expedite	:	कार्रवाई शीघ्र करें
21.	Extension of Leave	:	छुट्टी बढ़ना
		F	
22.	For Signature	:	हस्ताक्षर के लिए
23.	For Information	:	सूचनार्थ
24.	For action	:	कार्रवाई के लिए
25.	For sympathetic consideration	:	सहानुभूतिपूर्ण विचार के लिए
		G	
26.	Give Details	:	विस्तृत जानकारी दें
27.	Give top priority to this	:	इसे प्राथमिकता दें

		H	
28.	Habitual defaulter	:	आदतन चूककर्ता
29.	Highly objectionable	:	अत्यंत आपत्तिजनक
30.	Hold lien on post	:	पद पर पुनर्ग्रहणाधिकार
		I	
31.	I agree with 'A' above	:	मैं ऊपर 'अ' से सहमत हूँ
32.	I fully agree with office note	:	कार्यालय की टिप्पणी से मैं पूर्णतया सहमत हूँ
33.	In lieu of	:	के बदले में
34.	Inter alia	:	अन्य बातों के साथ
		J	
35.	Justification for the proposal	:	प्रस्ताव का औचित्य
36.	Just now	:	अभी/तुरंत
		K	
37.	Keeping in View	:	को ध्यान में रखते हुए
38.	Keep pending	:	लंबित रखा जाए
		L	
39.	Leave not due	:	अदेय छुट्टी
40.	Lay before	:	समक्ष रखना
		M	
41.	May treated as urgent	:	इसे अति आवश्यक समझा जाए
42.	Matter is under consideration	:	मामला विचाराधीन है
43.	May be considered	:	विचार किया जाए
44.	May Kindly be approved	:	कृपया अनुमोदन करें
		N	
45.	Needful be done	:	आवश्यक कार्रवाई की जाये
46.	No action required	:	किसी कार्रवाई की आवश्यकता नहीं
47.	Noted, thanks	:	नोट कर लिया, धन्यवाद
		O	
48.	On leave/tour	:	छुट्टी पर/दौरे पर
49.	Order may be issued	:	आदेश जारी कर दें
50.	Obtain formal sanction	:	औपचारिक मंजूरी प्राप्त करें
51.	On temporary basis	:	अस्थायी आधार पर
		P	
52.	Please issue	:	कृपया जारी करें
53.	Please discuss with papers	:	कागज–पत्रों के साथ चर्चा करें
54.	Put up for verification	:	सत्यापन के लिए प्रस्तुत करें

55.	Please do the needful	:	कृपया आवश्यक कार्रवाई करें
56.	Please send a reminder	:	कृपया अनुस्मारक भेजें
57.	Please circulate and file	:	कृपया सभी को दिखा कर फाईल कर दें
		Q	
58.	Question does not arise	:	प्रश्न नहीं उठता
59.	Question of propriety	:	औचित्य का प्रश्न
		R	
60.	Reminder may be sent	:	अनुस्मारक भेजें
61.	Revised note may be put up	:	संशोधित नोट प्रस्तुत करें
		S	
62.	Sanctioned as proposed	:	प्रस्ताव के अनुसार मंजूर
63.	Seen and returned	:	देख कर वापिस किया जाता है
64.	Seen and spoken	:	देख लिया और बात कर ली
65.	Submitted for order	:	आदेशार्थ प्रस्तुत
		T	
66.	This is to certify	:	प्रमाणित किया जाता है
67.	This is to inform	:	सूचना दी जाती है
68.	Till further orders	:	अगले आदेश होने तक
		U	
69.	Under consideration	:	विचाराधीन
70.	Under dispute	:	विवादग्रस्त
71.	Until further order	:	अगले आदेश होने तक
		V	
72.	Valedictory address	:	समापन भाषण
73.	Varified and found correct	:	जाँच की और ठीक पाया
		W	
74.	We are not concerned with this	:	इसका हमसे संबंध नहीं है
75.	Whichever is earlier	:	जो भी पहले हो, जो भी पहले घटित हो
76.	With retrospective effect	:	भूतलक्षी प्रभाव सहित
		Y	
77.	You are hereby authorised to	:	आपको इसके द्वारा यह प्राधिकार दिया जाता है
78.	You may take necessary action	:	आप तदनुसार आवश्यक कार्रवाई करें

हिंदी सप्ताह : उद्घाटन समारोह - 2018

नागपुर, वर्धा रोड स्थित भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर में बड़े ही उत्साह पूर्ण वातावरण में 'हिंदी सप्ताह (दिनांक : 06– 14 सितंबर, 2018) समारोह' का विधिवत् उद्घाटन दिनांक : 06 सितम्बर, 2018 को डॉ. विजय नामदेव वाघमारे, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर के शुभहस्ते दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया ।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.) ने इस सुअवसर पर उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों का संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की ओर से हार्दिक स्वागत किया एवं उन्हें 'हिंदी सप्ताह (दिनांक : 06–14 सितंबर, 2018) समारोह' के अंतर्गत आयोजित किए जाने वाली विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं (हिंदी भाव–गीत, हिंदी प्रश्न–मंच, हिंदी शुद्ध लेखन, निबंध, चित्र आधारित कहानी, वाद–विवाद, शब्दानुवाद एवं हिंदी काव्य–पाठ प्रतियोगिताओं) की जानकारी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को देते हुए उनसे यह आग्रह किया कि वे इन विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं में अधिक–से–अधिक की संख्या में भाग लेकर इस आयोजन को सफल बनाएँ ।



डॉ. विजय नामदेव वाघमारे, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर के शुभहस्ते दीप प्रज्ज्वलित कर हिंदी सप्ताह समारोह –2018 का उद्घाटन करते हुए

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता का पदभार संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष डॉ. विजय नामदेव वाघमारे ने संभाला और साथ ही इस अवसर पर डॉ. ब्लेज डिसुजा, विभागप्रमुख, फसल उत्पादन विभाग, डॉ. नंदिनी गोकटे, विभागप्रमुख,

फसल संरक्षण विभाग, श्री अ.अ. गोस्वामी, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.), भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर एवं संस्थान की ओर से विशेष अतिथि के रूप में सादर आमंत्रित डॉ. (श्रीमती) नंदिता महेंद्र कुमार साहू, हिंदी अधिकारी, भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण, नागपुर सादर मंचासीन थे ।

सर्वप्रथम विशेष आमंत्रित डॉ. (श्रीमती) नंदिता साहू ने राजभाषा हिंदी के महत्व एवं उसकी गरिमा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हिंदी में काम करना हमारे लिए राष्ट्रीय गौरव की बात हैं । तत्पश्चात डॉ. (श्रीमती) नंदिता साहू ने अपने एक सुमधुर हिंदी भाव–गीत से हिंदी भाव–गीत प्रतियोगिता का शुभारंभ किया। हिंदी भाव–गीत प्रतियोगिता में संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। इसके पश्चात बड़े ही रोचक एवं मनोरंजक अंदाज में डॉ. (श्रीमती) नंदिता साहू ने हिंदी प्रश्न–मंच प्रतियोगिता का सफल संचालन किया ।



डॉ. (श्रीमती) नंदिता साहू (विशेष अतिथि) हिंदी सप्ताह के उद्घाटन समारोह–2018 के सुअवसर पर सभा का मार्गदर्शन करते हुए।



डॉ. विजय नामदेव वाघमारे, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर संबोधित करते हुए।

डॉ. ब्लेज डिसुजा ने इस अवसर पर अपने सम्बोधन में हिंदी को सरल एवं सुबोध भाषा बताते हुए कहा कि हिंदी देश के बड़े भू–भाग में बोली जाती है। हिंदी को भारतीय संविधान में राजभाषा का दर्जा प्राप्त है और इस स्थिति में हमारा नैतिक उत्तरदायित्व हो जाता है कि हम राष्ट्र हित में अपने कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा (हिंदी) का अधिक–से–अधिक उपयोग कर इसका मान बढ़ाएँ।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में डॉ. विजय नामदेव वाघमारे ने संस्थान में राजभाषा (हिंदी) के बहुमुखी विकास हेतु उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों से प्रशासनिक कार्यों के अतिरिक्त वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्रों में भी हिंदी का अधिक–से अधिक उपयोग करने का अनुरोध किया, ताकि सही अर्थों में संस्थान में राजभाषा (हिंदी) का बहुमुखी विकास हो ।

हिंदी सप्ताह उदघाटन समारोह का कुशल संचालन डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.) ने किया और आभार श्री एजाज अहमद, सहायक प्रशासनिक अधिकारी, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर ने माना ।

हिंदी सप्ताह : समापन समारोह - 2018

नागपुर, वर्धा रोड स्थित भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर में बड़े ही उत्साह पूर्ण वातावरण में 'हिंदी सप्ताह : समापन समारोह' का आयोजन दिनांक : 14 सितम्बर, 2018 को किया गया। इस अवसर पर डॉ. प्रमोद रामेश्वर शर्मा, विभागाध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिंदी विभाग एवं उर्दू विभाग, राष्ट्रसंत तुकड़ोजी महाराज, नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर संस्थान की ओर से "मुख्य अतिथि" महोदय के रूप में सादर आमंत्रित थे। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता का पदभार संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष डॉ. विजय नामदेव वाघमारे, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर ने संभाला और साथ ही इस अवसर पर डॉ. ब्लेज डिसुजा, विभागप्रमुख, फसल उत्पादन विभाग, डॉ. नंदिनी गोकटे, विभागप्रमुख, फसल संरक्षण विभाग, श्री अ.अ. गोस्वामी, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी एवं डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.), भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर प्रमुख वक्ता के रूप में मंचासीन थे।



डॉ. प्रमोद रामेश्वर शर्मा, विभागाध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिंदी विभाग एवं उर्दू विभाग, राष्ट्रसंत तुकड़ोजी महाराज, नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर हिंदी सप्ताह समापन समारोह–2018 के सुअवसर पर सभा का मार्गदर्शन करते हुए।

सर्वप्रथम श्री अ.अ. गोस्वामी, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी ने अपने स्वागत भाषण में इस अवसर पर सभागार में उपस्थित समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों का तथा संस्थान की ओर से सादर आमंत्रित इस हिंदी सप्ताह समापन समारोह के "मुख्य अतिथि" डॉ. प्रमोद रामेश्वर शर्मा, विभागाध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिंदी विभाग एवं उर्दू विभाग, राष्ट्रसंत तुकड़ोजी महाराज, नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर का हार्दिक स्वागत किया। डॉ. महेंद्र कुमार साहू ने मुख्य अतिथि के व्यक्ति परिचय से सभा को अवगत

कराया। तत्पश्चात हिंदी सप्ताह समारोह के अवसर पर "हिंदी काव्य पाठ प्रतियोगिता" का उद्घाटन डॉ. प्रमोद रामेश्वर शर्मा, द्वारा किया गया, जिसमें संस्थान में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया।

डॉ. ब्लेज डिसुजा ने इस अवसर पर अपने सम्बोधन में कहा कि हिंदी हमारे लिए केवल एक भाषा ही नहीं अपितु राष्ट्रीय अस्मिता का प्रतीक हैं ।

अपने मुख्य सम्बोधन में मुख्य अतिथि डॉ. प्रमोद रामेश्वर शर्मा ने हिंदी को एक बहुत ही सशक्त एवं बहुआयामी भाषा बताते हुए उसके साहित्यिक पक्ष को सभा के सामने रखा और सभा को यह बताया कि आज हिंदी अपनी इन्हीं बहुआयामी विशेषताओं के कारण हर क्षेत्र में लोकप्रिय है और सही अर्थों में राष्ट्रभाषा पद की अधिकारिणी है।

अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में डॉ. विजय नामदेव वाघमारे ने कहा की हिंदी हमारे लिए केवल एक भाषा ही नहीं अपितु राष्ट्रीय अस्मिता का प्रतीक है जिसे राष्ट्र हित में मजबूत करना हम प्रत्येक भारतीय नागरिकों का कर्तव्य है। अतः इस दृष्टिकोण से राष्ट्रीय हित में अपने कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा (हिंदी) का अधिक–से–अधिक उपयोग करना हमारा संवैधानिक उत्तरदायित्व है ।





हिंदी सप्ताह पुरस्कार वितरण समारोह–2018 का परिदृश्य

तदोपरांत मुख्य अतिथि महोदय डॉ. प्रमोद रामेश्वर शर्मा एवं इस समारोह के कार्यक्रमाध्यक्ष डॉ. विजय नामदेव वाघमारे के शुभहस्ते संस्थान में हिंदी सप्ताह समारोह –2018 के अंतर्गत आयोजित हिंदी संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिस्पर्धी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को नकद पुरस्कार वितरित किए गए, जिसका विवरण निम्नानुसार है :

क्र.	कर्मचारी का नाम एवं पदनाम	स्थान
1. हिंदी भाव–गीत प्रतियोगिता		
1.	डॉ. बालसुब्रमणियम, प्रधान वैज्ञानिक	प्रथम
2.	डॉ. मधु टी.एन., वैज्ञानिक	द्वितीय
3.	श्री एजाज अहमद,सहायक प्रशासनिक अधिकारी	तृतीय
4.	डॉ. शैलेश गावंडे, वैज्ञानिक	सांत्वना
5.	श्रीमती चैताली रोडगे, तकनीकी अधिकारी	सांत्वना
6.	श्रीमती रचना देशमुख, तकनीकी अधिकारी	सांत्वना
2. हिंदी शुद्ध–लेखन प्रतियोगिता		
	"क" वर्ग	
7.	डॉ. पूजा वर्मा, वैज्ञानिक	प्रथम
8.	श्री मयूर कुमार मेश्राम, तकनीकी सहायक	द्वितीय
	"ख" वर्ग	
9.	श्री नितीन तांदुलकर,	

क्र.	कर्मचारी का नाम एवं पदनाम	स्थान
	सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी	प्रथम
10.	डॉ. मेघा आर. पुट्टावार, एस.आर.एफ	द्वितीय
11.	श्री गौरव एस. डेहणकर, वाय.पी.1	तृतीय
12.	श्रीमती ज्योत्सना मोतीरामजी पाठे	सांत्वना
13.	श्रीमती वैशाली सावले, वाय.पी.1	सांत्वना
	"ग" वर्ग	
14.	श्रीमती रमा गजानन अय्यर, निजी सचिव	प्रथम
15.	डॉ. नीलकंठ हिरेमणि, वैज्ञानिक	द्वितीय
16.	डॉ. चन्द्रशेखर एन., वैज्ञानिक	तृतीय
17.	डॉ. राघवेन्द्र के.पी., वैज्ञानिक	सांत्वना
3.	निबंध प्रतियोगिता	
	"क" वर्ग	
18.	डॉ. पूजा वर्मा, वैज्ञानिक	प्रथम
19.	श्री चन्द्रशेखर रामेश्वर मस्के, अर्ध कुशल	द्वितीय
	"ख" वर्ग	
20.	श्री नितीन तांदुलकर, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी	प्रथम
21.	डॉ. मेघा आर. पुट्टावार, एस.आर.एफ	द्वितीय
22.	श्रीमती ज्योत्सना मोतीरामजी पाठे, कुशल कार्मिक	तृतीय
23.	श्रीमती वैशाली सावले, वाय.पी.1	सांत्वना
	"ग" वर्ग	
24.	श्रीमती रमा गजानन अय्यर, पी.एस	प्रथम
25.	डॉ. नीलकंठ हिरेमणि, वैज्ञानिक	द्वितीय
26.	डॉ. चन्द्रशेखर एन., वैज्ञानिक	तृतीय
4.	"चित्र आधारित कहानी प्रतियोगिता"	
	"क" वर्ग	
27.	डॉ. पूजा वर्मा, वैज्ञानिक	प्रथम
	"ख" वर्ग	
28.	डॉ. मेघा आर. पुट्टावार, एस.आर.एफ	प्रथम
29.	श्रीमती वैशाली सावले, वाय.पी.1	द्वितीय
30.	श्रीमती ज्योत्सना मोतीरामजी पाठे, कुशल कार्मिक	तृतीय
31.	श्री नितीन तांदुलकर, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी	सांत्वना
	"ग" वर्ग	
32.	डॉ. नीलकंठ हिरेमणि, वैज्ञानिक	प्रथम
33.	श्रीमती रमा गजानन अय्यर, पी.एस	द्वितीय
34.	डॉ. चन्द्रशेखर एन., वैज्ञानिक	तृतीय
5.	वाद–विवाद प्रतियोगिता	
	"क" वर्ग	
35.	डॉ. पूजा वर्मा, वैज्ञानिक	प्रथम
	"ख" वर्ग	
36.	डॉ. बाबा साहेब फंड, वैज्ञानिक	प्रथम
37.	डॉ. मेघा आर. पुट्टावार, एस.आर.एफ	द्वितीय
38.	श्रीमती रचना देशमुख, तकनीकी अधिकारी	द्वितीय
39.	श्रीमती वैशाली सावले, वाय.पी.1	तृतीय
40.	डॉ. शैलेश गावंडे, वैज्ञानिक	सांत्वना
	"ग" वर्ग	
41.	डॉ. नीलकंठ हिरेमणि, वैज्ञानिक	प्रथम
42.	डॉ. चन्द्रशेखर एन., वैज्ञानिक	द्वितीय
43.	डॉ. राघवेन्द्र के.पी., वैज्ञानिक	तृतीय
6.	शब्दानुवाद प्रतियोगिता	
	"क" वर्ग	
44.	डॉ. पूजा वर्मा, वैज्ञानिक	प्रथम
	"ख" वर्ग	
45.	डॉ. बाबा साहेब फंड, वैज्ञानिक	प्रथम
46.	डॉ. शैलेश गावंडे, वैज्ञानिक	द्वितीय
47.	डॉ. दीपक नगराले, प्रधान वैज्ञानिक	तृतीय
48.	श्री नितीन तांदुलकर, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी	तृतीय
49.	श्रीमती रचना देशमुख, तकनीकी अधिकारी	तृतीय
50.	डॉ. मेघा आर. पुट्टावार, एस.आर.एफ	सांत्वना
51.	श्रीमती वैशाली सावले, वाय.पी.1	सांत्वना
	"ग" वर्ग	
52.	डॉ. नीलकंठ हिरेमणि, वैज्ञानिक	प्रथम
53.	डॉ. चन्द्रशेखर एन., वैज्ञानिक	द्वितीय

क्र. कर्मचारी का नाम एवं पदनाम	स्थान
54. डॉ. टी.आर. लोकनाथन, प्रधान वैज्ञानिक	तृतीय
55. डॉ. राघवेन्द्र के.पी., वैज्ञानिक	सांत्वना
7. हिंदी काव्य–पाठ प्रतियोगिता	
"क" वर्ग	
56. श्री एजाज अहमद, सहायक प्रशासनिक अधिकारी	प्रथम
"ख" वर्ग	
57. डॉ. बाबा साहेब फंड, वैज्ञानिक	प्रथम
58. डॉ. मेघा आर. पुट्टावार, एस.आर.एफ	द्वितीय
"ग" वर्ग	
59. श्रीमती रमा गजानन अय्यर, पी.एस	प्रथम
60. डॉ. चन्द्रशेखर एन., वैज्ञानिक	द्वितीय

इस कार्यक्रम का कुशल संचालन श्री अ.अ. गोस्वामी, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी ने किया और आभार डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.), भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर ने माना।

'भारत' जमीन का टुकड़ा नहीं,
जीता–जागता राष्ट्रपुरूष है।
हिमालय मस्तक है, कश्मीर किरीट है,
पंजाब और बंगाल दो विशाल कंधे हैं।
पूर्वी और पश्चिम घाट, दो विशाल जंघाएँ हैं।
कन्याकुमारी इसके चरण हैं, सागर इसके पग पखारता है।
यह वन्दन की भूमि है, अभिनन्दन की भूमि है,
यह तर्पण की भूमि है, यह अर्पण की भूमि है।
इसका कंकर–कंकर शंकर है,
इसका बिन्दु–बिन्दु गंगाजल है।
हम जियेंगे तो इसके लिए,
मरेंगे तो इसके लिए...।

– अटल बिहारी वाजपेयी

हिंदी कार्यशाला



नागपुर। वर्धा रोड, पांजरी फार्म स्थित भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर कार्यालय में बड़े ही उत्साहपूर्ण वातावरण में डॉ. विजय नामदेव वाघमारे, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर की अध्यक्षता में, अतिथि वक्ता डॉ. जय प्रकाश, हिंदी अनुवादक, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, नागपुर तथा सादर मंचासीन श्री अ. अं. गोस्वामी, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी एवं डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी(रा.भा) की गणमान्य उपस्थिति में संस्थान में प्रशासनिक एवं तकनीकी संवर्ग के कार्मिकों हेतु एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का सफलता पूर्वक आयोजन किया गया। इस हिंदी कार्यशाला में प्रशासनिक/तकनीकी संवर्ग के लगभग 35 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सहभागी होकर इस आयोजन को सफल बनाया।





सर्वप्रथम अपने स्वागत भाषण में डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी(रा.भा) ने कार्यक्रमाध्यक्ष डॉ. विजय नामदेव वाघमारे, निदेशक एवं इस कार्यशाला में सहभागी समस्त हिंदी प्रेमी अधिकारियों एवं कर्मचारीयों का हार्दिक स्वागत करते हुए अतिथि वक्ता डॉ. जय प्रकाश के व्यक्ति परिचय से सभा को अवगत कराया।

अपने उदघाटीय संबोधन में डॉ. विजय नामदेव वाघमारे ने इस अवसर पर सभा को संबोधित करते हुए कहा कि हिंदी इस देश के जनसम्पर्क की मुख्य भाषा है और संवैधानिक रूप से इसे राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। अतः इस दृष्टिकोण से हमारा यह संवैधानिक उत्तरदायित्व हो जाता है कि इसे हम अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यों में अपनाकर राष्ट्र विकास को गति प्रदान करें।

हिंदी कार्यशाला के अतिथि वक्ता डॉ. जय प्रकाश ने बड़े ही रोचक एवं मनोरंजक तरीके से राजभाषा हिंदी की संकल्पना को स्पष्ट करते हुए कार्यालयीन कार्यो में राजभाषा हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका को स्पष्ट किया। कार्यशाला के अंतिम चरण में सहभागी प्रतिक्रिया स्वरूप अपने विचारों को स्पष्ट करते हुए श्री एजाज़ अहमद, प्रभारी (भंडार विभाग) ने कहा कि यह कार्यशाला अपने लक्ष्य को हासिल करने मे पूर्णरुपेन सफल रही हैं। साथ ही अतिथि वक्ता के मार्गदर्शन से कार्यशाला में सहभागी अधिकारियों/कर्मचारियों को अच्छी जानकारी मिली है जिससे निसंदेह उन्हें अपना दैनिक कार्यालयीन कार्य हिंदी में करने हेतु बढ़ावा मिलेगा।

संस्थान में आयोजित इस एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का कुशल संचालन डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी(रा.भा) ने किया एवं आभार श्री एजाज़ अहमद, प्रभारी(भंडार गृह) ने माना।

हिंदी कार्यशाला

सिरसा। भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, सिरसा कार्यालय में बड़े ही उत्साहपूर्ण वातावरण में डॉ. डी. मोंगा, प्रमुख, भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र,



डी.मोंगा, प्रमुख, भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, सिरसा हिन्दी कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में अपना स्वागत सम्बोधन करते हुए



डॉ. राम चरण मीणा, प्रधान वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, सिरसा केंद्र की हिन्दी प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए

सिरसा की अध्यक्षता में तथा अतिथि वक्ता डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी(रा.भा) एवं श्री अ. अं. गोस्वामी, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर की मुख्य उपस्थिति में केंद्र में प्रशासनिक, वैज्ञानिक, तकनीकी संवर्ग के कार्मिकों हेतु एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का सफलता पूर्वक आयोजन किया गया तथा इस हिंदी कार्यशाला का संचालन केंद्र के प्रभारी अधिकारी (हिन्दी) डॉ.राम चरण मीणा, प्रधान वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, सिरसा ने किया और इस हिन्दी कार्यशाला में प्रशासनिक, वैज्ञानिक/तकनीकी संवर्ग के लगभग 32 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सहभागी होकर इस आयोजन को सफल बनाया।

सर्वप्रथम अपने स्वागत भाषण में केंद्र के प्रभारी अधिकारी (हिन्दी) डॉ. राम चरण मीणा ने कार्यक्रमाध्यक्ष डॉ. डी.मोंगा एवं इस कार्यशाला में सहभागी समस्त हिंदी प्रेमी अधिकारियों एवं कर्मचारीयों का हार्दिक स्वागत करते हुए अतिथि वक्ता डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी(रा.भा) एवं श्री अ. अं. गोस्वामी, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान,नागपुर के व्यक्ति परिचय से सभा को अवगत कराया।

अपने उदघाटीय संबोधन में डॉ. डॉ. डी.मोंगा ने इस अवसर पर सभा को संबोधित करते हुए कहा कि हिंदी इस देश के जनसम्पर्क की मुख्य भाषा है और संवैधानिक रूप से इसे राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। अतः इस दृष्टिकोण से हमारा यह संवैधानिक उत्तरदायित्व हो जाता है कि इसे हम अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यों में अपनाकर राष्ट्र विकास को गति प्रदान करें।

हिंदी कार्यशाला के प्रथम व्याख्यान सत्र के अतिथि वक्ता श्री अ. अं. गोस्वामी ने सभा को राजभाषा नियम/अधिनियम की जानकारी देते हुए कहा कि भारतीय संविधान में हिन्दी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। अतः इस स्थिति में हमारा नैतिक उतरदायित्व बन पड़ता है कि हम अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यो में इसका अधिक से अधिक उपयोग करे ।

हिंदी कार्यशाला के द्वितीय व्याख्यान सत्र के अतिथि वक्ता डॉ. महेंद्र कुमार साहू ने बड़े ही रोचक एवं मनोरंजक तरीके से

राजभाषा हिंदी की संकल्पना को स्पष्ट करते हुए कार्यालयीन कार्यो में राजभाषा हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका को स्पष्ट करते हुए कहा कि हमें राष्ट्र विकास को गति प्रदान करने हेतु अपने कार्यालीन कार्यों में हिन्दी को अपनाना ही होगा।

कार्यशाला के अंतिम चरण में सहभागी प्रतिक्रिया स्वरूप अपने विचारों को स्पष्ट करते हुए डॉ.राम चरण मीणा ने कहा कि यह कार्यशाला अपने लक्ष्य को हासिल करने मे पूर्णरुपेन सफल रही हैं। साथ ही अतिथि वक्ता के मार्गदर्शन से कार्यशाला में सहभागी अधिकारियों/कर्मचारियों को अच्छी जानकारी मिली है जिससे निसंदेह उन्हें अपना दैनिक कार्यालयीन कार्य हिंदी में करने हेतु बढ़ावा मिलेगा। कार्यक्रम के अंतिम बिन्दु पर इस कार्यशाला में सहभागी समस्त हिन्दी प्रेमी अधिकारियों/कर्मचारियों का आभार केंद्र के प्रभारी अधिकारी (हिन्दी) डॉ.राम चरण मीणा, प्रधान वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, सिरसा ने माना ।

कृषि में खरपतवार हटाना उतना ही आवश्यक है जितनी कि बुआई जरूरी है।

– महात्मा गांधी

प्रकृति का हम जितना अधिक दोहन करते हैं, हमारे विकल्प उतने ही सीमित होते चले जाते हैं। एक स्थिती ऐसी आती है, जब हमारे पास सिर्फ एक विकल्प बचता है और वह होत है किसी तरह अपने अस्तित्व को बचाए रखना।

– मॉरिस के. उडाल

वैज्ञानिक और मानवतावाद की विचारधाराओं के बीच कोई प्रतिस्पर्धा नहीं है बल्कि वे दोनों एक दूसरे के पूरक हैं और दोनों ही अंततः अनिवार्य हैं।

– रॉबर्ट सी. बुड

हिन्दी सप्ताह समारोह – 2018

डॉ. अ. ही. प्रकाश, परियोजना समन्वयक एवं अध्यक्ष, भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबटूर की अध्यक्षता में बड़े ही उत्साहपूर्ण वातावरण में दिनांक : 14–29 सितंबर, 2018 को केंद्र में हिंदी पखवाड़ा–2018 का सफल आयोजन किया गया। केंद्र में आयोजित हिंदी पखवाड़ा–2018 समारोह के दौरान राजभाषा हिंदी संबन्धित विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम श्रीमती के. सुभश्री, प्रभारी अधिकारी (हिंदी) ने इस अवसर पर उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत करते हुए केंद्र में चल रही राजभाषा हिंदी संबन्धित विभिन्न गतिविधियों से अवगत कराया।



क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबटूर में आयोजित हिंदी पखवाड़ा : उदघाटन समारोह–2018 का परिदृश्य



क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबटूर में हिंदी पखवाड़ा उदघाटन के अंतर्गत आयोजित हिंदी प्रतियोगिता का परिदृश्य

हिंदी पखवाड़ा–2018 के उदघाटन समारोह के सुअवसर पर सभा को संबोधित करते हुए डॉ. अ.ही. प्रकाश ने बताया की हिंदी इस देश की जनसम्पर्क की मुख्य भाषा हैं और विशेष तौर पर इस देश के किसानों की मुख्य भाषा भी हिंदी है। अतः इस स्थिति में हमारे कृषि अनुसंधान कार्यों का महत्व तब ही सार्थक हो पाएगा जब हम कृषि अनुसंधान की उपलब्धियों से उन्हें हिंदी में अवगत करायें। हिंदी पखवाड़ा–2018 उद्घाटन समारोह का कुशल संचालन श्रीमती के. सुभश्री, प्रभारी अधिकारी (हिंदी) ने किया एवं आभार श्री होमराज र. मुन्दाफल, तकनीकी सहायक ने माना।

तदउपरांत हिंदी पखवाड़ा–2018 के दौरान राजभाषा हिंदी संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन केंद्र में बड़े ही उत्साहपूर्ण वातावरण में किया गया, जिसमें केंद्र में कार्यरत अधिकारियों और कर्मचारियों सक्रिय रूप से भाग लेकर आयोजन को सफल बनाया। केंद्र में आयोजित हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह–2018 का आयोजन डॉ. अ.ही. प्रकाश की अध्यक्षता में किया गया। इस कार्यक्रम का संचालन करते हुए श्रीमती के. सुभश्री, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी एवं प्रभारी अधिकारी (हिंदी) ने इस अवसर पर उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत करते हुए उन्हें केंद्र में हिंदी पखवाड़ा समारोह–2018 के दौरान राजभाषा हिंदी संबंधित विभिन्न गतिविधियों से अवगत कराया। तदउपरांत केंद्राध्यक्ष डॉ. अ.ही. प्रकाश ने अपने सम्बोधन में उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों से यह अनुरोध किया की यथासंभव अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यों में हिंदी

का अधिक से अधिक उपयोग कर हिंदी के बहुमुखी विकास में अपना योगदान प्रदान करें। इसके पश्चात कार्यक्रमाध्यक्ष डॉ. अ. ही. प्रकाश के शुभहस्ते हिंदी पखवाड़ा समारोह–2018 के अंतर्गत आयोजित विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिस्पर्धी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सम्मानित किया गया। हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह–2018 का कार्यक्रम संचालन एवं सभा का आभार श्रीमती के. सुभश्री, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी एवं प्रभारी अधिकारी (हिंदी) ने माना।



हिंदी कार्यनिरीक्षण : क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबटूर

डॉ. विजय नामदेव वाघमारे, निदेशक, भा.कृ.अनु.प. – केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर की अध्यक्षता में क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबटूर का हिंदी कार्यनिरीक्षण/मार्गदर्शन दौरा दिनांक : 1 मई, 2018 को अपराह्न 03.00 बजे संपन्न हुआ। समिति की इस बैठक में राजभाषा हिंदी कार्यनिरीक्षण/मार्गदर्शन समिति, भा.कृ.अनु.प. – केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा भारत सरकार, राजभाषा विभाग/परिषद की राजभाषा नीति एतत्सम्बन्धी संवैधानिक प्रावधानों का अनुपालन सुनिश्चित करने हेतु क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबटूर का हिंदी कार्यनिरीक्षण एवं मार्गदर्शन किया गया। **डॉ. अ.हि. प्रकाश,** परियोजना समन्वयक एवं अध्यक्ष, केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबटूर ने समिति की इस बैठक में केंद्र का प्रतिनिधित्व किया और साथ ही समिति इस बैठक में केंद्र की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के पदाधिकारीगण श्री अ.अं. गोस्वामी, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी एवं डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी(रा.भा.), भा.कृ.अनु.प. – केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर भी उपस्थित थे। समिति की इस बैठक में केंद्र में राजभाषा हिंदी के सक्रिय कार्यान्वयन एवं 'ग' क्षेत्र हेतु निर्धारित विभिन्न कार्यक्रमों पर विस्तृत रूप से विचार–विमर्श किया गया, ताकि केंद्र में सही अर्थों में राजभाषा हिंदी का सक्रिय प्रचार–प्रसार हो सके। राजभाषा हिंदी कार्यनिरीक्षण/मार्गदर्शन समिति द्वारा केंद्राध्यक्ष **डॉ. अ.हि. प्रकाश** को मार्गदर्शन स्वरूप कुछ सुझाव समिति द्वारा दिये गए जिन पर केंद्र द्वारा यथाशीघ्र कार्रवाई की जानी अपेक्षित हैं, जो कि निम्नानुसार हैं।





डॉ. विजय नामदेव वाघमारे, निदेशक भा.कृ.अनु.प. – केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर हिंदी कार्य निरीक्षण/मार्गदर्शन समिति की बैठक को संबोधित करते हुए।

1. केंद्र द्वारा 'ग' क्षेत्र हेतु निर्धारित पत्राचार के लक्ष्य को हासिल करने हेतु हर संभव प्रयत्न किए जाए।
2. केंद्र द्वारा हर तिमाही में नियमित रूप से हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाए।
3. केंद्र द्वारा एक हिंदी प्रशिक्षण रोस्टर तैयार कर शेष बचे अधिकारियों / कर्मचारियों को हिंदी प्रशिक्षण हेतु नामित किया जाए।
4. कार्यालय के सभी कम्पुटरों में हिंदी में कार्य करने की सुविधा अनिवार्य रूप से उपलब्ध कराई जाए।
5. हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर अनिवार्य रूप से हिंदी में ही दें तथा 'क' व 'ख' क्षेत्रों में भेजे जाने वाले पत्रों के लिफाफों पर पते हिंदी में लिखे जाएं।
6. धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले सभी कागजातों को अनिवार्य रूप से द्वीभाषी रूप में जारी किया जाएं। इसके अंतर्गत आने वाले कागजात ये हैं : सामान्य आदेश, अधिसूचनाएं, प्रेस विज्ञाप्तियाँ, संविदाएं, करार, लाइसेन्स, परमिट, नोटिस एवं टेंडर फार्म/नियम और संसद के एक या दोनों सदनों में प्रस्तुत किए जाने वाले कागजात (रिपोर्ट आदि)।
7. कार्यालय में कर्मचारियों को हिंदी में अपना सरकारी काम–काज करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु संस्थान में राजभाषा विभाग द्वारा जारी नकद पुरस्कार योजना लागू की जाए तथा उसके अंतर्गत प्रत्येक वर्ष कार्मिकों को पुरस्कृत किया जाए।
8. कार्यालय के प्रयोग में लाए जाने वाले सभी कोड/मैनुअलों को द्विभाषी रूप में खरीदा जाए।
9. कार्यालय द्वारा सभी प्रकार के विज्ञापन द्विभाषी/त्रिभाषी रूप में दिये जाएं।

हिंदी कार्यनिरीक्षण : क्षेत्रीय केंद्र, सिरसा

डॉ. विजय नामदेव वाघमारे, निदेशक, भा.कृ.अनु.प. – केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर की अध्यक्षता में क्षेत्रीय केंद्र, सिरसा की हिंदी कार्यनिरीक्षण बैठक दिनांक : 26 सितम्बर, 2018 को अपराह्न 4 बजे संपन्न हुई। समिति की इस बैठक में राजभाषा हिंदी कार्यनिरीक्षण/मार्गदर्शन समिति, भा.कृ.अनु.प. – केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा भारत सरकार, राजभाषा विभाग/परिषद की राजभाषा नीति एतत्सम्बन्धी संवैधानिक प्रावधानों का अनुपालन सुनिश्चित करने हेतु क्षेत्रीय केंद्र, सिरसा का हिंदी कार्यनिरीक्षण एवं मार्गदर्शन किया गया। **डॉ. डी.मोंगा**, प्रमुख, केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, सिरसा ने समिति की इस बैठक में केंद्र का प्रतिनिधित्व किया और साथ ही समिति की इस बैठक में केंद्र की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के पदाधिकारीगण भी उपस्थित थे। समिति की इस बैठक में केंद्र में राजभाषा हिंदी के सक्रिय कार्यान्वयन एवं 'क' क्षेत्र हेतु निर्धारित विभिन्न कार्यक्रमों पर विस्तृत रूप से विचार–विमर्श किया गया, ताकि केंद्र में सही अर्थों में राजभाषा हिंदी का सक्रिय प्रचार–प्रसार हो सके। राजभाषा हिंदी कार्यनिरीक्षण/मार्गदर्शन समिति द्वारा केंद्राध्यक्ष डॉ. डी. मोंगा को मार्गदर्शन स्वरूप कुछ सुझाव समिति द्वारा दिये गए जिन पर केंद्र द्वारा यथाशीघ्र कार्रवाई की जानी अपेक्षित हैं, जो की निम्नानुसार हैं।

1. केंद्र द्वारा 'क' क्षेत्र हेतु निर्धारित पत्राचार के लक्ष्य को हासिल करने हेतु हर संभव प्रयत्न किए जाएं।
2. केंद्र द्वारा हर तिमाही में नियमित रूप से हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाएं।
3. केंद्र द्वारा एक हिंदी प्रशिक्षण रोस्टर तैयार कर शेष बचे अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी प्रशिक्षण हेतु नामित किया जाएं।
4. कार्यालय के सभी कम्प्युटरों में हिंदी में कार्य करने की सुविधा अनिवार्य रूप से उपलब्ध कराई जाएं।
5. हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर अनिवार्य रूप से हिंदी में ही दें तथा 'क' व 'ख' क्षेत्रों में भेजे जाने वाले पत्रों के लिफाफों पर पते हिंदी में लिखे जाएं।
6. धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले सभी कागजातों को अनिवार्य रूप से द्विभाषी रूप में जारी किया जाएं। इसके अंतर्गत आने वाले कागजात हैं : सामान्य आदेश, अधिसूचनाएँ, प्रेस विज्ञाप्तियाँ, संविदाएँ, करार,

लाइसेन्स, परमिट, नोटिस एवं टेंडर फार्म/नियम और संसद के एक या दोनों सदनों में प्रस्तुत किए जाने वाले कागजात (रिपोर्ट आदि)।

7. कार्यालय में कर्मचारियों को हिंदी में अपना सरकारी काम–काज करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु संस्थान में राजभाषा विभाग द्वारा जारी नकद पुरस्कार योजना लागू की जाएं तथा उसके अंतर्गत प्रत्येक वर्ष कार्मिकों को पुरस्कृत किया जाएं।
8. कार्यालय के प्रयोग में लाए जाने वाले सभी कोड/मैनुअलों को द्विभाषी रूप में खरीदा जाएं।
9. कार्यालय द्वारा सभी प्रकार के विज्ञापन द्विभाषी/त्रिभाषी रूप में दिये जाएं।

मान-सम्मान

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर ''राजर्षि टंडन राजभाषा पुरस्कार (प्रथम) : 2016-17'' से सम्मानित



नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय कृषि विज्ञान केन्द्र, नई दिल्ली के ए.पी. शिंदे सभागार में दिनांक : 16 जुलाई, 2018 को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् 90 वें स्थापना दिवस के सुअवसर पर भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर को 'ख' क्षेत्र के अंतर्गत वर्ष 2016–2017 के दौरान सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग में उल्लेखनीय योगदान देने हेतु समारोह के मुख्य अतिथि श्री राधा मोहन सिंह, माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार के करकमलों द्वारा ''राजर्षि टंडन राजभाषा पुरस्कार'' (प्रथम पुरस्कार) से सम्मानित किया गया। संस्थान की ओर से यह पुरस्कार डॉ विजय नामदेव वाघमारे, निदेशक एवं डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.) ने ग्रहण किया। संस्थान को यह पुरस्कार श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत, माननीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री, भारत सरकार, डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव (डेयर) एवं महानिदेशक, भा.कृ.अनु.प., नई दिल्ली, श्री छबिलेन्द्र राऊल, विशेष सचिव (डेयर) एवं सचिव भा.कृ.अनु.प., नई दिल्ली एवं श्री बिम्बाधर प्रधान, अपर सचिव एवं वित्तीय सलाहकार, डेयर/भा.कृ.अनु.प., नई दिल्ली की गणमान्य उपस्थिति में प्रदान किया गया।

हिंदी अनुभाग : वार्षिक रिपोर्ट 2019-20

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर में वर्ष 2019 के अंतर्गत भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली से प्राप्त निर्देशानुसार राजभाषा (हिंदी) के सक्रिय प्रचार–प्रसार हेतु राजभाषा (हिंदी) संबंधित विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया, जिसका संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की त्रैमासिक बैठक का आयोजन

संस्थान में राजभाषा हिंदी के सक्रिय प्रचार–प्रसार के हेतु राजभाषा कार्यान्वयन समिति (वित्तीय वर्ष 2019–20) की त्रैमासिक बैठकों का आयोजन निम्नानुसार किया गया।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों की तिथि :

क्र.	दिनांक	विषय
1	11 फरवरी, 2019	वर्ष–2019 राजभाषा कार्यान्वयन समिति की प्रथम बैठक
2	13 जून, 2019	वर्ष–2019 राजभाषा कार्यान्वयन समिति की द्वितीय बैठक
3	22 अगस्त, 2019	वर्ष–2019 राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तृतीय बैठक
4	24 दिसंबर, 2019	वर्ष–2019 की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की चतुर्थ बैठक

हिंदी सप्ताह : उदघाटन समारोह - 2019

नागपुर, वर्धा रोड स्थित भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर में बड़े ही उत्साह पूर्ण वातावरण में 'हिंदी सप्ताह (दिनांक : 07–14 सितंबर, 2019) समारोह' का विधिवत् उदघाटन दिनांक : 07 सितम्बर, 2019 को डॉ. विजय नामदेव वाघमारे, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर के शुभहस्ते दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया।





कार्यक्रम का संचालन करते हुए डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.) ने इस सुअवसर पर उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों का संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की ओर से हार्दिक स्वागत करते हुए उन्हें 'हिंदी सप्ताह (दिनांक : 07–14 सितंबर, 2019) समारोह' के अंतर्गत आयोजित किए जाने वाली विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं (हिंदी भाव–गीत, हिंदी प्रश्न–मंच, हिंदी शुद्ध लेखन, निबंध प्रतियोगिता, चित्र आधारित कहानी, शब्दानुवाद, वाद–विवाद एवं हिंदी काव्य–पाठ प्रतियोगिताओं) की जानकारी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को देते हुए उनसे यह आग्रह किया कि वे इन विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं में अधिक–से–अधिक की संख्या में भाग लेकर इस आयोजन को सफल बनाएँ ।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता का पदभार संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष डॉ. विजय नामदेव वाघमारे ने संभाला और साथ ही इस अवसर पर डॉ. रचना पाण्डे, वैज्ञानिक, श्री राजनीकान्त चतुर्वेदी, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी, डॉ. विजय नामदेव वाघमारे, निदेशक, डॉ. नंदिनी गोकटे, विभागप्रमुख, फसल संरक्षण विभाग, डॉ. बाबासाहेब फंड, वैज्ञानिक एवं डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.), भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर सादर मंचासीन थे।

सर्वप्रथम हिन्दी सप्ताह : उदघाटन समारोह के अंतर्गत हिन्दी प्रतियोगिता का शुभारंभ भाव–गीत प्रतियोगिता से किया गया और तदउपरांत इसी क्रम में एक बड़े ही रोचक एवं मनोरंजक हिन्दी प्रश्न मंच कार्यक्रम/प्रतियोगिता का संचालन श्री रजनीकान्त चतुर्वेदी, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी द्वारा किया गया।

इस अवसर पर मंचासीन प्रमुख वक्ता के रूप में सभा को संबोधित करते हूए डॉ. नंदिनी गोकटे ने कहा कि हिंदी एक बहुत ही सरल एवं सुबोध भाषा है और वह देश के बड़े भू–भाग में बोली जाती है। हिंदी को भारतीय संविधान में राजभाषा का दर्जा प्राप्त है और इस स्थिति में हमारा नैतिक उत्तरदायित्व हो जाता है कि हम राष्ट्र हित में अपने कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा (हिंदी) का अधिक–से–अधिक उपयोग कर इसका मान बढ़ाएं।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में डॉ. विजय नामदेव वाघमारे ने संस्थान में राजभाषा(हिंदी) के बहुमुखी विकास हेतु उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपने प्रशासनिक कार्यों के अतिरिक्त वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्रों में भी हिंदी का अधिक–से अधिक उपयोग करने का अनुरोध किया, ताकि सही अर्थों में संस्थान में राजभाषा(हिंदी) का बहुमुखी विकास हो सके।

हिंदी सप्ताह उदघाटन समारोह का कुशल संचालन डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.) ने किया और आभार श्री एजाज अहमद, सहायक प्रशासनिक अधिकारी, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर ने माना ।

हिंदी सप्ताह : समापन समारोह - 2019

नागपुर, वर्धा रोड स्थित भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर में बड़े ही उत्साह पूर्ण वातावरण में 'हिंदी सप्ताह : समापन समारोह' का आयोजन दिनांक : 13 सितम्बर, 2019 को किया गया। इस अवसर पर श्रीमती सरोज व्यास, कवियित्री संस्थान की ओर से "मुख्य अतिथि महोदया" के रूप में सादर आमंत्रित थी।







इस कार्यक्रम की अध्यक्षता का पदभार संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष डॉ. विजय नामदेव वाघमारे, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर ने संभाला और साथ ही इस अवसर पर डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.), श्री अ.अं. गोस्वामी, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, डॉ. विजय नामदेव वाघमारे, निदेशक, श्रीमती सरोज व्यास (मुख्य अतिथि महोदया) एवं डॉ. नंदिनी गोकटे, विभागप्रमुख, फसल संरक्षण विभाग,

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर प्रमुख वक्ता के रूप में सादर मंचासीन थे।

सर्वप्रथम श्री अ. अं. गोस्वामी, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी ने अपने स्वागत भाषण में इस अवसर पर सभागार में उपस्थित समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों का तथा संस्थान की ओर से सादर आमंत्रित इस हिंदी सप्ताह समापन समारोह के "मुख्य अतिथि महोदया" श्रीमती सरोज व्यास, कवयित्री, नागपुर का हार्दिक स्वागत किया। डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.) ने मुख्य अतिथि के व्यक्ति परिचय से सभा को अवगत कराया। तत्पश्चात हिंदी सप्ताह समारोह के अवसर पर "हिंदी काव्य पाठ प्रतियोगिता" का उदघाटन श्रीमती सरोज व्यास, कवयित्री, नागपुर ने धरती एवं पर्यावरण पर आधारित एक भावपूर्ण कविता से किया, जिसमें संस्थान में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया ।

अपने मुख्य सम्बोधन में "मुख्य अतिथि महोदया" श्रीमती सरोज व्यास, कवयित्री, नागपुर ने हिंदी को एक बहुत ही सशक्त एवं बहुआयामी भाषा बताते हुए उसके साहित्यिक पक्ष को सभा के सामने रखा और सभा को यह बताया कि आज हिंदी अपनी इन्हीं बहुआयामी विशेषताओं के कारण हर क्षेत्र में लोकप्रिय है और सही अर्थों में राष्ट्रभाषा पद की अधिकारिणी है।

डॉ. विजय नामदेव वाघमारे ने अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में कहा कि हिंदी हमारे लिए केवल एक भाषा ही नहीं अपितु राष्ट्रीय अस्मिता की प्रतीक है जिसे राष्ट्र हित में मजबूत करना हम प्रत्येक भारतीय नागरिकों का कर्तव्य है। अतः इस दृष्टिकोण से राष्ट्रीय हित में अपने कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा (हिंदी) का अधिक–से–अधिक उपयोग करना हमारा संवैधानिक उत्तरदायित्व है ।



तदोपरांत मुख्य "मुख्य अतिथि महोदया" श्रीमती सरोज व्यास, कवयित्री, नागपुर एवं इस समारोह के कार्यक्रमाध्यक्ष डॉ. विजय नामदेव वाघमारे के शुभहस्ते संस्थान में हिंदी सप्ताह समारोह –2019 के अंतर्गत आयोजित हिंदी संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिस्पर्धी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को नकद पुरस्कार वितरित किए गए, जिसका विवरण निम्नानुसार है :

क्र.	विजेता का नाम	पुरस्कार स्थान	क्र.	विजेता का नाम	पुरस्कार स्थान
हिन्दी भाव–गीत प्रतियोगीता			3.	श्री. सुशील मावले	द्वितीय
1.	कु. भाग्यश्री गजानन जोशी	प्रथम	4.	श्रीमती चौताली रोडगे	तृतीय
2.	श्रीमती रचना देशमुख	द्वितीय	5.	श्री हरीश कुंभलकर	तृतीय
			6.	श्रीमती पुष्पा महल्ले	प्रोत्साहन

क्र.	विजेता का नाम	पुरस्कार स्थान
हिन्दी शुद्ध लेखन प्रतियोगिता (हिन्दी भाषी वर्ग)		
7.	डॉ. रचना पाण्डे	प्रथम
8.	डॉ. पूजा वर्मा	प्रथम
9.	डॉ. बाबासाहेव भास्कर फंड	द्वितीय
10.	श्री संजय कुमार	द्वितीय
11.	डॉ. जिम्मी भ. वैद्य	तृतीय
12.	श्रीमती सुनीता चौहान	तृतीय
13.	श्रीमती पूजा दिनेश ठाकुर	तृतीय
14.	डॉ. मेघा पुट्टावार	प्रोत्साहन
15.	कु भाग्यश्री गजानन जोशी	प्रोत्साहन
हिन्दी शुद्ध लेखन प्रतियोगिता (हिन्दीतर भाषी वर्ग)		
16.	श्रीमती रमा गजानन अय्यर	प्रथम
17.	डॉ. नीलकंठ हिरेमनी	द्वितीय
18.	डॉ. डी. ऐनी देबोरा	द्वितीय
19.	डॉ. चंद्रशेखर एन	तृतीय
20.	सुश्री पूजा अयंगार	प्रोत्साहन
हिन्दी निबंध प्रतियोगिता "जल है तो कल है" (हिन्दी भाषी वर्ग)		
21.	डॉ. मेघा पुट्टावार	प्रथम
22.	डॉ. बाबासाहेव भास्कर फंड	द्वितीय
23.	श्री विजय महादेव वाघमारे	द्वितीय
24.	डॉ. रचना पांडे	तृतीय
25.	डॉ. पूजा वर्मा	तृतीय
26.	श्री एजाज एहमद	तृतीय
27.	श्री जयभीम कांबे	प्रोत्साहन
28.	सुश्री प्रणाली ताराचंद बनसोड	प्रोत्साहन
29.	श्री संजय कुमार	प्रोत्साहन
30.	श्रीमती मिथिला मेश्राम	प्रोत्साहन
31.	श्रीमती पूजा घोंगे	प्रोत्साहन
हिन्दी निबंध प्रतियोगिता "जल है तो कल है" (हिन्दीतर भाषी वर्ग)		
32.	डॉ. नीलकंठ हिरेमनी	प्रथम
33.	श्रीमती रमा गजानन अय्यर	द्वितीय
34.	डॉ. डी. ऐनी देबोरा	द्वितीय
35.	डॉ. चंद्रशेखर एन	तृतीय
36.	सुश्री पूजा अयंगार	प्रोत्साहन

क्र.	विजेता का नाम	पुरस्कार स्थान
चित्र आधारित कहानी लेखन प्रतियोगिता (हिन्दी भाषी वर्ग)		
37.	डॉ. बाबासाहेव भास्कर फंड	प्रथम
38.	डॉ. रचना पांडे	द्वितीय
39.	डॉ. मेघा पुट्टावार	द्वितीय
40.	डॉ. पूजा वर्मा	तृतीय
41.	श्री जयभीम कांबे	तृतीय
42.	सुश्री प्रज्ञा मनोज राऊत	प्रोत्साहन
43.	श्री एजाज एहमद	प्रोत्साहन
44.	श्री नीलेश दांडेकर	प्रोत्साहन
चित्र आधारित कहानी लेखन प्रतियोगिता (हिन्दीतर भाषी वर्ग)		
45.	डॉ. नीलकंठ हिरेमनी	प्रथम
46.	डॉ. चंद्रशेखर एन	द्वितीय
47.	श्रीमती रमा गजानन अय्यर	द्वितीय
48.	डॉ .डी. ऐनी देबोरा	तृतीय
शब्दानुवाद प्रतियोगिता (अंग्रेजी से हिन्दी में) (हिन्दी भाषी वर्ग)		
49.	डॉ. बाबासाहेव भास्कर फंड	प्रथम
50.	डॉ. दीपक नगराले	द्वितीय
51.	डॉ. शैलेश गावंड़े	तृतीय
52.	डॉ. पुजा वर्मा	प्रोत्साहन
53.	डॉ. रचना पाण्डे	प्रोत्साहन
54.	श्री कुनाल गायकवाड	प्रोत्साहन
शब्दानुवाद प्रतियोगिता (अंग्रेजी से हिन्दी में) (हिन्दीतर भाषी वर्ग)		
55.	श्रीमती रमा गजानन अय्यर	प्रथम
56.	डॉ. चन्द्रशेखर एन	द्वितीय
57.	डॉ. सविता संतोष	तृतीय
58.	डॉ. ऐनी देबोरा	प्रोत्साहन
वाद–विवाद प्रतियोगिता 'क्या किसानों की आय दोगुनी करना संभव है ?' (हिन्दी भाषी वर्ग)		
59.	श्रीमती अर्चना तिजारे	प्रथम
60.	श्री कुनाल गायकवाड	द्वितीय
61.	श्रीमती मेघा पुट्टावार	तृतीय
62.	श्री एजाज अहमद	प्रोत्साहन

क्र.	विजेता का नाम	पुरस्कार स्थान
	वाद–विवाद प्रतियोगिता 'क्या किसानों की आय दोगुनी करना संभव है ?' (हिन्दीतर भाषी वर्ग)	
63.	डॉ. चंद्रशेखर एन	प्रथम
	काव्य–पाठ प्रतियोगिता (हिन्दी भाषी वर्ग)	
64.	श्रीमती चौताली रोडगे	प्रथम
65.	डॉ. बाबासाहेब भास्कर फंड	द्वितीय
66.	श्री जयभीम कांबे	तृतीय
67.	कु. भाग्यश्री जोशी	प्रोत्साहन
	काव्य–पाठ प्रतियोगिता (हिन्दीतर भाषी वर्ग)	
68.	श्रीमती रमा गजानन अय्यर	प्रथम
69.	डॉ. नीलकंठ हिरेमनी	द्वितीय
70.	डॉ. चंद्रशेखर एन	तृतीय







इस कार्यक्रम का कुशल संचालन डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.), ने किया और आभार श्री राजनीकान्त चतुर्वेदी, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर ने माना।

हिंदी कार्यशाला

नागपुर। वर्धा रोड, पांजरी फार्म स्थित भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर कार्यालय में बड़े ही उत्साहपूर्ण वातावरण में डॉ. विजय नामदेव वाघमारे, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर की अध्यक्षता में एवं अतिथि वक्ता श्री मनोज कुमार, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी(रा.भा), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली तथा सादर मंचासीन डॉ.(श्रीमती) नंदिनी गोकटे नरखेडकर, विभागप्रमुख, फसल संरक्षण विभाग, श्री अ.अं.

गोस्वामी, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, श्रीमती शैला कुलकर्णी, आहरण एवं संवितरण अधिकारी एवं डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी(रा.भा) की गणमान्य उपस्थिति में संस्थान में प्रशासनिक एवं तकनीकी संवर्ग के कार्मिकों हेतु एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का सफलता पूर्वक आयोजन किया गया।



हिंदी कार्यशाला का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते हुए डॉ. विजय नामदेव वाघमारे, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–के.क.अ.सं.,नागपुर



श्री मनोज कुमार, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी(रा.भा), भा.कृ.अ.प., नई दिल्ली हिंदी कार्यशाला को संबोधित करते हुए।

सर्वप्रथम अपने स्वागत भाषण में डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी(रा.भा) ने कार्यक्रमाध्यक्ष डॉ. विजय नामदेव वाघमारे एवं इस कार्यशाला के मुख्य अतिथि वक्ता श्री मनोज कुमार, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी(रा.भा), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद तथा कार्यशाला में सहभागी समस्त हिंदी प्रेमी अधिकारियों एवं कर्मचारीयों का हार्दिक स्वागत करते हुए सभा को मुख्य अतिथि वक्ता श्री मनोज कुमार के व्यक्ति परिचय से अवगत कराया।





डॉ. विजय नामदेव वाघमारे, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर हिन्दी कार्यशाला को संबोधित एवं इस अवसर उपास्थित अधिकारियों/कर्मचारियों का मार्गदर्शन करते हुए।

डॉ. विजय नामदेव वाघमारे एवं मंचासीन महानुभवों द्वारा इस हिन्दी कार्यशाला का विधिवत उद्घाटन दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। श्री अ. अं. गोस्वामी, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी ने संस्थान की राजभाषा हिंदी संबन्धित विभिन्न गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए इस हिंदी कार्यशाला की सफलता की मंगल कामना की। हिंदी कार्यशाला के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए श्री मनोज कुमार ने संस्थान में चल रही राजभाषा हिंदी संबन्धित विभिन्न गतिविधियों की सराहना करते हुए कहाँ कि संस्थान में कार्यरत अधिकारी एवं कर्मचारीगण राजभाषा हिंदी के प्रती सजग है, जिसके परिणाम स्वरूप संस्थान को पिछले वर्ष परिषद के गरिमामयी 'राजर्षि टंडन राजभाषा पुरस्कार' से नवाजा गया और मुझे आशा ही नही अपितु पूर्णरुपेण विश्वास हैं कि यह संस्थान राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में डॉ. विजय नामदेव वाघमारे के कुशल नेतृत्व एवं संक्षम मार्गदर्शन में दिन दोगुनी और

रात चौगुनी प्रगति करेगा। हिंदी कार्यशाला के उदघाटन सत्र के संचालन डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी(रा.भा), भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर ने किया।

हिंदी कार्यशाला के मुख्य अतिथि वक्ता श्री मनोज कुमार ने बड़े ही रोचक एवं मनोरंजक तरीके से संसदीय राजभाषा प्रश्ननवाली भरे जाने के संबंध में उपस्थित अधिकारियों/कर्मचारियों का मार्गदर्शन किया। साथ ही श्री मनोज कुमार ने कहा कि हिंदी इस देश के जनसम्पर्क की मुख्य भाषा है और संवैधानिक रूप से इसे राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। अतः इस दृष्टिकोण से हमारा यह संवैधानिक उत्तरदायित्व हो जाता है कि इसे हम अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यों में अपनाकर राष्ट्र विकास को गति प्रदान करें ।

अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में डॉ. विजय नामदेव वाघमारे ने संस्थान की ओर से सादर आमंत्रित श्री मनोज कुमार, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी(रा.भा), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली का आभार व्यक्त करते हुए कहाँ की श्री मनोज कुमार परिषद के एक बहुत ही अनुभवी एवं कर्तव्यनिष्ठ हिंदी अधिकारी है। मुझे पूरा विश्वास हैं कि कार्यशाला में सहभागी अधिकारी एवं कर्मचारीगण उनके मार्गदर्शन से प्रेरित होकर और अधिक हिंदी कार्य करने हेतु प्रवृत्त होंगे। हिंदी कार्यशाला के सफल आयोजनार्थ डॉ. विजय नामदेव वाघमारे ने संस्थान के हिंदी अनुभाग में कार्यरत डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी(रा.भा) के अथक प्रयासों की सराहना करते हुए कहाँ कि संस्थान में भविष्य में भी विभिन्न संवर्ग के कार्मिकों हेतु विभिन्न विषयों को लेकर नियमित रूप से त्रैमासिक हिंदी कार्यशालों का आयोजन किया जाएंगा, ताकि संस्थान में राजभाषा हिंदी का बहुमुखी विकास हो सके।

संस्थान द्वारा आयोजित इस हिंदी कार्यशाला में प्रशासनिक एवं तकनीकी संवर्ग के लगभाग 60 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सक्रिय रूप से भाग लेकर इस हिंदी कार्यशाला को सफल बनाया। इस हिंदी कार्यशाला का सफल संचालन एवं सभा का आभार डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा), भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर ने माना।

हिंदी कार्यशाला

नागपुर। वर्धा रोड, पांजरी फार्म स्थित भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर कार्यालय में बड़े ही उत्साहपूर्ण वातावरण में डॉ. विजय नामदेव वाघमारे, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर की अध्यक्षता में एवं मुख्य अतिथि डॉ. धर्मेश धावनकर, प्रोफेसर एवं विभागप्रमुख, जनसंवाद विभाग, राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर तथा सादर मंचासीन डॉ.(श्रीमती) नंदिनी गोकटे नरखेडकर, विभागप्रमुख, फसल संरक्षण विभाग एवं डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी(रा.भा) की गणमान्य उपस्थिती में संस्थान में 'वैज्ञानिक एवं तकनीकी अधिकारी संवर्ग' हेतु एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला (दिनांक : 25 जून, 2019) का सफलता पूर्वक आयोजन किया गया ।

सर्वप्रथम अपने स्वागत भाषण में डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी(रा.भा) ने कार्यक्रमाध्यक्ष डॉ. विजय नामदेव वाघमारे एवं इस कार्यशाला के मुख्य अतिथि डॉ. धर्मेश धावनकर तथा कार्यशाला में सहभागी समस्त हिंदी प्रेमी वैज्ञानिक तथा तकनीकी अधिकारियों का हार्दिक स्वागत करते हुए सभा को मुख्य अतिथि डॉ. धर्मेश धावनकर के व्यक्ति परिचय से अवगत कराया।



डॉ. विजय नामदेव वाघमारे, निदेशक, केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर एवं मुख्य अतिथि डॉ. धर्मेश धावनकर, प्रोफेसर एवं विभागप्रमुख, जनसंवाद विभाग, राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर दीप प्रज्ज्वलित कर हिन्दी कार्यशाला का उदघाटन करते हुए।



डॉ. विजय नामदेव वाघमारे, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुऐ।



मुख्य अतिथि डॉ. धर्मेश धावनकर, प्रोफेसर एवं विभागप्रमुख, जनसंवाद विभाग, रातुम नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर हिन्दी कार्यशाला में उपस्थित वैज्ञानिक एवं तकनीकी अधिकारियों को संबोधित करते हुए।

डॉ. विजय नामदेव वाघमारे ने अपने उदघाटन भाषण में सभा को संबोधित करते हुए कहा कि हिन्दी हमारे लिए राष्ट्रीय अस्मिता का प्रतीक है और भारतीय संविधान में इसे राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। अतः एक सच्चे भारतीय नागरिक होने के नाते हमारा यह नैतिक एवं संवैधानिक उत्तरदायित्व हो जाता है कि इसे हम अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यों में अपनाकर देश के विकास को गति प्रदान करें ।

कार्यशाला के मुख्य अतिथि डॉ. धर्मेश धावनकर ने संस्थान में चल रही राजभाषा हिंदी संबन्धित विभिन्न गतिविधिओं की सराहना करते हुए कहा कि संस्थान में कार्यरत अधिकारी एवं कर्मचारीगण राजभाषा हिंदी के प्रति सजग है, जिसके परिणाम स्वरूप संस्थान को पिछले वर्ष परिषद के गरिमामयी 'राजर्षि टंडन राजभाषा पुरस्कार' से सम्मानित किया गया और मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्णरुपेण विश्वास हैं कि यह संस्थान राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में डॉ. विजय नामदेव वाघमारे के कुशल नेतृत्व एवं सक्षम मार्गदर्शन में दिन दोगुनी और रात चौगुनी प्रगति करेगा। अपने मुख्य सम्बोधन में डॉ. धर्मेश धावनकर ने कार्यशाला में उपस्थित वैज्ञानिक एवं तकनीकी अधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि हिंदी इस देश के जनसम्पर्क की मुख्य भाषा होने के कारण ज्ञान–विज्ञान, जनसंचार एवं मनोरंजन के क्षेत्रों में छाई हुई है। हिन्दी ही देश की एक मात्र ऐसी भाषा है जो हम सब को आपस में जोड़कर हमारी राष्ट्रीय एकता को मजबूती प्रदान करती है ।

अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में डॉ. विजय नामदेव वाघमारे ने संस्थान की ओर से सादर आमंत्रित मुख्य अतिथि डॉ. धर्मेश धावनकर का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि डॉ. धर्मेश धावनकर के बहुत ही अनुभवी, प्रेरणादायी एवं ज्ञानवर्धक मार्गदर्शन से प्रेरित होकर संस्थान में कार्यरत अधिकारी एवं कर्मचारीगण अपना कार्य हिंदी में करने हेतु प्रवृत्त होंगे। हिंदी कार्यशाला के सफल आयोजनार्थ डॉ. विजय नामदेव वाघमारे ने संस्थान के हिंदी अनुभाग में कार्यरत डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी(रा.भा) के अथक प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि संस्थान में भविष्य में भी विभिन्न संवर्ग के कार्मिकों हेतु विभिन्न विषयों को लेकर नियमित रूप से त्रैमासिक हिंदी कार्यशालों का आयोजन किया जाएंगा, ताकि संस्थान में राजभाषा हिंदी का बहुमुखी विकास हो सके।

संस्थान द्वारा 'वैज्ञानिक एवं तकनीकी अधिकारी संवर्ग' हेतु आयोजित इस हिंदी कार्यशाला में संस्थान के लगभाग 60 वैज्ञानिक एवं तकनीकी अधिकारियों ने सक्रिय रूप से भाग लेकर इस हिंदी कार्यशाला को सफल बनाया। इस हिंदी कार्यशाला का सफल संचालन एवं सभा का आभार डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा), भा.कृ. अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर ने माना ।

हिंदी कार्यशाला

नागपुर। वर्धा रोड, पांजरी फार्म स्थित भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर कार्यालय में बड़े ही उत्साहपूर्ण वातावरण में डॉ. विजय नामदेव वाघमारे, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर की अध्यक्षता में एवं मुख्य प्रशिक्षक डॉ. उल्हास नन्दनकर, मुख्य तकनीकी अधिकारी एवं प्रक्षेत्र अधिक्षक, भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर तथा सादर मंचासीन डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी(रा.भा) की गणमान्य उपस्थिती में संस्थान में 'प्रशासनिक क एवं तकनीकी संवर्ग के कार्मिकों' हेतु यूनिकोड पर आधारित शिक्षण–प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन दिनांक : 11 सितंबर, 2019 को किया गया।

सर्वप्रथम अपने स्वागत भाषण में डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी(रा.भा) ने कार्यक्रमाध्यक्ष डॉ. विजय नामदेव वाघमारे, एवं इस कार्यशाला के मुख्य प्रशिक्षक डॉ. उल्हास नन्दनकर, मुख्य तकनीकी अधिकारी एवं प्रक्षेत्र अधिक्षक, भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर तथा कार्यशाला में सहभागी समस्त हिंदी प्रेमी प्रशासनिक तथा तकनीकी संवर्ग के कार्मिकों का हार्दिक स्वागत करते हुए सभा को कार्यशाला के मुख्य प्रशिक्षक डॉ. उल्हास नन्दनकर के व्यक्ति परिचय से अवगत कराया।

डॉ. विजय नामदेव वाघमारे ने अपने उदघाटन भाषण में सभा को संबोधित करते हुए कहा कि कार्यालयीन कार्यों में हिन्दी के कार्य को बढ़ावा देने के लिए 'यूनिकोड' का अपना अलग ही महत्व है और मुझे विश्वास हैं की इस कार्यशाला का लाभ सभी प्रशिक्षणार्थियों को मिलेगा।

कार्यशाला के मुख्य प्रशिक्षक डॉ. उल्हास नन्दनकर ने कार्यशाला में सहभागी समस्त प्रशासनिक एवं समस्त तकनीकी कार्मिकों को 'यूनिकोड' के महत्व से अवगत कराते हुए कहा कि यह बहुत ही सरल–सुबोध सॉफ्टवेअर है जिसके माध्यम से हम अपना कार्यालयीन हिन्दी टंकन कार्य बडी आसानी से कर सकते है।

संस्थान द्वारा 'वैज्ञानिक एवं तकनीकी अधिकारी संवर्ग' हेतु आयोजित इस हिंदी कार्यशाला में संस्थान के लगभाग 60 वैज्ञानिक एवं तकनीकी अधिकारियों ने सक्रिय रूप से भाग लेकर इस हिंदी कार्यशाला को सफल बनाया। इस हिंदी कार्यशाला का सफल संचालन एवं सभा का आभार डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा), भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर ने माना।

हिंदी कार्यशाला

नागपुर। वर्धा रोड, पांजरी फार्म स्थित भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर कार्यालय में बड़े ही उत्साहपूर्ण वातावरण में डॉ. विजय नामदेव वाघमारे, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर की अध्यक्षता में एवं मुख्य अतिथि वक्ता डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी(रा.भा), भा.कृ.अनु.प.– राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो, नागपुर तथा श्री अ. अं. गोस्वामी, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी एवं श्री रजनीकान्त चतुर्वेदी, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर की गणमान्य उपस्थिती में संस्थान में 'प्रशासनिक एवं तकनीकी संवर्ग' के कार्मिकों हेतु 'यूनिकोड' विषय पर आधारित शिक्षण–प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन दिनांक : 28 दिसंबर, 2019 को किया गया।

सर्वप्रथम अपने स्वागत भाषण में श्री अ. अं. गोस्वामी, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी ने कार्यक्रमाध्यक्ष डॉ. विजय नामदेव वाघमारे, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर एवं इस कार्यशाला के मुख्य प्रशिक्षक डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी(रा.भा), भा.कृ.अनु.प.– राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो, नागपुर तथा कार्यशाला में सहभागी समस्त हिंदी प्रेमी प्रशासनिक तथा तकनीकी संवर्ग के कार्मिकों का हार्दिक स्वागत करते

हुए सभा को कार्यशाला के मुख्य प्रशिक्षक डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी(रा.भा), भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो, नागपुर के व्यक्ति परिचय से अवगत कराया।

डॉ. विजय नामदेव वाघमारे ने अपने उदघाटन भाषण में सभा को संबोधित करते हुए कहा कि कार्यालयीन कार्यों में हिन्दी के कार्य को बढ़ावा देने के लिए 'यूनिकोड' का अपना अलग ही महत्व है और मुझे विश्वास हैं की इस कार्यशाला का लाभ सभी प्रशिक्षणार्थियों को मिलेगा।

कार्यशाला के मुख्य अतिथि वक्ता डॉ. महेंद्र कुमार साहू ने कार्यशाला में सहभागी समस्त प्रशासनिक एवं समस्त तकनीकी कार्मिकों को 'यूनिकोड' के महत्व से अवगत कराते हुए कहा की यह बहुत ही सरल–सुबोध सॉफ्टवेअर है जिसके माध्यम से हम अपना कार्यालयीन हिन्दी टंकण कार्य बडी आसानी से कर सकते है।

संस्थान द्वारा 'प्रशासनिक एवं तकनीकी संवर्ग' के कार्मिकों हेतु आयोजित इस हिंदी कार्यशाला में संस्थान के लगभग 24 प्रशासनिक एवं तकनीकी संवर्ग के कार्मिकों ने सक्रिय रूप से भाग लेकर इस हिंदी कार्यशाला को सफल बनाया । इस हिंदी कार्यशाला का सफल संचालन एवं सभा का आभार श्री रजनीकान्त चतुर्वेदी, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी, भा.कृ.अनु.प. –केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर ने माना।

मान-सम्मान

भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर ''राजर्षि टंडन राजभाषा पुरस्कार (प्रथम) : 2017-18'' से सम्मानित

नागपुर। हाल ही में नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय कृषि विज्ञान परिसर (NASC) के सी. सुब्रमणियम सभागार में दिनांक : 16 जुलाई, 2019 को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के 91 वें स्थापना दिवस के सुअवसर पर भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर को 'ख' क्षेत्र के अंतर्गत वर्ष 2017–18 के दौरान सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग में उल्लेखनीय योगदान हेतु पुरस्कार समारोह में डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव (डेयर) एवं महानिदेशक, भा.कृ.अनु.प., नई दिल्ली के करकमलों द्वारा "राजर्षि टंडन राजभाषा पुरस्कार" (प्रथम पुरस्कार) से सम्मानित किया गया। संस्थान की ओर से यह पुरस्कार डॉ. विजय नामदेव वाघमारे, निदेशक एवं डॉ. महेन्द्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.), भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर ने ग्रहण किया।



छायाचित्र में (बाएं से दाएं) : डॉ. पंजाब सिंह, पूर्व महानिदेशक, भा.कृ.अनु.प., नई दिल्ली, डॉ. विजय नामदेव वाघमारे, निदेशक, भा.कृ.अनु.प–के.क.अनु. सं., नागपुर, डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव (डेयर) एवं महानिदेशक, भा.कृ.अनु.प., नई दिल्ली, डॉ. महेन्द्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.), भा.कृ.अनु.प –के.क.अनु. सं., नागपुर

हिंदी कार्यशाला

कोयंबटूर। भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबटूर कार्यालय में बड़े ही उत्साहपूर्ण वातावरण में डॉ. अ.हि.प्रकाश, केन्द्र प्रमुख की अध्यक्षता में तथा अतिथि वक्ता डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी(रा.भा) एवं श्री अ.अं. गोस्वामी, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी की मुख्य उपस्थिती में केंद्र में प्रशासनिक/तकनीकी संवर्ग के कार्मिकों हेतु एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का सफलता पूर्वक आयोजन किया गया। इस हिंदी कार्यशाला का

संचालन केंद्र की श्रीमती के. एस. सुभाश्री, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी ने किया और इस हिन्दी कार्यशाला में प्रशासनिक / तकनीकी संवर्ग के लगभग 28 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सहभागी होकर इस आयोजन को सफल बनाया।





सर्वप्रथम अपने स्वागत भाषण में केंद्र की श्रीमती के.एस. सुभाश्री, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी ने कार्यक्रमाध्यक्ष डॉ. अ.हि. प्रकाश, केन्द्र प्रमुख एवं इस कार्यशाला में सहभागी समस्त हिंदी प्रेमी अधिकारियों एवं कर्मचारीयों का हार्दिक स्वागत करते हुए अतिथि वक्ता डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी(रा.भा) एवं श्री अ. अं. गोस्वामी, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी के व्यक्ति परिचय से सभा को अवगत कराया।

अपने उदघाटीय संबोधन में डॉ. अ.हि.प्रकाश, केन्द्र प्रमुख ने इस अवसर पर सभा को संबोधित करते हुए कहा कि हिंदी इस देश के जनसम्पर्क की मुख्य भाषा है और संवैधानिक रूप से इसे राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। अतः इस दृष्टिकोण से हमारा यह संवैधानिक उत्तरदायित्व हो जाता है कि इसे हम अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यों में अपनाकर राष्ट्र विकास को गति प्रदान करें।

हिंदी कार्यशाला के प्रथम व्याख्यान सत्र के अतिथि वक्ता डॉ. महेंद्र कुमार साहू ने सभा को 'राजभाषा नीति' की जानकारी देते हुए कहा कि भारतीय संविधान में हिन्दी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। अतः इस स्थिति में हमारा नैतिक उतरदायित्व बन पड़ता है कि हम अपने दैनिक कार्यालीन कार्यों में इसका अधिक से अधिक उपयोग करे तत्पश्चात श्री अ.अं. गोस्वामी, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी ने अपने समीक्षात्मक सम्बोधन में सभा से यह अनुरोध किया की भारत सरकार ने राजभाषा हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए अपनी ओर से सदभावना, प्रेरणा, प्रोत्साहन के माध्यम से हर संभव प्रयास किया है और इस स्थिति में हमारा यह नैतिक उत्तरदायित्व हो जाता है कि हम अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यों में हिन्दी का अधिक से प्रयोग करें।

हिंदी कार्यशाला के द्वितीय व्याख्यान सत्र के अतिथि वक्ता डॉ. महेंद्र कुमार साहू ने बड़े ही रोचक एवं मनोरंजक तरीके से 'राजभाषा कार्यान्वयन की कठिनाईयां एवं समाधान' विषय पर प्रकाश डाला, तत्पश्चात श्री अ.अं. गोस्वामी, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी ने अपने सम्बोधन में हिंदी की संकल्पना को स्पष्ट करते हुए उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों यह अनुरोध किया की राष्ट्र विकास को गति प्रदान करने हेतु अपने कार्यालीन कार्यो में हिन्दी को अपनाएं ।

इस कार्यशाला के अंतिम चरण में सहभागी प्रतिक्रिया स्वरूप अपने विचारों को स्पष्ट करते हुए श्रीमती के. एस. सुभाश्री, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी ने कहा कि यह कार्यशाला अपने लक्ष्य को हासिल करने मे पूर्णरुपेण सफल रही हैं। साथ ही अतिथि वक्ता के मार्गदर्शन से कार्यशाला में सहभागी अधिकारियों / कर्मचारियों को अच्छी जानकारी मिली है जिससे निसंदेह उन्हें अपना दैनिक कार्यालयीन कार्य हिंदी में करने हेतु बढ़ावा मिलेगा। कार्यक्रम के अंतिम बिन्दु पर इस कार्यशाला में सहभागी समस्त हिन्दी प्रेमी अधिकारियों / कर्मचारियों का आभार केंद्र की प्रभारी अधिकारी (हिन्दी) श्रीमती के. एस. सुभाश्री, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी ने माना।

राजभाषा हिंदी कार्यनिरीक्षण/मार्गदर्शन

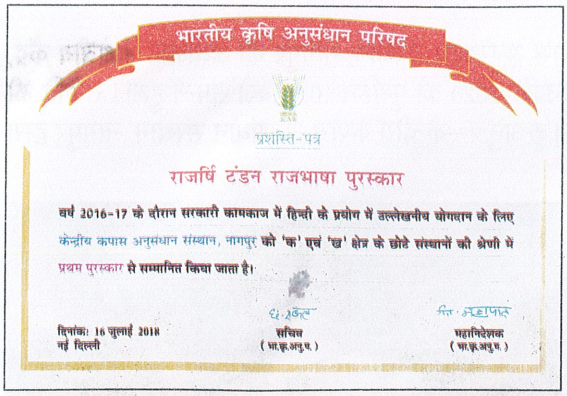
डॉ. विजय नामदेव वाघमारे, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर की अध्यक्षता में क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबटूर का हिंदी कार्यनिरीक्षण/मार्गदशन दौरा दिनांक : 8 जनवरी, 2020 को पूर्वाहन 10.00 बजे संपन्न हुआ। समिति की इस बैठक में राजभाषा हिंदी कार्यनिरीक्षण/मार्गदशन समिति, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा भारत सरकार, राजभाषा विभाग/परिषद की राजभाषा नीति एतत्सम्बन्धी सांविधिक प्रावधानों का अनुपालन सुनिश्चित करने हेतु क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबटूर का हिंदी कार्यनिरीक्षण एवं मार्गदशन किया गया।



डॉ. अ.हि. प्रकाश, परियोजना समन्वयक एवं अध्यक्ष, केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबटूर ने समिति की इस बैठक में केंद्र का प्रतिनिधित्व किया और साथ ही समिति इस बैठक में केंद्र की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के पदाधिकारीगण भी उपस्थित थे । समिति की इस बैठक में केंद्र में राजभाषा हिंदी के सक्रिय कार्यान्वयन एवं 'ग' क्षेत्र हेतु निर्धारित विभिन्न कार्यक्रमों पर विस्तृत रूप से विचार–विमर्श किया गया, ताकि केंद्र में सही अर्थों में राजभाषा हिंदी का सक्रिय प्रचार–प्रसार हो सके। राजभाषा हिंदी कार्यनिरीक्षण/मार्गदशन समिति द्वारा केंद्राध्यक्ष डॉ. अ.हि.प्रकाश को मार्गदर्शन स्वरूप कुछ सुझाव समिति द्वारा दिये गए जिन पर केंद्र द्वारा यथाशीघ्र कार्रवाई की जानी अपेक्षित हैं, जो कि निम्नानुसार हैं ।

1. केंद्र द्वारा एक हिंदी प्रशिक्षण रोस्टर तैयार कर शेष बचे अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी प्रशिक्षण हेतु नामित किया जाए। कार्यालय के सभी कम्पुटरों में हिंदी में कार्य करने की सुविधा अनिवार्य रूप से उपलब्ध कराई जाएं।
2. धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाते सभी कागजातों को अनिवार्य रूप से द्विभाषी रूप में जारी किया जाएं। इसके अंतर्गत आने वाले कागजात ये हैं : सामान्य आदेश, अधिसूचनाएं, प्रेस विज्ञाप्तियाँ, संविदाएं, करार, लाइसेन्स, परमिट, नोटिस एवं टेंडर फार्म/नियम और संसद के एक या दोनों सदनों में प्रस्तुत किए जाने वाले कागजात (रिपोर्ट आदि) ।
3. केंद्र द्वारा हर तिमाही में नियमित रूप से हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाएं।
4. केंद्र द्वारा 'ग' क्षेत्र हेतु निर्धारित पत्राचार के लक्ष्य को हासिल करने हेतु हर संभव प्रयत्न किए जाएं ।
5. कार्यालय में कर्मचारियों को हिंदी में अपना सरकारी कामकाज करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु संस्थान में राजभाषा विभाग द्वारा जारी नकद पुरस्कार योजना लागू की जाए तथा उसके अंतर्गत प्रत्येक वर्ष कार्मिकों को पुरस्कृत किया जाए ।
6. हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर अनिवार्य रूप से हिंदी में ही दें तथा 'क' व 'ख' क्षेत्रों में भेजे जाने वाले पत्रों के लिफाफों पर पते हिंदी में लिखे जाएं ।
7. कार्यालय के प्रयोग में लाए जाने वाले सभी कोड/मैनुअलों को द्वीभाषी रूप में खरीदा जाएं ।
8. कार्यालय द्वारा सभी प्रकार के विज्ञापन द्वीभाषी/त्रिभाषी रूप में दिये जाएं ।

"राजभाषा (हिंदी) कार्यान्वयन का सुयश"



भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

प्रशस्ति-पत्र

राजर्षि टंडन राजभाषा पुरस्कार

वर्ष 2016-17 के दौरान सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग में उल्लेखनीय योगदान के लिए केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर को 'क' एवं 'ख' क्षेत्र के छोटे संस्थानों की श्रेणी में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

दिनांक: 16 जुलाई 2018
नई दिल्ली

सचिव
(भा.कृ.अनु.प.)

महानिदेशक
(भा.कृ.अनु.प.)



भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

प्रशस्ति-पत्र

राजर्षि टंडन राजभाषा पुरस्कार

वर्ष 2017-18 के दौरान सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग में उल्लेखनीय योगदान के लिए भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर को 'क' एवं 'ख' क्षेत्र के छोटे संस्थानों/केन्द्रों की श्रेणी में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

दिनांक: 16 जुलाई 2019
नई दिल्ली

सचिव
(भा.कृ.अनु.प.)

महानिदेशक
(भा.कृ.अनु.प.)



महाराष्ट्र टाइम्स मंगळवार, २४ जुले २०१८

केंद्रीय कापूस संशोधन संस्थेला राजभाषा पुरस्कार

नागपूर : भारतीय कृषी संशोधन परिषद दिल्लीच्या स्थापना दिनानिमित्त घेण्यात आलेल्या सोहळ्यात केंद्रीय कापूस संशोधन संस्था नागपूरला वर्ष २०१६-२०१७ या कालावधीत शासकीय कामकाजात हिंदी भाषेचा सर्वाधिक उपयोग केल्याबद्दल राजर्षि टंडन राजभाषा प्रथम पुरस्कार प्रदान करण्यात आला. केंद्रीय कृषी व कृषककल्याण मंत्री राधामोहन सिंह यांच्या हस्ते केंद्रीय कापूस संशोधन संस्थेचे संचालक डॉ. विजय वाघमारे व सहायक मुख्य तांत्रिक अधिकारी डॉ. महेंद्रकुमार साहू यांनी हा पुरस्कार स्वीकारला. याप्रसंगी छबिलेंद्र राऊल, राजेंद्रसिंह शेखावत, डॉ. त्रिलोचन महापात्र, बिम्बाधर प्रधान यांची उपस्थिती होती.

तरुण भारत मंगळवार, २४ जुलै २०१८

केंद्रीय कपास अनुसंधानला पुरस्कार



भारतीय कृषी संशोधन परिषद दिल्लीतर्फे परिषदेच्या स्थापना दिन समारोहात केंद्रीय कृषी मंत्री राधामोहनसिंह यांच्या हस्ते भा. कृ. अनु. प. केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान नागपूरला २०१६-१७ या वर्षात शासकीय कामकाजासाठी हिंदी भाषेचा सर्वाधिक उपयोग केल्याबद्दल राजर्षी टंडन राजभाषा पुरस्कार प्रदान करण्यात आला. यावेळी संस्थानचे संचालक डॉ. विजय नामदेव वाघमारे, डॉ. महेंद्र कुमार साहू यांनी हा पुरस्कार स्वीकारला.

THE TIMES OF INDIA, NAGPUR
TUESDAY, JULY 23, 2019

ICAR-CICR gets first prize for implementing Rajbhasha



CAR-Central Institute for Cotton Research (CICR), Nagpur, was conferred with **'Rajarshi Tandon Rajbhasha Puraskar 2017-18'** best implementation of the **official language** among ICAR institutes in 'B' region at a function held at **C Subramaniam Auditorium**, NASC, New Delhi. **Trilochan Mohapatra**, director general of ICAR, New Delhi, handed over the first prize to **VN Waghmare**, director and **Mahendra Kumar Sahu**, assistant chief technical officer (OL), ICAR-CICR.

THE TIMES OF INDIA, NAGPUR
TUESDAY, JULY 24, 2018

ICAR-CICR gets Rajarshi Tandon Rajbhasha Puraskar



CAR-Central Institute for Cotton Research (CICR), Nagpur, has been conferred Rajarshi Tandon Rajbhasha Puraskar **2016-17' for the best implementation of the official language** among its institutes in 'B' region. The award was presented at a function held at **NASC Complex, New Delhi.** Union minister for agriculture **Radha Mohan Singh** handed over the first prize to **VN Waghmare**, director, and **Mahendra Kumar Sahu**, assistant chief technical officer (OL). Union minister of state for agriculture **Gajendra Singh** Shekhawat, DARE secretary Trilochan Mohapatra and director general of ICAR, New Delhi, **Chhabilendra Roul** and additional secretary Bimbadhar Pradhan were present on the occasion.



श्री राधा मोहन सिंह, माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री से परिषद के 90वें स्थापना दिवस (दि. 16 जुलाई, 2018) के सुअवसर पर डॉ. विजय नामदेव वाघमारे, निदेशक, एवं डॉ. महेन्द्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.), भा.कृ.अनु.प–के.क.अनु.सं., नागपुर ने वर्ष 2016–2017 का प्रथम ''राजर्षि टंडन राजभाषा पुरस्कार'' ग्रहण किया।



भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर 'राजर्षि टंडन राजभाषा पुरस्कार (प्रथम) : 2017–18' से सम्मानित छायाचित्र में (बाएं से दाए) : डॉ. पंजाब सिंह, पूर्व महानिदेशक, भा.कृ.अनु.प., नई दिल्ली, डॉ. विजय नामदेव वाघमारे, निदेशक, भा.कृ.अनु.प –के.क.अनु.सं., नागपुर, डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव (डेयर) एवं महानिदेशक, भा.कृ.अनु.प., नई दिल्ली, डॉ. महेन्द्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.), भा.कृ.अनु.प –के.क.अनु. सं., नागपुर,



भा.कृ.अनु.प.- केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

ICAR-CENTRAL INSTITUTE FOR COTTON RESEARCH, NAGPUR

पोस्ट बैग क्र. 2, शंकर नगर पोस्ट ऑफिस, नागपुर - 440010 (महाराष्ट्र)

▪ दूरभाष– (07103) 275536/38 ▪ फैक्स : (07103) 275529

▪ ई मेल : cicrnagpur@gmail.com ▪ वेब साइट : http://www.cicr.org.in

ISO 9001: 2015